शकुन टाइम्स

निष्पक्ष खबरें निर्भीक आवाज

लखनऊ, रविवार 16 फरवरी 2025 नगर संस्करण | पृष्ठ :-8 मूल्य :-4 रूपया | वर्ष:- 14, अंक 33

शिक्षण संस्थानों को व्यवस्थित बनाना... • लखनऊ से प्रकाशित हिंदी दैनिक समाचार पत्र • साल में दस महीने खेलने से चोटों...

ड्रोन्स असेंबल करने में नहीं, सभी पुर्जे बनाने पर महारत ज़रूरी : राहुल

एजेंसी

नयी दिल्ली। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष तथा लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने कहा है कि ड्रोन्स तकनीकी पर हमारे युवाओं का कब्जा ज़रूरी है और इसे असेंबल करने की बजाय इसके सभी पुर्जे हमें तैयार करने होंगे तभी हम इसमें महारत हासिल कर सकते हैं।

श्री गांधी ने कहा ड्रोन ने युद्ध लड़ने के तरीक़े को पूरी तरह से बदल कर रख दिया है। बैटरी, मोटर और ऑप्टिक्स के संयोजन से युद्ध के मैदान में घात-प्रतिघात और संचार में अभूतपूर्व बदवाल आया है। लेकिन ड्रोन सिर्फ़ एक टेक्नोलॉजी भर नहीं हैं - वे एक मज़बूत इंडस्ट्रियल सिस्टम द्वारा ज़मीनी और छोटे-छोटे स्तर पर उत्पादन होने वाले नवाचार हैं। ड्रोन्स ने टैंक, तोप और यहां तक कि एयरक्राफ्ट कैरियर के महत्व को भी कम कर दिया है। एयर पावर को प्लाटून लेवल तक ला दिया है और युद्धक्षेत्र में खुफिया तंत्र एवं सटीकता को नया रूप दिया है। लेकिन यह क्रांति सिर्फ युद्ध तक सीमित नहीं है, यह उद्योग, एआई और अगली पीढ़ी की तकनीक की भी बात है।

उन्होंने इसको लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर हमला किया और कहा दुर्भाग्य से प्रधानमंत्री मोदी इसे समझने में असफल रहे हैं। ऐसे समय में जब वह एआई पर सिर्फ़ टेलीप्रॉम्प्टर से पढ़कर भाषण देने में लगे हैं, हमारे कंपीटीटर्स नई टेक्नोलॉजी में महारत हासिल कर रहे हैं। भारत को खोखले भाषणों की नहीं बल्कि मजबूत उत्पादन बेस की ज़रूरत है।

सिंगापुर में 80 संदिग्ध ड्रग अपराधी गिरफ्तार

सिंगापुर। सिंगापुर के सेंट्रल नारकोटिक्स ब्यूरो ने सोमवार से शुक्रवार तक चली देशव्यापी मादक पदार्थ विरोधी अभियान के दौरान 80 संदिग्ध ड्रग अपराधियों को गिरफ्तार किया। ब्यूरो ने एक प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि गिरफ्तार किए गए लोगों में एक 14 वर्षीय लड़की भी शामिल है, जो इस अभियान में सबसे कम उम्र की है, जिस पर नशीली दवाओं के दुरुपयोग का संदेह है। सभी संदिग्धों की जांच जारी है। गृह मंत्रालय ने 2024 में सिंगापुर में गिरफ्तार किए गए नए नशा करने वालों की बढ़ती संख्या पर चिंता जताई है, खासकर युवाओं के अपराध में शामिल होने की लगातार बनी हुई समस्या को उजागर किया है। यहां मंगलवार को जारी 2024 में सुरक्षा और संरक्षा स्थिति के अवलोकन के अनुसार, गिरफ्तार किए गए।

महाकुंभ में फिर लगी आग

कई पंडाल जले, मौके पर फायर ब्रिगेड की कई गाड़ियां पहुंचीं

एजेंसी

प्रयागराज। महाकुंभ मेला में एक बार फिर आग लग गई। आग लगने की खबर लगते ही पुलिस-प्रशासन में हड़कंप मच गया। आग महाकुंभ स्थित लवकुश धाम कैंप में लगने की बात कही जा रही है।

आग से कई पंडाल जलने की भी सूचना है। आग लगने की जैसे ही खबर लगी तो फायर ब्रिगेड की कई गाड़ियां मौके के लिए रवाना हो गईं। हालांकि आग से किसी के हताहत होने की खबर नहीं है। आग कैसे लगी? इसकी जानकारी नहीं हो पाई है। बतादें कि ये तीसरी बार ऐसा हुआ जब महाकुंभ में आग लगी है। इससे पहले नौ फरवरी की रात सेक्टर-23 में आग लगी थी। घटना की सूचना मिलने के बाद तुरंत ही फायर बिग्रेड कर्मचारियों ने आग पर काबू पा लिया था। आग लगने की वजह गैस सिलेंडर का लीक हो बताया गया था। महाकुंभ शुरू होने के साथ ही यहां कई बार आग लग चुकी है। 30 जनवरी को भी महाकुंभ में आग लगी थी। इस घटना में एक दर्जन से ज्यादा टेंट जले थे। आग छतनाग घाट नागेश्वर घाट सेक्टर 22 के पास टेंट सिटी में लगी थी। जानकारी के आग झूंसी की तरफ छतनाग के पास मेला के किनारे यह घाट है।

प्राइवेट कंपनी की ओर से लगाए गए वैदिक टेंट सिटी में आग लगी थी। चीफ फायर ऑफिसर प्रमोद कुमार शर्मा ने बताया आग की सूचना मिलने के बाद के तुरंत बाद कई दमकल की गाड़ियों ने मौके पर पहुंचकर आग पर काबू पाया था। इससे पहले 19 जनवरी को गोरखपुर के गीता प्रेस के शिविर में आग लगी थी।

सड़क दुर्घटना दो सगे भाइयों समेत चार की मौत

बस्ती। उत्तर प्रदेश में बस्ती जिले के पैकोलिया क्षेत्र में गौर-बभनान मार्ग पर हुई सड़क दुर्घटना मे दो सगे भाइयों समेत चार की मौत हो गयी है। पुलिस अधीक्षक अभिनन्दन ने शनिवार को बताया कि पैकोलिया थाना क्षेत्र के गौर-बभनान मार्ग पर एक चार पहिया कार तेज रफ्तार से जा रही ट्रैक्टर ट्राली में घुस गयी जिससे कार क्षतिग्रस्त हो गयी और उसमें सवार दो सगे भाई मोनू (22), सोमनाथ (24) निवासी ग्राम बाबा बागेश्वर नगर बभनान थाना गौर जनपद बस्ती के अलावा पवन (24) निवासी ग्राम खमहरिया बुजुर्ग थाना छपिया जनपद गोण्डा तथा रोहित (27) निवासी ग्राम इनायत नगर जनपद अयोध्या की मौके पर ही मौत हो गयी है।

प्रयागराज में भीषण हादसा: बोलेरो और बस टक्कर

महाकुंभ आ रहे 10 श्रद्धालुओं की मौत

एजेंसी

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में महाकुंभ मेला स्नान करने जा रहे श्रद्धालुओं की गाड़ी भीषण हादसे का शिकार हो गई। बोलेरो और बस से जोरदार टक्कर हुई है। हादसे में 10 लोगों की मौत की सूचना है। वहीं, इस भीषण एक्सिडेंट में 19 श्रद्धालुओं के घायल होने की जानकारी सामने आई है।

हादसा प्रयागराज-मिर्जापुर हाईवे पर मेजा इलाके में हुआ है। पुलिस के मुताबिक, छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले से श्रद्धालु संगम में स्नान करने आ रहे थे। इसी दौरान हादसा हो गया। मामले की जानकारी मिलते ही मौके पर पुलिस पहुंची। घायलों को तत्काल इलाज के लिए स्थानीय अस्पताल में भेजा गया। गंभीर रूप से घायलों को जिला अस्पताल में भेजा गया है। सीएम योगी ने घटना का संज्ञान लेते हुए अधिकारियों को आवश्यक निर्देश जारी किए हैं। प्रयागराज के मेजा इलाके में भीषण हादसा शुक्रवार-शनिवार की रात करीब 2 बजे हुआ। तेज रफ्तार बोलेरो की बस से टक्कर हो गई। टक्कर इतनी भीषण थी कि बुलेरो का अगला हिस्सा पूरी तरह से टूट गया है। बोलेरो पिचक गई। मरने वाले सभी श्रद्धालु बोलेरो में सवार थे। स्थानीय लोगों और राहगीरों ने घटना की जानकारी पुलिस को दी। पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची। राहत और बचाव कार्य शुरू किया गया। घायलों को गाड़ी से निकाल कर अस्पताल पहुंचाया गया। वहीं, मृतकों के शवों को कब्जे में लेकर पुलिस ने पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। प्रयागराज-मिर्जापुर हाइवे पर हादसे की जानकारी मिलने के बाद पुलिस ने घटना के कारणों की जांच शुरू कर दी गई है। भीषण हादसे में बोलेरो में सवार 10 श्रद्धालुओं की मौत का मामला सामने आया है। वहीं, बस में सवार 19 श्रद्धालु भी घायल हुए हैं। घायलों को लेकर जानकारी मिल रही है कि वे सभी संगम में स्नान करने के बाद वाराणसी जा रहे थे। बस में सवार श्रद्धालु मध्य प्रदेश के राजगढ़ जिले के रहने वाले हैं। सभी घायलों को सीएचसी रामनगर में भर्ती कराया गया है। मौके पर पहुंच कर स्थिति का जायजा लिया। वहां पर गाड़ियों का मलबा देखकर क्रेन को बुलवाया गया। पुलिस ने मलबे को हटाकर ट्रैफिक को शुरू कराया है। पुलिस मौके पर मौजूद है। वहीं, आसपास के लोगों का कहना है कि टक्कर इतनी जोरदार थी कि सोते लोग जाग गए। कई लोग घटना की जानकारी मिलते ही मौके पर पहुंचे और पुलिस को सूचना दी। मेजा कोतवाली क्षेत्र के ऊरुआ में बस और बोलेरो की टक्कर इतनी भयानक थी कि गाड़ी पिचक गई।

सीएम योगी ने लिया संज्ञान

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रयागराज जिले में हुई सड़क दुर्घटना का संज्ञान लिया है। उन्होंने शोक संतप्त परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की। सीएम योगी ने अधिकारियों को तत्काल मौके पर पहुंचकर राहत कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिए। जिला प्रशासन के अधिकारियों को घायलों का समुचित उपचार करने के निर्देश दिए। उन्होंने घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की भी कामना की है।

हथकड़ियों और बेड़ियों में जकड़कर भेजना बेहद शर्मनाक

अमेरिका से डिपोर्ट हुए भारतीयों के मामले में भड़कीं उमा भारती

एजेंसी

भोपाल। भारतीय जनता पार्टी की नेता एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री उमा भारती ने अवैध भारतीय प्रवासियों को ''क्रूर एवं बेहद शर्मनाक तरीके'' से वापस भेजने के लिए शनिवार को अमेरिका की निंदा की। अमेरिका का एक सैन्य विमान भारत के विभिन्न राज्यों के 104 ''अवैध प्रवासियों'' को लेकर पांच फरवरी को अमृतसर पहुंचा था। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के प्रशासन ने अवैध प्रवासियों के खिलाफ कार्रवाई के तहत इन लोगों को भारत निर्वासित किया था। कुछ निर्वासितों ने दावा किया कि पूरी यात्रा के दौरान उनके हाथ-पैरों में हथकड़ी लगी रही तथा अमृतसर में उतरने के बाद ही उनकी बेड़ियां खोली गईं। भारती ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर अपने पोस्ट में कहा,''अमेरिका से वापस भेजे गए अवैध प्रवासी भारतीयों को जिस तरह से हथकड़ियों एवं बेड़ियों में जकड़कर वापस भेजा गया, वह बेहद शर्मनाक एवं मानवता के लिए कलंक है। उन्होंने कहा कि अमेरिकी सरकारों ने 'रेड इंडियंस' और वहां रहने वाले अफ्रीकी मूल के लोगों के प्रति कई बार यह क्रूर और हिंसक रवैया दिखाया है। रेड इंडियन शब्द का इस्तेमाल यूरोपीय उपनिवेशवादियों द्वारा उत्तरी अमेरिका के मूल निवासियों के लिए किया जाता था। भाजपा नेता ने कहा, ''जब उन्हें विमान से भेजा जा रहा था तब उन्हें हथकड़ियों और बेड़ियों में रखना अमेरिकी प्रशासन की क्रूरता और अमानवीयता को दर्शाता है। किसी देश में अवैध रूप से प्रवेश करना अपराध है, हर देश के कानून के अनुसार इसकी सजा का प्रावधान है, लेकिन ऐसी क्रूरता महा पाप है।

भारतीय नौसैनिकों के फांसी वाले फरमान को पलटने वाले अमीर की होने वाली है ग्रैंड एंट्री

प्रधानमंत्री मोदी के साथ होगी द्विपक्षीय वार्ता

एजेंसी

नई दिल्ली। लप्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निमंत्रण पर कतर के अमीर शेख तमीम बिन हमद अल-थानी 17-18 फरवरी को भारत का दौरा करेंगे। कतर के अमीर की यात्रा दोनों पक्ष ऊर्जा क्षेत्र सहित कई क्षेत्रों में संबंधों को मजबूत करने कि दिशा में अहम कदम होगा।

कतर भारत का तरलीकृत प्राकृतिक गैस (एलएनजी) का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता है। कतर भारत के वैश्विक एलएनजी आयात का 48ऩ से अधिक प्रदान करता है। वित्तीय वर्ष 2022-23 में कतर के साथ भारत का द्विपक्षीय व्यापार लगभग 18.77 बिलियन अमेरिकी डॉलर था। कतर के ऊर्जा मंत्री साद शेरिदा अल-काबी ने इस महीने की शुरुआत में भारत ऊर्जा सप्ताह के लिए भारत का दौरा किया था। अपनी यात्रा के दौरान, अल-काबी ने भारत की ऊर्जा आवश्यकताओं का समर्थन करने के लिए कतर की प्रतिबद्धता पर जोर दिया। देश में बड़ी संख्या में भारतीय प्रवासियों की मौजूदगी को देखते हुए दोनों देशों के बीच रिश्ते लोगों के बीच मजबूत संबंधों पर भी आधारित हैं। कतर में लगभग 800,000 भारतीय नागरिकों के साथ, वे सबसे बड़े प्रवासी समुदाय का निर्माण करते हैं, जो चिकित्सा, इंजीनियरिंग, शिक्षा, वित्त और श्रम जैसे विभिन्न क्षेत्रों में योगदान करते हैं। आगामी यात्रा तब हो रही है जब पश्चिम एशिया में स्थिति अनिश्चित बनी हुई है, लेकिन हमास और इज़राइल के बीच युद्धविराम की घोषणा के साथ उम्मीदें बढ़ गई हैं कि 2025 तक क्षेत्र में तनाव कम हो सकता है। यह यात्रा पीएम मोदी की देश यात्रा के ठीक एक साल बाद हो रही है। यह यात्रा कतर द्वारा अपनी हिरासत में रखे गए 8 पूर्व भारतीय नौसेना अधिकारियों को रिहा करने के कुछ दिनों बाद हुई है।

गौरव गोगोई की पत्नी का आईएसआई से संबंध : भाजपा

नयी दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने लोकसभा में कांग्रेस के उपनेता गौरव गोगोई की पत्नी के पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई के साथ संबंध होने का आरोप लगाया है।

भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता अजय आलोक ने आज यहां पार्टी के केंद्रीय कार्यालय में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में कहा कि कांग्रेस आईएसआई से मिली हुई है। श्री आलोक ने कहा कि श्री गोगोई की शादी वर्ष 2013 में एलिज़ाबेथ कोलबर्न से हुई थी , जो पूर्व में आईएसआई समर्थित अली तौकीर शेख के साथ काम कर चुकी हैं। वह सीनेटर थॉम के साथ भी काम कर चुकी हैं, जिनका जॉर्ज सोरोस से नजदीकी संबंध है। भाजपा प्रवक्ता ने कहा कि सुश्री कोलबर्न की भाभी, कैरिटास नाम के संगठन से जुड़ी हुई हैं।

RNI : UPHIN/2012/45286

शकुन टाइम्स

निष्पक्ष खबरें निर्भीक आवाज

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्र (प्रिन्ट एवं डिजिटल मीडिया)

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा पंजीकृत

YouTube shakuntimes

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश के सम्पूर्ण जिले में तहसील और ब्लाक स्तर पर संवाददाता की

प्रिन्ट एवं डिजिटल मीडिया

यदि आप भी समाज में फैले हुए भ्रष्टाचार के विरुद्ध उठाना चाहते है आवाज़ तो शकुन टाइम्स दे रहा है आपको एक बेहतरीन मौका

अधिक जानाकारी के लिए

अपना नाम व जिला हमें

WhatsApp करें।

9935781155, 9415052283

25 जिलों में जल्द शुरू होगी शक्ति रसोई, सचिव ने दिए क्रियान्वयन निर्देश

स्थापना के पहले वर्ष में हुई दो करोड़ से अधिक की बिक्री

एजेंसी

लखनऊ। 15 जिलों के 25 स्थानों पर संचालित शक्ति रसोई ने पहले वर्ष में दो करोड़ रुपये से अधिक की बिक्री कर कीर्तिमान रचा है। महिलाओं की इस सफलता को देखते हुए द्वितीय चरण में 25 जिलों में शक्ति रसोई संचालित की जाएंगी। ये बातें शुक्रवार को सचिव, नगरीय रोजगार एवं गरीबी उन्मूलन क्रियान्वयन विभाग/निदेशक सूडा, डॉ. अनिल कुमार ने कही।

सचिव सूडा भवन में वर्चुअल कॉन्फ्रेंसिंग से परियोजना अधिकारी व शहर मिशन प्रबंधकों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने बताया कि द्वितीय चरण में शक्ति रसोई अलीगढ़, बाराबंकी, गौतमबुद्ध नगर, गोंडा, लखीमपुर-खीरी, मथुरा, रायबरेली, सुलतानपुर, उन्नाव, जौनपुर, बरेली, बांदा, कानपुर देहात, सीतापुर, बलिया, एटा, सहारनपुर, शामली, बिजनौर, पीलीभीत, कौशांबी, संभल, शाहजहांपुर, गाजियाबाद तथा महोबा में संचालित कराएं। इसके लिए जनपद स्तर पर प्रतिष्ठित होटलों के विशेषज्ञों द्वारा चयनित स्वयं सहायता समूह की महिलाओं का प्रशिक्षण कराएं। समूह की महिलाओं का बैंक खाता खुलवाया जाए व क्यूआर कोड उपलब्ध कराएं। पेट पूजा एप भी इन्सटाल कराया जाए। ऑनलाइन बिक्री हेतु स्वैगी व जोमैटो में शक्ति रसोई का पंजीकरण प्राथमिकता के आधार पर कराया जाए।

उचित दरों पर मिलता शुद्ध भोजन

शक्ति रसोई में उचित दरों पर साफ-स्वच्छ व स्वास्थ्यवर्धक विभिन्न तरह के भोजन मिलते हैं। श्री अन्न यानी मिलेट्स से बने कई भोज्य पदार्थ भी खाने के लिए उपलब्ध हैं। इनके पकवान लोगों की सेहत के लिए फायदेमंद हैं। शक्ति रसोई में अच्छे रेस्टोरेंट जैसी सुविधाएं हैं। जैसे कि ट्रेंड स्टॉफ, अच्छा वातावरण, साफ-सफाई की उत्तम व्यवस्था आदि। आधुनिक किचन उपकरण, फर्नीचर, ब्रांडिंग, प्रशिक्षण एवं बिलिंग मशीन का उपयोग होता है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी काशी तमिल संगमम् कार्यक्रम के माध्यम से एक भारत श्रेष्ट भारत की परिकल्पना को साकार कर रहे है: योगी आदित्यनाथ

मुख्यमंत्री ने पूरे काशी क्षेत्र का हवाई सर्वे कर उपस्थित भारी भीड़ की तैयारियों का अवलोकन किया

शकुन टाइम्स

बजरंग बली तिवारी

वाराणसी। काशी-तमिल संगमम् 3.0 कार्यक्रम का विधिवत् उद्घाटन शनिवार को दुनिया के सबसे बड़े गंगा घाट नमो घाट पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान एवं केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण व संसदीय कार्य राज्य मंत्री डॉ एल. मुरुगन की उपस्थिति में बटन दबाकर किया। इस बार काशी तमिल संगमम् महर्षि अगस्त्य को समर्पित है। इनके जीवन चरित्र पर आधारित एक चित्र प्रदर्शनी का भी आयोजन नमो घाट पर किया गया हैं।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रधानमंत्री का आभार व्यक्त करते हुए कहा उनकी प्रेरणा से काशी तमिल संगमम् कार्यक्रम का लगातार तीसरी बार वाराणसी में हो रहा है। आए मेहमानों का काशीवासियों, प्रदेशवासियों विशेषकर प्रधानमंत्री की ओर से स्वागत किया। तमिलनाडु से आए मेहमानों को 144 वर्ष पर प्रयागराज में लगे महाकुम्भ एवं 500 वर्ष बाद अयोध्या में बने रामलला का दर्शन कराया जाएगा। नए भारत की परिकल्पना को आगे बढ़ाते हुए महर्षि अगस्त्य को केंद्र में रखकर इस बार के काशी तमिल संगमम् का थीम रखा गया है। राम को माता सीता को खोजने एवं राम-रावण युद्ध में %आदित्य स्त्रोत% देने वाले महर्षि अगस्त्य है। शिक्षक, लेखको के साथ ही उद्योग, व्यापार, मंदिर की व्यवस्था करने वाले आदि लोग इस बार इस कार्यक्रम का हिस्सा बनेंगे। देश को पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण को जोड़ने का कार्य जो कभी शंकराचार्य ने किया था, वहीं कार्य आज के परिवेश में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी काशी तमिल संगमम् कार्यक्रम के माध्यम से एक भारत श्रेष्ट भारत की परिकल्पना को साकार कर रहे है। देश की सबसे पुरानी नगरी काशी हैं। उन्होंने कहा कि विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को वाराणसी, प्रयाग तथा अयोध्या की संस्कृति से जुड़ने का सौभाग्य मिलेगा, उन्होंने काशी के बारे में उल्लेखित करते हुए बाबा विश्वनाथ, बाबा काल भैरव, माँ गंगा, माँ विशालाक्षी के बारे में भी उल्लेख किया। काशी प्राचीन समय से ही ज्ञान की राजधानी रही है तथा तमिलनाडु का प्राचीन ग्रंथ भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है उन्होंने महर्षि अगस्त्य के सिद्ध चिकित्सा के बारे में बोलते हुए कहा की आप सभी को इससे जुड़ने का मौका मिलेगा। उन्होंने सभी का हृदय से स्वागत करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री का ये विजन लगातार जारी रहेगा।

केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने जय गंगे के उद्बोधन से लोगो को संबोधित करते हुए कहा कि तमिलनाडु से आए लोगों को 144 वर्ष बाद प्रयागराज में हो रहे महाकुंभ को दिखाया जाय और वहां प्रवास करने का एहसास हो, ऐसी व्यवस्था किया जाय। पूरे भारत की ओर से उन्होंने अतिथियों का स्वागत किया। इस बार का महाकुंभ देश ही नहीं पूरी दुनिया के सनातनियों में जागृति पैदा किया हैं। अब तक 51 करोड़ से अधिक लोगों ने महाकुंभ में दर्शन एवं स्नान किया। भव्य एवं दिव्य महाकुंभ के सुव्यवस्थित आयोजन हेतु उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री का उन्होंने पूरे देशवासियों की ओर से स्वागत एवं उन्हें धन्यवाद दिया। उन्होंने बताया कि आज पहले दिन विद्यार्थियों, शिक्षक एवं लेखकों का दल आया हैं। अभी आगे आने वाले जत्थों में विभिन्न क्षेत्रों के लोगो सहित नवाचार के लोग भी आयेगे। संस्कृत की तरह तमिल भी देश की सबसे पुरानी भाषा हैं। जो सांस्कृतिक एकता दिखाने का सबसे बड़ा मिसाल हैं। तमिलनाडु में कोई ऐसा मंदिर नहीं जिसमें श्री काशी विश्वनाथ महादेव नहीं विराजते। इस बार के केंद्रीय बजट में पहली बार प्राविधान किया है कि एसआई के माध्यम से देश की महान ग्रन्थों को संरक्षित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि 2047 तक भारत को विकसित बनाने की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की घोषणा को अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करते हुए मूर्त रुप देना है। उन्होंने कहा कि अतिथियों को इस बार बाबा विश्वनाथ दर्शन, महाकुंभ मेला तथा अयोध्या स्थित राममंदिर में दर्शन करने को मिलेगा। राममंदिर प्राण-प्रतिष्ठा के बाद आयोजित इस तमिल समागम के अतिथि भी भाग्यशाली हैं की आपको दर्शन का सौभाग्य मिलेगा। इस बार का महाकुंभ न केवल भारतीय बल्कि पूरे दुनिया के सनातनियों में नयी ऊर्जा का संचार किया है। तमिल के पांड्या साम्राज्य द्वारा काशी के बारे में प्राचीन में उल्लिखित शब्दों को उल्लेख करते हुए एक भारत-श्रेष्ठ भारत की अवधारणा को चरितार्थ किया। उन्होंने बताया की इस बार छह ग्रुप में तमिलनाडु से अतिथियों का आगमन होगा जिनको काशी, प्रयाग तथा अयोध्या की संस्कृति से रूबरू होने का मौका मिलेगा। इस बार तमिल समागम अगस्त्य ऋषि पर पूरी तरह फोकस रहेगा जिनकी तिथि को सरकार राष्ट्रीय सिद्ध दिवस के रूप में मनाती है उन्होंने बजट में उल्लेखित नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी तथा 22 भाषाओं के डिजिटल कुम्भ के बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने प्रधानमंत्री के पंच प्रण को पुनः दोहराते हुए 2047 तक विकसित भारत की बात कही तथा राष्ट्रीय हित ही हमारी हित है को दोहराया।

केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण व संसदीय कार्य राज्य मंत्री डॉ एल. मुरुगन स्वागत भाषण करते हुए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का सहित अन्य अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का एक भारत श्रेष्ट भारत की परिकल्पना साकार हो रहा हैं। काशी मोक्ष की नगरी हैं। इस अवसर पर सांस्कृतिक संध्या का भी आयोजन हुआ। जिसमें तमिलनाडु एवं काशी के कलाकारों ने प्रतिभाग कर अपनी सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। बताते चलें कि काशी और तमिलनाडु के प्रमुख शहरों के बीच प्राचीन काल से चले आ रहे कला-सांस्कृतिक जुड़ाव को जीवंत रखने के लिए केंद्र सरकार द्वारा काशी-तमिल संगमम् कार्यक्रम की शुरुआत पिछले 2 वर्षों से प्रधानमंत्री के संसदीय क्षेत्र काशी में आयोजित किया जा रहा है। इस वर्ष इसका आयोजन 15 से 24 फरवरी तक किया जा रहा हैं। काशी-तमिल संगमम एक सांस्कृतिक उत्सव है, जिसका उद्देश्य उत्तर भारत और दक्षिण भारत की विविध पारंपरिक और सांस्कृतिक प्रथाओं को एक साथ लाना है। इस तरह का यह लगातार तीसरा संगमम् है। इसमें तमिलनाडु के अलग-अलग क्षेत्रों से जुड़े भारी संख्या में लोग शामिल होते हैं। इस संगमम का आयोजन केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय के द्वारा एक भारत-श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम के तहत किया जा रहा है। इस आयोजन की जिम्मेदारी आईआईटी मद्रास और बीएचयू निर्वहन करता हैं। इस वर्ष भी संगमम में तमिलनाडु के लगभग 1200 लोग हिस्सा लेंगे। जो करीब छः अलग-अलग समूहों में इस आयोजन के दौरान आयेंगे। प्रत्येक समूह में करीब दो सौ लोग आयेंगे। इस दौरान इन सभी लोगों को वाराणसी के साथ प्रयागराज एवं अयोध्या की भी यात्रा कराई जाएगी।

इस अवसर उत्तर प्रदेश के स्टांप एवं न्यायालय पंजीयन शुल्क राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) रविन्द्र जायसवाल, आयुष राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ दयाशंकर मिश्र %दयालु%, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती पूनम मौर्य, महापौर अशोक तिवारी, पूर्व मंत्री तथा विधायक डॉ नीलकंठ तिवारी, विधायक डॉ अवधेश सिंह, सौरभ श्रीवास्तव, डॉ सुनील पटेल, सदस्य विधान परिषद हंसराज विश्वकर्मा, धर्मेंद्र राय, अश्विनी त्यागी, केंद्रीय शिक्षा सचिव विनीत जोशी, मंडलायुक्त कौशल राज शर्मा, पुलिस कमिश्नर मोहित अग्रवाल, जिलाधिकारी एस राजलिंगम, अपर पुलिस आयुक्त एस चिनप्पा, कार्यवाहक कुलपति बीएचयू डॉ संजय कुमार समेत भारी संख्या में तमिल अतिथि उपस्थित रहे। इससे पूर्व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा एयरपोर्ट से सीधे नमो घाट पहुंचें तथा बजडे पर सवार होकर बाबा विश्वनाथ का दर्शन करने पहुंचे। बजड़े पर सवार होने के दौरान घाटों पर उमड़ी भारी भीड़ द्वारा मुख्यमंत्री का हाथ हिलाकर तथा उद्घोष के साथ स्वागत किया। मुख्यमंत्री ने काशी विश्वनाथ मंदिर में विधि- विधान से बाबा विश्वनाथ का पूजन किया गया। तत्पश्चात मुख्यमंत्री पुनः नमो घाट पहुंचें तथा तमिल समागम के उद्घाटन कार्यक्रम में भाग लिया। मंदिर परिसर में भारी भीड़ के बीच मुख्यमंत्री द्वारा बच्चों को दुलारा गया तथा उपहार स्वरूप चाकलेट भेंट किया गया।

- ❒ नए भारत की परिकल्पना को आगे बढ़ाते हुए महर्षि अगस्त्य को केंद्र में रखकर इस बार के काशी तमिल संगमम् का थीम रखा गया है: मुख्यमंत्री
- ❒ राम को माता सीता को खोजने एवं राम-रावण युद्ध में आदित्य स्त्रोत देने वाले महर्षि अगस्त्य है: योगी आदित्यनाथ
- ❒ उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने काशी तमिल संगमम् का किया उद्घाटन
- ❒ भारी भीड़ तथा श्रद्धालुओं की सुविधा हेतु मुख्यमंत्री द्वारा काल भैरव मंदिर में दर्शन पूजन को स्थगित किया गया
- ❒ काशी विश्वनाथ मंदिर में विधि विधान से पूजन किया
- ❒ संस्कृत की तरह तमिल भी देश की सबसे पुरानी भाषा हैं, जो सांस्कृतिक एकता दिखाने का सबसे बड़ा मिसाल हैं: धर्मेंद्र प्रधान
- ❒ काशी-तमिल संगमम् एक सांस्कृतिक उत्सव है

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ और बेटियों को आत्मनिर्भर बनाओ मुहीम के अंतर्गत लड़कियों को करियर काउंसलिंग के माध्यम से विभिन्न रोजगार के प्रति किया गया जागरूक

शकुन टाइम्स संवाददाता

वाराणसी। नई सुबह एक उम्मीद सामाजिक संस्था के द्वारा श्री राम जानकी शिक्षण संस्थान में बच्चों को करियर काउंसलिंग के माध्यम से विभिन्न रोजगार के प्रति जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया । कार्यक्रम का संचालन विद्यालय के प्रधानाचार्य प्रदीप कुमार जी ने किया । कार्यक्रम की शुरुआत संस्था अध्यक्ष ममता जी ने बच्चों को विभिन्न प्रकार के रोजगार के विषय में जानकारी प्रदान करते हुए की । जागरुक करते हुए ममता जी ने बताया कि बच्चों को अपनी रुचियों के अनुसार आगे का लक्ष्य निश्चित करना चाहिए क्योंकि जो अंतर निहित शक्तियों होती हैं वह हमारे रुचियों के अनुसार ही हमको आगे बढ़ाने का प्रयास करती है इसलिए बच्चों में जो भी रुचि हो उसी के अनुसार उनको आगे की पढ़ाई करनी चाहिए। सही करियर काउंसलिंग के द्वारा बच्चों को अपने लक्ष्यों को पाने में सहायता मिलती है हर बच्चों के अंदर अलग-अलग रुचिया होती हैं जिस कारण से बच्चे अलग-अलग क्षेत्र में करियर बना सकते हैं हाई स्कूल तथा इंटर के बच्चों को सही करियर काउंसलिंग के माध्यम से उनको अच्छा भविष्य दिया जा सकता है ।

कार्यक्रम को सफल बनाने में संस्था के मोहम्मद अनीस , सूरज पाल,शबाना परवीन,विद्यालय की तरफ से माला देवी ,नंदलाल ,सुमन लता प्रजापति, जयप्रकाश, शकुंतला देवी,अन्नपूर्णा तिवारी जी ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया ।कार्यक्रम के दौरान खुशी पटेल,निधि ,शिल्पा ,प्रीति ,वंदना, रिया, सोनाली ,मुस्कान, पूजा, खुशी ,संजना, श्वेता, प्रिया ,सीमा, सत्यम, सीमा ,अनुराग ,आदित्य, विकास, विशाल, आदि लोग उपस्थित रहे।

जिला स्वच्छता समिति की बैठक संपन्न जिलाधिकारी ने दिया आवश्यक निर्देश

शकुन टाइम्स संवाददाता

जौनपुर। जिलाधिकारी डॉ0 दिनेश चंद्र की अध्यक्षता में जिला स्वच्छता समिति की बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में संपन्न हुई।

बैठक में जिलाधिकारी द्वारा 5812 लाभार्थियों को व्यक्तिगत शौचालय की प्रोत्साहन धनराशि दिए जाने हेतु अनुमोदन, वित्तीय वर्ष 2025-26 की वार्षिक कार्य योजना के अनुमोदन, व्यक्तिगत शौचालय निर्माण की प्रगति, स्वच्छ भारत मिशन फेस 2 योजना अंतर्गत ओडीएफ प्लस मॉडल ग्रामों की प्रगति, आरसी निर्माण आदि की समीक्षा की गई। बैठक मे समिति द्वारा स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) फेस-2 के अंतर्गत व्यक्तिगत शौचालय के प्रोत्साहन धनराशि को दो किस्तों में दिए जाने पर सर्वसम्मति से सहमति व्यक्त की गई। बैठक में वरिष्ठ कोषाधिकारी उमाशंकर, जिला पंचायत राज अधिकारी नत्थूलाल गंगवार, अपर जिला पंचायत राज अधिकारी, जिला कार्यक्रम अधिकारी, समस्त खंड विकास अधिकारी सहित अन्य अधिकारीगण, कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

विवाह समारोह में शामिल हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ

शकुन टाइम्स संवाददाता

वाराणसी। कानपुर प्रान्त प्रचारक श्रीराम जी के भतीजे अभिषेक का शनिवार को वाराणसी में विवाह हुआ। इस समारोह में शामिल होने के लिए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, क्षेत्र प्रचारक अनिल जी अम्बरीश सिंह भोला समेत भाजपा और आरएसएस के अनेक बड़े नेता वाराणसी पहुंचे और उन्होंने नवयुगल को शुभाशीर्वाद प्रदान किया।

श्रीराम जी के भतीजे अभिषेक सिंह प्रिंस संग हेमा सिंह (शिवानी) के साथ विवाह के पवित्र बंधन में बंध गए। उनकी शादी वाराणसी के मैरिज गार्डन में हुई। विवाह का कार्यक्रम शाम सात बजे से शुरू हुआ और देर रात तक चला इस अवसर पर रणजीत सिंह सर्वजीत सिंह, सौरभ सिंह उर्फ सीपू, राघवेंद्र सिंह, राजकमल सिंह, अरुण सिंह एवं परिवार के अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

दुष्कर्म का वाँछित अभियुक्त गिरफ्तार

वाराणसी। थाना सिगरा पुलिस द्वारा दुष्कर्म के मुकदमे से सम्बन्धित सिध्दार्थ राजभर पुत्र दुधनाथ राजभर निवासी ग्राम कुरहुआ काशीपुर रोहनिया को कमला नगर थाना सिगरा से गिरफ्तार कर आवश्यक विधिक कार्यवाही की गई।गिरफ्तार करने वाली पुलिस संजय कुमार मिश्र प्रभारी निरीक्षक थाना सिगरा,उ0नि0 रोहित कुमार तिवारी चौकी प्रभारी नगर निगम,हे0का0 मनोज कुमार राय टीम रही।

फर्जी दस्तावेजों के जरिए दूसरे की जमीन का बैनामा करने वाले वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

शकुन टाइम्स संवाददाता

वाराणसी। थाना बड़ागांव पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर रतनपुर नहर पुलिया के पास से फर्जी दस्तावेजों के माध्यम से दूसरे की जमीन का बैनामा करने के मामले में पंजीकृत मुकदमा में वांछित अभियुक्त मनोहर धुंडीराम ढेबे पुत्र स्वर्गीय धुंडीराम ढेबे निवासी ग्राम तुलसीगांव जिला सतारा महाराष्ट्र वर्तमान पता- अल्बर्ट कंपाउंड शंकर नगर गोरेगांव मुंबई महाराष्ट्र को गिरफ्तार कर किया। पूछताछ के दौरान अभियुक्त ने बताया कि वह ग्राम तुलसीगांव जिला सतारा महाराष्ट्र का रहने वाला है और वर्तमान में अल्बर्ट कम्पाउंड शंकर नगर गोरेगांव मुंबई महाराष्ट्र में रह रहा था। अभियुक्त ने बताया कि उसके साथियों ने कूटरचना कर उसका फर्जी आधार कार्ड,पैन कार्ड और अन्य दस्तावेज तैयार किए,जिससे उसका नाम सत्यम सिंह पुत्र स्वर्गीय राजेंद्र प्रसाद सिंह निवासी ग्राम रतनपुर दोयम (बड़ागांव) परगना कोलअसला तहसील पिंडरा थाना बड़ागांव दर्शाया गया। इन दस्तावेजों के आधार पर सत्यम सिंह की जमीन का बैनामा कराने की योजना बनाई गई। इसके बाद, आरोपियों ने बड़ागांव बाजार में ही एक बैंक में उसका खाता खुलवाया, जिसमें उसका फोटो भी लगाया गया।अभियुक्त ने यह भी बताया कि वह अशिक्षित है।गिरफ्तार करने वाली पुलिस प्र0नि0 अतुल कुमार सिंह थाना बड़ागांव,उ0नि0 अमित कुमार पाण्डेय,उ0नि0 मयंक सिंह,का0 अंकित सरोज टीम रही।

थाना सारनाथ पुलिस मुठभेड़ में शातिर बदमाश घायल अन्य 3 साथी सहित गिरफ्तार

बदमाशों के कब्जे से चोरी के माल व नकदी बरामद

शकुन टाइम्स संवाददाता

देवेंद्र पांडेय

वाराणसी। चोरी, लूट,नकबजनी की घटनाओं के गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में सहायक पुलिस आयुक्त सारनाथ के कुशल नेतृत्व में थाना सारनाथ पुलिस टीम द्वारा मुखबिर की सूचना पर दिनांक 15.02.2025 को समय करीब 01.52 बजे ग्राम परशुरामपुर स्थित राज इंग्लिश स्कूल के पीछे एक प्लाटिंग में बने अर्ध निर्मित मकान से चोरी के माल(3 एण्ड्राइड मोबाइल फोन, एक लैपटॉप, चार्जर, हैडफोन, ब्लूटूथ स्पीकर, पिघली हुई पीली धातु वजन 25 ग्राम, पिघली हुई सफ़ेद धातु वजन 170 ग्राम तथा 37000/-रु. नकद)बंटवारा करते हुए अभियुक्त गौरव राय उर्फ गोलू राय पुत्र अरुण राय,विशाल राजभर पुत्र लाल जी राजभर,हिमांशु गुप्ता पुत्र महेंद्र गुप्ता को चोरी के माल समेत गिरफ्तार किया गया ।पूछताछ के क्रम में प्राप्त जानकारी के आधार पर चेकिंग के दौरान फरीदपुर अंडर पास के निकट हुई पुलिस मुठभेड़ में एक शातिर अपराधी विशाल कुमार पुत्र राजेंद्र राम को समय लगभग 03.45 बजे गिरफ्तार कर लिया गया तथा कब्जे से एक देशी तमंचा 315 बोर व 1 खोखा,1 जिन्दा कारतूस,एक मोटरसाईकिल व 1 मोबाइल बरामद हुआ। उक्त गिरफ्तारी व बरामदगी के आधार पर थाना सारनाथ पुलिस द्वारा अग्रेतर विधिक कार्यवाही की गई। गिरफ्तारी व बरामदगी करने वाली पुलिस थानाध्यक्ष उ.नि. विवेक कुमार त्रिपाठी थाना सारनाथ, उ0नि0 अनिल सिंह चन्देल, उ0नि0 अमृत राज, उ0नि0 राहुल कुमार यादव, उ0नि0 भरत कुमार चौधरी, उ0नि0 शैलेन्द्र कुमार, उ0नि0 प्रशि0 देवेन्द्र सिंह, उ0नि0 दुर्गेश सिंह, हे0का0 दिलीप यादव, हे0का0 विनोद कुमार, हे0का0 विनीत सिंह, हे0का0 अरशद खां, हे0का0 दिनेश सिंह, का0 कन्हैया खरवार टीम रही।

राज्यमंत्री ने गिनाई सरकार के बजट की अच्छाईयां, कहा सभी वर्गों के लिए बजट में

शकुन टाइम्स संवाददाता

श्रावस्ती। भारतीय जनता पार्टी की ओर से पेश की गई बजट अभूतपूर्व है। 2047 में भारत विकासशील देश में शामिल हो जाएगा। पीएम मोदी के नेतृत्व में पेश बजट मील का पत्थर साबित होगा। यह बातें भारतीय जनता पार्टी की ओर से भिनगा पार्टी कार्यालय में प्रेस वार्ता करके आम लोगों को बजट की जानकारी देते हुए सूबे के राज्यमंत्री मयंकेश्वर शरण सिंह ने दी।

राज्यमंत्री व मुख्य अतिथि श्री सिंह ने कहा कि भाजपा सबका साथ सबका विकास के लिए कार्य कर रही है। वित्तीय वर्ष 2025-26 केन्द्रीय बजट विकसित भारत की गति को निर्धारित करने वाला है। देश की शक्ति उसकी भूमि में नहीं बल्कि लोगों में होती है। केन्द्रीय बजट चार प्रमुख इंजनों पर संचालित की गई है। कराधान, ऊर्जा क्षेत्र, शहरी विकास, वित्तीय क्षेत्र, नियामक सुधार एवं खनन रखा गया है। इस बजट का लक्ष्य एक व्यापक छह आयामी दृष्टिकोण पर आधारित है। उन्होंने कहा कि वरिष्ठ नागरिकों के लिए ब्याज पर कर कटौती की सीमा की गई है। किराए पर टीडीएस की वापसी सीमा 2.40 लाख से बढ़ाकर 7 लाख कर दी गई है। वहीं मध्यम वर्ग में कर्मचारियों को 12 लाख तक की आय में कोई टैक्स नहीं देना पड़ेगा, जो एक बड़ा फैसला है। अन्नदाताओं के समग्र कल्याण के लिए प्रधानमंत्री धन धान्य कृषि योजना चलाई गई है। जिसमें 100 जिलों को चिन्हित कर कम उत्पादकता और कम बीमा कवरेज वाले कृषि जिलों को शामिल किया जाएगा। इसमें 1.7 करोड़ से अधिक अन्न दाताओं को लाभ मिलेगा। कृषि क्षेत्र में रोजगार की कमी को दूर करने के लिए एक व्यापक बहु क्षेत्रीय ग्रामीण समृद्धि और लचीलापन कार्यक्रम शुरू किया जा रहा है। इसमें कौशल विकास, निवेश एवं तकनीक के माध्यम से लोगों को प्रशिक्षित किया जाएगा। इसी के साथ ही सब्जियों एवं फलों के उत्पादन को बढ़ावा देना, मखाना बोर्ड स्थापित किया जाना सहित तमाम चीजें बजट में शामिल हैं। विश्व स्तरीय शिक्षा के माध्यम से युवाओं को सशक्त बनाया जाएगा। युवाओं को उन्नत कौशल से लैस किया जाएगा। अगले पांच वर्षों में 50 हजार अटल टिंकरिंग प्रयोगशालाएं खोली जाएंगी। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों में ब्राड बैंड कनेक्टीविटी प्रदान की जाएगी। पांच राष्ट्रीय उत्कृष्टता केन्द्र स्थापित किए जाएंगे। यह केन्द्र युवाओं को मेक इन इंडिया, मेक फार द वर्ल्ड के तहत आवश्यक कौशल से सशक्त बनाएंगे।

तहसील दिवस मे आये 62 मामले, मौके पर हुआ 11 का निस्तारण

शकुन टाइम्स संवाददाता

आनन्दनगर/महराजगंज। शासन के मंशा के अनुरूप सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन शनिवार को फरेंदा तहसील सभागार में तहसील स्तरीय सम्पूर्ण समाधान दिवस तहसीलदार वशिष्ठ वर्मा की अध्यक्षता में आयोजित की गई। जिसमें विभिन्न विभागों की समस्याओं को लेकर 62 फरियादियों ने अपनी फरियाद दर्ज कराई। इस मौके पर 11 शिकायतों का निस्तारण हुआ। शेष शिकायतों को गंभीरता से लेते हुए अविलंब निस्तारण करने के लिए सम्बंधित विभागों के अधिकारियों को सौंप दिया गया। जिससे शासन की मंशा का वाजिब लाभ जनता को मिलता सकें।इस दौरान नायब तहसीलदार अंकित अग्रवाल, बीडीओ केके शुक्ल व सचिदानंद शुक्ल सहित विभिन्न व्लाकों के खंड विकास अधिकारी सहित तहसीलस्तरीय अधिकारी, एवं कर्मचारी मौजूद रहें।

संक्षिप्त सामाचार

डिजिटल साक्षरता पर शिक्षकों को दिया गया प्रशिक्षण

श्रावस्ती। उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत विज्ञान विषय के शिक्षकों को डिजिटल साक्षरता विषय पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया। डायट में आयोजित प्रशिक्षण में डिजिटल साक्षरता विषय की जानकारी दी गई। इस मौके पर डायट प्राचार्य संतोष कुमार सिंह ने कहा कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में डिजिटल लिट्रेसी, कोडिंग, कंप्यूटेशनल थिंकिंग एवं आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का प्रशिक्षण अत्यंत आवश्यक है। प्रशिक्षण में कंप्यूटर एवं उसके भाग व एमएस वर्ड और एक्सल फाइल, गूगल अकाउंट व मोबाइल फोन को हैकर्स से सुरक्षित रखना विषय शामिल है। इसलिए सभी को अच्छी तरह से सीख कर छात्रों को भी ठीक से जानकारी देना है। इस दौरान प्रशिक्षण प्रभारी ओम प्रकाश यादवपचपेड़वा में राप्ती नहर में मिट्टी खुदाई की जांच केसल फाइल, गूगल अकाउंट व मोबाइल फोन को हैकर्स से सुरक्षित रखना विषय शामिल है। इसलिए सभी को अच्छी तरह से सीख कर छात्रों को भी ठीक से जानकारी देना है।

मिट्टी खुदाई की जांच के आदेश

बलरामपुर। जिले के पचपेड़वा में 15 दिनों से राप्ती नहर में मिट्टी की खुदाई बड़े पैमाने पर हो रही है। इसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था, जिसमें मानक के विपरीत जेसीबी से खुदाई कर कई ट्रैक्टर-ट्रॉलियों से मिट्टी ले जाई जा रही थी। आयुक्त शशि भूषण लाल सुशील ने मामले की जांच के आदेश दिए हैं। उन्होंने जिलाधिकारी को कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। सिंचाई विभाग की राप्ती नहर परियोजना पचपेड़वा कस्बे के पास से होकर निकली है। विभाग ने नहरों की पटरियों को दुरुस्त करने और चढ़ी मिट्टी को हटाने का कार्य बस्ती जनपद की किसी फर्म को दिया है। तय मानक के तहत पूरी नहर से 25 हजार घनमीटर मिट्टी निकाले जाने की स्वीकृति है, निकाली गई मिट्टी को डंप करना है। लेकिन पचपेड़वा में मानक से कई गुना ज्यादा मिट्टी निकाले जाने की शिकायत सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों ने की है। वायरल वीडियो में तय मानक से अधिक मिट्टी निकाले जाने की स्थिति प्रदर्शित हो रही है। आयुक्त ने मामले को गंभीरता से लिया। उन्होंने कहा कि मिट्टी के खनन की निगरानी खनन अधिकारी को करनी चाहिए। उनसे जवाब मांगा गया है। इसके साथ ही नहर की मिट्टी की इस तरह खुदाई कराए जाने के बारे में मुख्य अभियंता सिंचाई विभाग से पूरी रिपोर्ट मांगी गई है।

युवक के शोषण से तंग आकर छात्रा ने लगाई फांसी, मुकदमा दर्ज

गोंडा। युवक के शोषण से तंग आकर छात्रा ने फांसी के फंदे को चूम लिया। मृतका के मां की तहरीर पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है। घटना जनपद गोंडा के थाना कौड़िया अन्तर्गत एक गांव से जुड़ी है। यहां की निवासिनी एक महिला की तहरीर पर पुलिस ने पांच लोगों के विरुद्ध छेड़खानी व आत्महत्या करने के लिए विवश करने सहित अन्य धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज किया है। तहरीर में कहा गया है की उसकी 16 वर्षीय पुत्री जनता इंटर कालेज मे कक्षा 11 की छात्रा थी। वर्ष 2022 से कालेज आते जाते समय हिमांशु पाठक उसके साथ छेड़छाड़ करते हुए वीडियो बना लिया। उसके बाद वह उसे वायरल करने की धमकी देते हुए उसका शारीरिक शोषण करने लगा। जिससे तंग आकर उसने अपने परिवार वालों से बताया।परिजन हिमांशु के घर जाकर शिकायत किये।

प्रमुख प्रतिनिधि ने निर्विरोध नवनिर्वाचित क्षेत्र पं.स. को फूल माला पहनाकर दी बधाई

शकुन टाइम्स संवाददाता

महराजगंज। त्रिस्तरीय पंचायत उपचुनाव में लक्ष्मीपुर क्षेत्र के ग्राम पंचायत हरैया रघुवीर से निर्विरोध नवनिर्वाचित हुए क्षेत्र पंचायत सदस्य शेषमन यादव को शनिवार को दिन में फूल माला पहनाकर एवं मिठाई खिलाकर ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि लक्ष्मीपुर संतोष पाण्डेय ने स्वागत कर बधाई दी। उन्होंने कहा कि चुनाव कोई भी हो, व्यक्ति की पहचान ही उक्त क्षेत्र में सफलता मिलता है। इस दौरान ग्राम प्रधान रामबेलास, झिनकू यादव,सन्नी पाण्डेय, छोटेलाल, पप्पू पाण्डेय सहित आदि मौजूद रहें।

उतरौला में रेलवे लाइन के लिए जमीन मिली, अब अधिग्रहण का इंतजार

शकुन टाइम्स संवाददाता

बलरामपुर। आजादी के बाद पहली बार जिले की उतरौला तहसील को रेलवे लाइन से जोड़ा जाना है, इसकी तैयारी तेज हो गई है। खलीलाबाद से रेलवे लाइन उतरौला और श्रीदत्तगंज से होकर बलरामपुर होते हुए बहराइच तक बिछाई जानी है। इसके लिए जिले के 53 गावों में भूमि अधिग्रहण होना है। बहराइच में अधिग्रहण की प्रक्रिया शुरू होने से मार्च तक जिले में भी प्रक्रिया तेज होने की उम्मीद है।इस नई रेल लाइन के लिए 2014 में सर्वे के लिए बजट मिला था। इस वर्ष बहराइच-श्रावस्ती-बलरामपुर 80 किमी रेल लाइन बिछाने के लिए 620 करोड़ रुपये मिले हैं। उत्तरौला से बहराइच जनपद की सीमा तक 240.264 किलोमीटर लंबाई में रेलवे लाइन बिछाई जानी है। बलरामपुर जिले में 53 गांवों में रेल पटरी बिछाने के लिए किसानों की भूमि का अधिग्रहण किया जाएगा। जमीन चिह्नित कर खेतों में पत्थर भी लगाए जा चुके हैं। रेल पटरी बिछाने के लिए 40 फीट चौड़ाई में जमीनों का अधिग्रहण किया जाएगा। जिन स्थानों पर रेलवे स्टेशन बनने हैं, वहां पर 100 मीटर चौड़ाई में जमीनें अधिग्रहीत की जाएंगी। नई रेलवे लाइन बिछाने के साथ ही रेलवे स्टेशन और हॉल्ट स्टेशन भी बनेंगे। बलरामपुर विकास खंड के हंसुवाडोल गांव पहला हॉल्ट स्टेशन होगा। झारखंडी रेलवे स्टेशन पर गोंडा-गोरखपुर रेल लाइन से बहराइच-खलीलाबद रेल लाइन को जोड़ा जाएगा। भगवतीगंज स्थित बलरामपुर रेलवे स्टेशन से उतरौला के लिए रेल लाइन का विस्तार होगा। बलरामपुर स्टेशन को जंक्शन का दर्जा मिलेगा। सदर विकास खंड के खगईजोत से स्टेशन के बाद महेशभारी गांव में हाल्ट स्टेशन बनेगा। श्रीदत्तगंज व उतरौला में स्टेशन और कपौवा शेरपुर में हॉल्ट स्टेशन बनेगा। अपर जिलाधिकारी प्रमोद कुमार ने बताया है कि उतरौला क्षेत्र में अभी रेलवे लाइन नहीं है, रेलवे लाइन बिछाने की स्वीकृति है।

चेक भुगतान बाधित कराकर गाली व धमकी देने वालों पर मुकदमा दर्ज

गोंडा। जिले के थाना कटरा बाजार के नगर क्षेत्र कटरा बाजार में तीन लाख रुपये का चेक देकर बैक में भुगतान बाधित कराने व जानमाल की धमकी देने के मामले में यहां के वार्ड नंबर 14 निवासी पीड़ित जगन्नाथ मौर्य की तहरीर पर पुलिस ने दो लोगों के विरुद्ध विभिन्न धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज किया है। पीड़ित जगन्नाथ मौर्य ने तहरीर में कहा है की वह जमीन प्लाटिंग का कार्य करता है। भूपेंद्र तिवारी के कहने पर वार्ड नंबर 15 निवासी सर्वेश रुहेला की भूमि 7 लाख रुपये में तय करवाकर शिवांनंद तिवारी के नाम बैनामा करवा दिया। जिसमे तीन लाख रुपये का चेक देते हुए कहा गया की एक माह के अंदर बैक में चेक लगाकर भुगतान करवा लेना। निर्धारित समय पर चेक लेकर बैंक पहुंचने पर पता चला की उन्होंने चेक स्टॉप करवा दिया है। आरोप है की रुपये मांगने पर दोनों लोग गाली देते हुए जान से मारने की धमकी भी दे रहे हैं।

विद्यालय में शिक्षा और सामाजिकता सीखने को मिलती है

शकुन टाइम्स संवाददाता

जंगल कौड़िया/गोरखपुर। ब्लॉक क्षेत्र के परम ज्योति इंटर कॉलेज रसूलपुर चकिया में इंटरमीडिएट के विद्यार्थियों का विदाई समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अतिथि अध्यापिका किरन सिंह ने मां सरस्वती के पूजन अर्चन के साथ किया। इसके बाद विद्यार्थियों ने विद्यालय में प्राप्त किए गए शिक्षण अधिगम को साझा करते हुए बताया कि परम ज्योति इंटर कॉलेज शिक्षण अधिगम के लिए क्षेत्र का उत्तम विद्यालय है। विद्यार्थियों को उज्जवल भविष्य की शुभकामना देते हुए प्रधानाचार्य रवि प्रताप सिंह ने कहा कि विद्यालय के माध्यम से विद्यार्थी को शिक्षा संबंधित बातों को सीखने के साथ ही सामाजिकता भी सीखने को मिलती है। वरिष्ठ प्रवक्ता दीनबंधु सिंह ने सभी को आगामी बोर्ड परीक्षा की तैयारी के लिए प्रोत्साहित किया। इस दौरान 11वीं के विद्यार्थियों की अध्यक्षता में कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें इंटरमीडिएट के विद्यार्थियों ने प्रतिभा किया। साड़ी पहनो कंपटीशन में शिवम साहनी, डांस कंपटीशन में रिया साहनी प्रथम स्थान प्राप्त किए, जबकि नीतू सिंह को मिस फेयरवेल चुना गया।

छापेमारी कर बताया बाल विवाह और बाल श्रम का नुकसान, की गई कार्रवाई

शकुन टाइम्स संवाददाता

श्रावस्ती। शनिवार को पुलिस अधीक्षक घनश्याम चौरसिया के निर्देशन तथा अपर पुलिस अधीक्षक प्रवीण कुमार यादव के नेतृत्व में थाना एएचटी टीम ने एनजीओ के साथ मिल कर आधा दर्जन स्थानों पर छापेमारी की। इस दौरान एक बाल विवाह को रोका तथा बालश्रम पर लोगों को जागरूक किया। इसके साथ ही बालश्रम कराने वाले लोगों को कड़ी कार्रवाई करने की चेतावनी भी दी। थाना एएचटी के आरक्षी देवेंद्र कुमार मौर्य, अभिषेक कुमार, महिला आरक्षी कंचन देवी व आरक्षी सरला अवस्थी तथा थाना मल्हीपुर के बाल पुलिस कल्याण अधिकारी एवं एनजीओ देहात इंडिया के सहयोग से बाल श्रम एवं बाल विवाह उन्मूलन अभियान शनिवार को चलाया गया। इस अभियान के तहत थाना मल्हीपुर क्षेत्र के मल्हीपुर बाजार, साईं चौराहा, माल्ही चौराहा सहित विभिन्न स्थानों पर चौपाल लगाकर बाल श्रम, बाल भिक्षावृत्ति, बाल विवाह एवं नशे के दुष्प्रभाव को लेकर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस दौरान आमजन को बताया गया कि 18 वर्ष से कम आयु के बच्चों से मजदूरी कराना कानूनी अपराध है। साथ ही, बाल श्रम रोकने और जरूरतमंद बच्चों की सहायता के लिए 1090, 1098, 108, 112, 1076, 181 जैसी सरकारी हेल्पलाइन नंबरों की जानकारी दी गई। अभियान के दौरान ग्राम भगवानपुर भैंसाही में बाल विवाह की सूचना मिलने पर तुरंत टीम मौके पर पहुंची। परिजनों की ओर से बालिका की आयु संबंधी साक्ष्य प्रस्तुत किए जाने के बाद उसे बालिग पाया गया। इसके बावजूद, मौके पर मौजूद परिवारजनों एवं स्थानीय लोगों को बाल विवाह के दुष्परिणामों के बारे में जानकारी दी गई तथा सभी ने बाल विवाह न करने की शपथ ली। बताया गया कि बाल श्रम, बाल भिक्षावृत्ति, बाल विवाह और नशे के विरुद्ध यह अभियान गत 10 जनवरी से चलाया जा रहा है।

टी.एस.सी.टी. टीम ने स्व0 राम जनम वर्मा का किया स्थलीय निरीक्षण

शकुन टाइम्स संवाददाता

महराजगंज। टीचर्स सेल्फ केयर टीम उत्तर प्रदेश के संस्थापक/प्रदेश अध्यक्ष विवेकानंद के निर्देश पर जिला टीम महराजगंज के संयोजक चरन सिंह के नेतृत्व में जून माह में स्वर्गीय हुए राम जनम वर्मा उच्च प्राथमिक विद्यालय ओड़वालिया ब्लॉक फरेन्दा, महराजगंज का स्थलीय निरीक्षण करने हेतु जिला टीम ब्लॉक परतावल में पहुँचा। जहां उनकी पत्नी कार्यरत हैं। स्वर्गीय शिक्षक का का देहांत 20 जून 2024 को हो गया था। टीचर्स सेल्फ केयर टीम (टीएससीटी) उत्तर प्रदेश बेसिक विभाग, माध्यमिक व मदरसा के शिक्षकों की संस्था जो दिवंगत शिक्षकों के परिवार को आर्थिक मदद प्रदान करती है अब तक यह संस्था 256 दिवंगत शिक्षकों के परिवारों को लगभग 99 करोड़ रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान कर चुकी है। टीएससीटी टीम स्व0 राम जनम वर्मा के पत्नी व बच्चों से मिलकर शोक संवेदना व्यक्त किया। स्वर्गीय शिक्षक के नामिनी पत्नी अल्का वर्मा से सहयोग हेतु बैंक पासबुक एवं अन्य जरूरी प्रपत्र प्राप्त किया गया। बता दें कि टीएससीटी एक ऐसी संस्था है जो अध्यापकों के द्वारा चलाया जा रहा एक समूह है जिसमें जुड़ने वाले किसी भी दिवंगत शिक्षक के परिवार को इससे जुड़े प्रदेशभर के शिक्षक के द्वारा प्रत्येक नॉमिनी को 17 रुपये यानी पूल सिस्टम के माध्यम से 20 शिक्षकों के परिवार को कुल 340 रुपये का सहयोग करता है। यह प्रक्रिया प्रत्येक महीने के 15 तारीख से 25 तक चलता रहता है। इस माह में स्व0 वर्मा की पत्नी अल्का वर्मा के खाते में सदस्यों द्वारा 15 तारीख से सहयोग किया जाएगा जिससे लगभग 52 से 55 लाख रुपए का आर्थिक मदद प्राप्त होगा। इस स्थलीय निरीक्षण में मण्डल संयोजक नीरज श्रीवास्तव, जिला संयोजक चरन सिंह कंवर, जिला आईटी सेल प्रभारी मो0 अय्यूब अंसारी, जिला सह संयोजक दीपचंद पाल, अजय कुशवाहा, संदीप सिंह, विवेक कुमार, ब्लॉक संरक्षक डॉ0 कैलाश नाथ मौर्या, कृष्ण मुरारी सिंह, ब्रजेन्द्र पटेल, राकेश कुमार राय, शीतल मिश्रा आदि लोग उपस्थित रहे।

अकटहवा गांव की जांच में विलम्ब पर सीडीओ ने जांच अधिकारी को रिमाइंडर भेजा

शकुन टाइम्स संवाददाता

पीपीगंज /गोरखपुर। भरोहिया ब्लाक के अकटहवा गांव में वित्तीय अनियमितता बिना काम कराये धनराशि के भुगतान की शिकायत कन्हैया लाल ने मुख्यमंत्री से मिलकर किया था। जिस पर जिलाधिकारी गोरखपुर ने जांच कमेटी बनाकर जिला प्रोबेशन अधिकारी/ जांच अधिकारी से जांच कर 15 दिन में रिपोर्ट मांगा था।

लेकिन छ माह बीतने के बाद भी जांच अधिकारी न तो मौके पर पहुंचे और न ही कोई जांच किया। जांच न होने पर कन्हैया लाल पुनः जिला अधिकारी और मुख्य विकास अधिकारी से मिलकर शिकायत किया। जिस मुख्य विकास अधिकारी ने दूसरी बार रिमाइंडर जिला प्रोबेशन अधिकारी को भेजा। जिला प्रोबेशन अधिकारी का कहना है कि हमने दो बार बीडीओ भरोहिया को अभिलेख उपलब्ध कराने के लिए पत्र लिखा है। लेकिन अभी तक बीडीओ भरोहिया ने अभिलेख उपलब्ध नहीं कराया है जिससे जांच नहीं हो पा रही है। इस संदर्भ में जब इस बात की शिकायत जिला पंचायत राज अधिकारी निलेश प्रताप सिंह से मिलकर कन्हैया लाल ने कहा तो उन्होंने कहा कि जिला प्रोबेशन अधिकारी से कहिए कि वे अभिलेख वापस करें और किसी दूसरे से इसकी जांच कराई जाएगी। कन्हैया लाल ने उपरोक्त प्रकरण में मिलीभगत की आशंका जताई है। और किसी दूसरे अधिकारी से अविलम्ब जांच की मांग किया है। इस संदर्भ में बीडीओ भरोहिया से बात किया गया तो उन्होंने बताया कि संबंधित ग्राम पंचायत अधिकारी अकटहवा अवधराज राव को नोटिस देकर अभिलेख तीन दिन में उपलब्ध कराने के लिए कहा गया था। अभिलेख उपलब्ध न कराने पर दूसरी बार नोटिस देकर जबाव मांगा गया है। यदि समय से ग्राम पंचायत अधिकारी द्वारा अभिलेख उपलब्ध नहीं कराया जाता है तो उनके ऊपर विधिसम्मत कार्यवाही की जाएगी।

मनरेगा योजना चढ़ीं भ्रष्टाचार की भेंट, लाखों का खेल

फर्जी हाजिरी लगाकर सरकारी धन का किया जा रहा बंदरबांट

शकुन टाइम्स संवाददाता

महराजगंज। प्रदेश सरकार के लाख दावे किए जाने के बाद भी भ्रष्टाचार रुकने का नाम नहीं ले रहा हैं।दरअसल लक्ष्मीपुर विकासखंड के ग्राम समरधीरा में मनरेगा योजना के तहत हो रहे कार्यों में बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार सामने आया है। रोजगार सेवक व ग्राम प्रधान एवं सचिव की मिलीभगत से फर्जी हाजिरी लगाकर सरकारी धन का दुरुपयोग किया जा रहा है। यही नहीं मौके पर पांच लोगो को खड़ा करके फोटो लगाकर लाखों रुपए का गोलमाल किया जा रहा हैं जो चार दिनों से कागजों में सिमटकर रह गया है मनरेगा योजना जिससे धरातल पर गायब हो गए। सीएम योगी के गृह जनपद से सटे महराजगंज जिले में मनरेगा की खुली छूट में खूब खेल हो रहा हैं।जो वास्तविक मजदूर हैं उन्हें रोजगार वंचित कर चहेतों के खाते में पैसा भेजकर रोजगार सेवक वसूली कर रहे हैं।वहीं मनरेगा मजदूरों के लिए यह संकटों के बादल मंडरा रहा है तथा यह कार्य मानक के विपरित किया गया है लेकिन अधिकारियों की नजर इन पर न पड़कर सिर्फ कमीशन पर टिका हुआ है। लक्ष्मीपुर ब्लाक के ग्राम समरधीरा में पीडब्लूडी सड़क से राधेश्याम के खेत तक सीसी रोड मनरेगा के तहत कार्य कागजों में हो रहा था। जो इस कार्य के लिए वर्क कोड संख्या 3152002061 आर सी 95848625582363O103 के तहत मस्टरोल नंबर आनलाइन हाजिरी 15529, 15530, 15531,15532,15 533 तक 5 मास्टर रोल जारी किए गए। जो कार्यस्थल का भौतिक सत्यापन किया गया, तो पाया कि मौके पर 11 फरवरी 2025 को ही कार्य पूर्ण किया जा चुका हुआ है लेकिन आनलाइन हाजिरी चल रहा था जो मौके पर एक भी मजदूर काम नहीं कर रहे थे। इसके बावजूद रोजगार सेवक द्वारा प्रतिदिन 48 से अधिक मजदूरों की फर्जी ऑनलाइन हाजिरी लगाई जा रही है। हाजिरी के लिए रोजाना मौके पर पांच लोगों को खड़ा करके फोटो खींचकर जियो टैग किया जा रहा है, फिर भी ब्लाक के आला अधिकारी जाँच के जगह पर मौन धारण कर मैनेज में लगे रहते हैं। जबकि सरकार मनरेगा योजना का उद्देश्य ग्रामीण बेरोजगारों को रोजगार मुहैया कराना है। लेकिन इस योजना का लाभ जरूरतमंदों तक पहुंचने के बजाय रोजगार सेवक, ग्राम प्रधान और ब्लॉक कर्मचारियों की मिलीभगत से उनके निजी स्वार्थ के लिए उपयोग किया जा रहा है। यहां तक कि जब रोजगार सेवक से फोन पर वार्ता किया गया तो उसने गलती को स्वीकार किया और प्रधान पर टालमटोल कर दिया। जब कि इस कार्य स्थल पर कराए गए कार्य भी मानक के विपरित हुआ हैं जो ठीक ग्राम पंचायत में पीडब्लूडी सड़क से सहअली के घर तक सीसी रोड निर्माण कार्य किया गया है वह भी मानक के विपरीत हुआ है ऐसे मे ग्रामीणों ने जिलाधिकारी से जाँच की माँग किया है। इस संबंध में मुख्य विकास अधिकारी अनुराज जैन ने कहा कि मामले को संज्ञान में लेते हुए जाँच कराते हैं सही पाए जाने पर संबंधित अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई किया जायेगा।

24 शिक़ायती पत्रों का निस्तारण

शकुन टाइम्स संवाददाता

गाजीपुर। जन समस्याओ के त्वरित निस्तारण हेतु सम्पूर्ण समाधान दिवस तहसील जखनियां में जिलाधिकारी आर्यका अखौरी की अध्यक्षता एवं पुलिस अधीक्षक ईरज राजा की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ. जिसमे 69 शिकायत/प्रार्थना प्राप्त हुए और मौके पर 05 का निस्तारण किया गया. जनसमस्याओं के त्वरित निस्तारण हेतु सातों तहसीलो की सूचना के अनुसार सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल 171 शिकायत/प्रार्थना प्राप्त हुए जिसमें मौके पर 24 शिकायत/प्रार्थना पत्रों का निस्तारण किया गया.इसी क्रम में तहसील जमानियां में उपजिलाधिकारी की अध्यक्षता 17 शिकायत/प्रार्थना प्राप्त हुए जिसमें 02 का मौके पर निस्तारण किया. तहसील सेवराई में उपजिलाधिकारी की अध्यक्षता में 12 शिकायत/प्रार्थना प्राप्त हुए जिसमें से 04 का मौके पर निस्तारण किया गया. सदर तहसील में उपजिलाधिकारी की अध्यक्षता में 17 शिकायत/प्रार्थना प्राप्त हुए 04 का मौके पर निस्तारण किया गया. तहसील मुहमम्दाबाद में उपजिलाधिकारी की अध्यक्षता में 14 शिकायत/प्रार्थना प्राप्त हुए जिसमें से 02 का मौके पर निस्तारण किया गया. तहसील कासिमाबाद में उपजिलाधिकारी की अध्यक्षता में 21 शिकायत/प्रार्थना प्राप्त हुए जिसमें से मौके पर 05 का निस्तारण किया गया एवं तहसील सैदपुर में उपजिलाधिकारी की अध्यक्षता में 21 शिकायत/ प्रार्थना प्राप्त 02 का मौके पर निस्तारण किया गया।

जिलाधिकारी ने सम्पूर्ण समाधान दिवस में प्राप्त शिकायत/प्रार्थना पत्रों का सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देश दिया कि अविलम्ब मौके पर जाकर स्थलीय निरीक्षण कर निस्तारण किया जाय. तहसील दिवस के उपरान्त तहसील परिषर में बनाये गये समीक्षा भवन का जिलाधिकारी आर्यका अखौरी द्वारा फीता काटकर उद्घाटन किया गया. इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी संतोष कुमार वैश्य, परियोजना निदेशक राजेश यादव, जिला विकास अधिकारी सुभाष चन्द्र सरोज, उपजिलाधिकारी जखनियां, तहसीलदर जखनियां, एवं समस्त सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित रहे।

मंदिर निर्माण को लेकर महिला सहित ग्रामीण हुए लामबंद

शकुन टाइम्स संवाददता

सकलडीहा/ चंदौली। विकास खंड के नईकोट गांव में शंकर भगवान की जर्जर मंदिर का जीर्णोद्धार कराने के लिये ग्रामीण चंदा लगाकर बनाना चाह रहे है। जिसे दूसरे गांव के लोगों की ओर से रोके जाने का ग्रामीणों ने विरोध जताया है। एसडीएम अनुपम मिश्रा से मिलकर उचित न्याय करने की मांग किया है। इस मौके पर गांव की काफी संख्या में महिलायें और ग्रामीण मंदिर इिस मौके पर ग्राम प्रधान वीरेन्द्र कुमार शर्मा,कुंदन सिंह,कमलेश सिंह, संत कुमार सिंह,अमरेश पांडेय,आकाश सिंह, श्रीकांत पांडेय,तग्रामीणों ने आपस में चंदा लगाकर निर्माण कार्य के लिये मैटैरियल सहित निर्माण कार्य करा चुके है। वही उकनी गांव के कुछ लोग अपनी भूमि बताकर निर्माण कार्य को रोकना चाह रहे है। यही नही न्यायालय की ओर से स्थगन आदेश होने का दावा भी कर रहे है। इसकी जानकारी होने पर दर्जनों की संख्या में महिलाये और ग्रामीण तहसील मुख्यालय पर पहुंचकर हो हल्ला मचाने शुरू कर दिया। जबकि पूर्व में राजस्व विभाग की टीम की ओर से पैमाईस भी किया गया था। उस समय उभय पक्ष की ओर से सहमति भी जताया गया था। मंश्रिा से मिलकर उचित न्याय करने की मांग किया है। इस मौके पर गांव की काफी संख्या में महिलायें और ग्रामीण मंदिर इिस मौके पर ग्राम प्रधान वीरेन्द्र कुमार शर्मा,कुंदन सिंह,कमलेश सिंह, संत कुमार सिंह,अमरेश पांडेय,आकाश सिंह, श्रीकांत पांडेय,तारापांडेय,माधुरी राय, चिंता देवी, सोनी,सुषमा शर्मा,उषा शर्मा सहित अन्य महिलायें मौजूद रही।

संक्षिप्त सामाचार

ग्राम प्रधान ने किया ढाई लाख का गबन

इटावा। ग्राम पंचायत मोहरी के प्रधान रामशंकर मिश्रा पर बड़ी कार्रवाई की गई है। जिलाधिकारी अवनीश राय ने प्रधान के वित्तीय अधिकार सीज कर दिए हैं। मामला 2.41 लाख रुपये के गबन का है, जिसमें बिना निर्माण कार्य कराए ही भुगतान कर दिया गया। यह मामला तब सामने आया जब ब्लॉक ताखा के पूर्व प्रधान शैलेंद्र कुमार अवस्थी ने जिलाधिकारी से शिकायत की। जांच में पाया गया कि वर्तमान प्रधान ने कई निर्माण कार्यों का भुगतान तो कर दिया, लेकिन वास्तव में ये काम कभी हुए ही नहीं। एडीओ पंचायत ने 6 नवंबर को प्रधान और सचिव को नोटिस जारी किया। सचिव ने जवाब दिया, लेकिन प्रधान ने कोई जवाब नहीं दिया। डीपीआरओ की अंतिम चेतावनी के बाद 13 जनवरी को प्रधान ने अपना पक्ष रखा। जांच में चार मामलों में अनियमितता पाई गई और कुल 2,41,579 रुपये के गबन का खुलासा हुआ। गांव के विकास कार्य प्रभावित न हों, इसलिए जिलाधिकारी ने बीडीओ को एडीओ पंचायत के माध्यम से तीन सदस्यीय टीम गठित करने का आदेश दिया है। यह टीम अब ग्राम पंचायत के वित्तीय मामलों को देखेगी।

कीटनाशक रसायन पीने से युवक की हुई मौत

महराजगंज/रायबरेली। संदिग्ध परिस्थितियों में युवक ने पिया कीटनाशक हालत हुई गंभीर। जिला अस्पताल में हुई मौत। शिव शंकर पुत्र जगन्नाथ उम्र 27 वर्ष पता नरई ने किसी कारणवश पौधों पर जो कीटनाशक डाला जाता है उसे पी लिया।

आनन-फानन उसे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र महराजगंज लाया गया। जहां हालत गंभीर होने पर डॉक्टरों ने जिला अस्पताल रिफर कर दिया। जिला अस्पताल में शिव शंकर की मौत हो गई।

पीड़िता ने आरोपित के पक्ष में दिए बयान, अपहरण में बरी

आगरा। अपहरण एवं पॉक्सो एक्ट के मामले में आरोपित आदेश निवासी मटसेना जिला फिरोजाबाद को राहत मिल गई है। अदालत ने आरोपित को साक्ष्य के अभाव में बरी करने के आदेश दिए। मामले में पीड़िता ने आरोपित के पक्ष में बयान दिए। वादी ने थाना डौकी पर तहरीर देकर आरोप लगाया कि 10 सितंबर 2018 की सुबह वह और उसकी पत्नी खेत पर काम करने गई थे। उनकी पुत्री घर पर अकेली थी। घर आने पर पुत्री के नदारद रहने पर संभावित स्थानों पर उसकी तलाश में सफलता नहीं मिलने पर थाने में मुकदमा दर्ज कराया। पुलिस ने विवेचना के दौरान आरोपित को हिरासत में लेकर पीड़िता को बरामद कर चिकित्सीय परीक्षण के बाद बयान के लिए मजिस्ट्रेट के समक्ष पेश किया। पीड़िता ने अपने बयानों में कहा वह आरोपित के साथ अपनी मर्जी से गई थी। उसने आरोपित से शादी कर ली है वह बालिग है। आरोपित की ओर से अधिवक्ता कृष्णमुरारी माहेश्वरी ने तर्क प्रस्तुत किए।

बाइक सवार बैंक प्रबंधक को गन्ना लदी ट्रैक्टर-ट्रॉली ने रौंदा,मौत

अयोध्या। मसौधा होते हुए ड्यूटी जा रहे थे सुलतानपुर के देहली बाजार भदरसा संवाददाता। पूराकलन्दर थाना क्षेत्र में शनिवार सुबह गन्ना लदी ट्रैक्टर-ट्राली ने बाइक सवार एक बैंक प्रबंधक को रौंद दिया। हादसे में बैंक प्रबंधक की मौत हो गई। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराया है। अयोध्या कोतवाली क्षेत्र के सरेठी गाँव के मजरे गंगा राम का पुरवा निवासी दिनेश कुमार (55) पुत्र स्व. शोभाराम सुल्तानपुर जनपद के देहली बाजार स्थित बड़ौदा उत्तर प्रदेश ग्रामीण बैंक में बतौर शाखा प्रबन्धक तैनात थे।

आचार संहिता उल्लंघन के मामले में कोर्ट ने सांसद पप्पू यादव को किया बरी

शकुन टाइम्स संवाददाता

गाजीपुर। पूर्णिया के सांसद राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव को आज एमपी/एमएलए कोर्ट के न्यायाधीश ने आचार संहिता उल्लंघन के मामले में बरी कर दिया है। वरिष्ठ अधिवक्ता राजीव मोहन ने बताया कि एमपी/एमएलए कोर्ट ने शनिवार को आचार संहिता के उल्लंघन के मामले में आरोपित सांसद पप्पू यादव को कोर्ट ने बरी कर दिया है।

ज्ञातव्य है गि 1993 के विधानसभा चुनाव में पप्पू यादव अपने दलबल के साथ बिहार से यूपी में प्रचार करने आ रहे थे। तत्कालीन गाजीपुर के पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार ने पप्पू यादव सहित 125 लोगों के खिलाफ आचार संहित के उल्लंघन में मुकदमा दर्ज कराया था जिसमे सभी लोगों की गिरफ्तारी हुई। मामला कोर्ट में ट्रायल के दौरान निचली अदालत ने निचली अदालत ने 2024 में बरी कर दिया था जिसपर सरकार ने एमपी/एमएलए कोर्ट में फिर से याचिका दाखिल किया। आज शनिवार को कोर्ट ने पप्पू यादव को बरी कर दिया।

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वावधान में मिनी लोक अदालत का किया गया आयोजन

शकुन टाइम्स संवाददाता

मिर्जापुर। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वावधान में चुनार तहसील परिसर में मिनी लोक अदालत का आयोजन किया गया, जिसमें न्यायिक अधिकारियों ने वादकारियों की वादों का निस्तारण किया। इसमें आपसी समझौते के आधार पर जनपद न्यायाधीश अरविंद कुमार मिश्रा ।। द्वारा 34 वर्ष पुराने मुकदमों का निस्तारण भी कराया गया। इस दौरान वादकारियों की भारी भीड़ रही।

लोक अदालत का शुभारंभ जनपद न्यायाधीश अरविंद कुमार मिश्रा ।।, अपर जनपद न्यायतहसील विधिक सेवा समिति के सचिव तहसीलदार योगेंद्र शरणविकास अधिकारी विशाल कुमार, अपर मुख्य न्ययायिक मजिस्ट्रेट प्रथम पल्लवी सिंह, सिविल जज जूनियर डिविजन संघमित्रा, उप जिलाधिकारी चुनार राजेश कुमार वर्मा व क्षेत्राधिकारी मंजरी राव, तहसीलदार चुनार ने दीप प्रज्जवलित कर किया। लोक अदालत में एसीजेएम प्रथम न्यायालय के संदर्भित 30 तथा सिविल जज जूनियर डिविजन चुनार न्यायालय के संदर्भित 9 वाद सुलह समझौते के आधार पर निस्तारण के लिए न्यायायिक अधिकारियों ने आदेशित किया। चुनार क्षेत्र के खड़ेहरा भुइली में सुरेंद्र कुमार व हरिशंकर सिंह के बीचमार मिश्रा ।। द्वारा 34 वर्ष पुराने मुकदमों का निस्तारण भी कराया गया। इस दौरान वादकारियों की भारी भीड़ रही। लोक अदालत का शुभारंभ जनपद न्यायाधीश अरविंद कुमार मिश्रा ।।, अपर जनपद न्यायतहसील विधिक सेवा समिति के सचिव तहसीलदार योगेंद्र शरण शाह ने बताया कि राजस्व से संबंधित 60 वाद निस्तारित किए गए। जनपद न्यायधीन ने कहा कि आगामी मिनी लोक अदालत थाना स्तर पर लगाया जाएगा जिससे वादकारियों को आसानी से उनके ही थाना क्षेत्र में निस्तारण हो सकें। इस दौरान जिला विधिक प्राधिकरण के पीएलवी जय प्रकाश सरोज, चुनार के सदस्य गुप्तेश्वर उपाध्याय, राजेश अवस्थी, शशांक शेखर चतुर्वेदी, सत्येंद्र नाथ द्विवेदी, नरेंद्र उपाध्याय एवं बार एसोसिएशन के अध्यक्ष अनमोल सिंह उपस्थित रहें।

मंदिर निर्माण में शिवलिंग का हुआ स्थापना

शकुन टाइम्स संवाददाता

चहनियाँ/चंदौली। क्षेत्र के सेवढ़ी (हुदहुदीपुर) गांव में भव्य शिव मंदिर पर शिवलिंग का स्थापना किया गया। शनिवार को ग्राम प्रधान आशुतोष कुमार सिंह के नेतृत्व में हर हर महादेव के उद्घोष के साथ सैकड़ों श्रद्धालुओं संग बलुआ स्थित पश्चिम वाहिनीं मां भागीरथी गंगा तट पर पुजन अर्चन कर कलश में जलभरावन हुआ।

सेवढ़ी हुदहुदीपुर गांव में विगत कई महीनों दिपक सिंह व ग्रामीणों के सहयोग से भव्य शिव मंदिर का निर्माण होने के बाद विद्वान पंडितों द्वारा विधि विधान से शिवलिंग का स्थापना किया गया। सर्वप्रथम सैकड़ो की संख्या में ग्रामीण मंदिर से हर हर महादेव के उद्घोष के साथ बलुआ स्थित पश्चिम वाहिनीं गंगा तट पर घाट पर पहुंचकर ज्योतिषाचार्य पप्पू तिवारी द्वारा पूजन अर्चन के बाद कलश में जल भरकर विधि विधान से भगवान शिव का स्थापना हुआ ।

शिव स्थापना के पूर्व मन्दिर के पुजारी गोपाल दास जी 45 दिन तक मौन रहकर वस्त्र धारण नही किये । ग्राम प्रधान ने वस्त्र धारण कराकर मौन तोड़वाया।

प्रधान आशुतोष सिंह ने कहा कि तीन दिनों तक भजन कीर्तन पूजन के बाद भंडारे का आयोजन किया गया। इस दौरान गोपाल दास,राजन सिंह, जयप्रकाश सिंह,अमन सिंह,बबलू सिंह, कमला सिंह, जसवंत सिंह, सियाराम सिंह,राजू त्रिपाठी,जय सिंह,शंभु राय, बृजेश मौर्य, कमल सिंह,चंद्रभूषण सिंह, विकास सिंह,आनंद सिंह,बाबाऊ राम आदि उपस्थित रहे ।

जर्जर गोदाम की मरम्मत के लिए हुई नापी

गाजीपुर। स्थानीय तहसील से सटे भदौरा ब्लाक के बाल विकास परियोजना कार्यालय का जर्जर आवास और गोदाम की मरम्मत के लिए शनिवार को जेई ने भवन की नापी की। इस दौरान जेई दूधनाथ ने बताया कि बाल विकास परियोजना कार्यालय का गोदाम जर्जर हो चुका है। जर्जर भवन की नापी की जा रही है। नापी करके इसकी व्याख्या संबंधित अधिकारी को भेजी जाएगी। शासन से पैसा आवंटन होने पर काम किया जाएगा। भवन जर्जर हो चुका है एवं छत की सरिया दिखाई दे रही है। भवन और गोदाम इतना पुराना है की कभी भी बड़ी दुर्घटना हो सकता है। वहीं भवन में पुष्टाहार रखने में परेशानी हो रही है। वही आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों को बैठने की जगह ना होने की वजह से उन्हें ब्लॉक परिसर में लगे बरगद के पेड़ के नीचे बैठने को मजबूर होना पड़ता है।

सांसद एवं विधायक की गरिमामयी उपस्थिति में दी बार एसोसिएशन जखनियां के नव निर्वाचित पदाधिकारियों ने शपथग्रहण किया

शकुन टाइम्स संवाददाता

गाजीपुर। जनपद गाजीपुर अन्तर्गत तहसील जखनिया मे शुक्रवार को दी तहसील बार एसोसिएशन के नवनिर्वाचित पदाधिकारीयों को उप जिलाधिकारी रवीश कुमार गुप्ता ने शपथ दिलाई। शपथग्रहण से पूर्व कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सांसद अफजाल अंसारी, विधायक बेदी राम, उप जिलाधिकारी रवीश कुमार गुप्ता,ग्राम न्यायालय के न्यायाधीश जीशान मेहंदी, पूर्व विधायक त्रिवेणी राम को वरिष्ठ अधिवक्ता शिवपूजन चौहान व बृजेश पांडेय ने माल्यार्पण किया एवं अंगवस्त्र व बुके देकर स्वागत किया। इस मौके पर सांसद अफजाल अंसारी ने दी बार एसोसिएशन के पदाधिकारीयों को बधाई देते हुए कहा कि अधिवक्ता बहुत ही बुद्धिजीवी वर्ग होता है। ग्रामीणों के वादों को उच्च अधिकारियों और न्यायालय में भेज कर न्याय दिलाने का काम करता है। उन्होंने कहा इस शपथ ग्रहण में चारों स्तंभ के लोग मौजूद है। साथ में जनता जनार्दन भी है। मैं सबका दिलों के गहराइयों से बधाई देता हूं। साथ ही पूर्व विधायक त्रिवेणी राम द्वारा बनाए गए ।

अधिवक्ता हाल और हर नए साल पर लोगों को पेन डायरी देने पर उनके इस कार्य को बहुत सराहा और विश्वास दिलाया कि मैं भी कोशिश करूंगा कि अधिवक्ताओं के लिए जरूर कुछ करूंगा। विधायक बेदी राम ने लोगों को संबोधित करते हुए कहां की जखनिया विधानसभा में लगातार हर जगह पर विकास एक्सप्रेस दौडाई जा रही है। उन्होंने कहा कि पहली बार अल्पसंख्यक समुदाय से निर्वाचित अध्यक्ष चुने गए नेसार अहमद को और उनके अधिवक्ताओं को बधाई देता हूं। शपथ ग्रहण लेने वाले पदाधिकारियों मे श्री नेसार अहमद अध्यक्ष, महेश राम वरिष्ठ उपाध्यक्ष, रजनीकांत पांडे उपाध्यक्ष,अजय कुमार सिंह उपाध्यक्ष,उमेश चंद्र भारती कनिष्ठ उपाध्यक्ष, अखिलेश प्रसाद महामंत्री, अमित कुमार प्रशासनिक मंत्री,वीरेंद्रनाथ यति संयुक्त सचिव लाइब्रेरी, रूद्र पाल सिंह संयुक्त महामंत्री, कृपा शंकर राम कोषाध्यक्ष, वरिष्ठ सदस्यों में हरिनारायण सिंह, विनोद सिंह,सच्चिदानंद राय, दीपक सिंह, रामदुलार राम,रामअवध यादव सूर्यनाथ मिश्रा शामिल रहे। इस मौके पर वरिष्ठ अधिवक्ताओ में राम जी यति, राजेन्द्र प्रसाद यादव,अशोक कन्नौजिया, देवेश यादव, अमित यादव,विनोद सिंह, बादल कुमार, बहादुर यादव,विरेंद्र यादव, अवनीश यादव, शमीम अंसारी,व अन्य बरिष्ठ अधिवक्ताबंधू के साथ सपा विधानसभा अध्यक्ष अवधेश राजू यादव, ब्लॉक अध्यक्ष वजीर भारती, रामप्रवेश गोड़, पूर्व ब्लॉक अध्यक्ष गरीब राम, संतोष यादव शिक्षक सभा विधानसभा अध्यक्ष, विजय लाल यादव, पारस यादव, सर्वदलीय संघर्ष समिति के अध्यक्ष देवनारायण सिंह, सी.पी.एम. जिला सचिव विजय बहादुर सिंह, सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

दर्दनाक सड़क हादसा- नेपाल के तीर्थयात्रियों से भरी बस पलटी, एक की मौत; कई घायल

गाजीपुर। शहर कोतवाली क्षेत्र के क्षेत्र के मिरनापुर में नेपाल के तीर्थयात्रियों से भरी बस पलट गई है। हादसे में एक तीर्थयात्रियों की मौत होने की बात सामने आ रही है। वहीं, बड़ी संख्या में तीर्थयात्री घायल हुए हैं। राहत बचाव का क्रम जारी है।

काठमांडू नेपाल से 40 सीटर बस पर सवार होकर 14 फरवरी को तीर्थयात्री प्रयागराज महाकुंभ में स्नान करने के लिए निकले है। सभी आज वाराणसी पहुंचते और वहां दिनभर समय गुजराने के बाद प्रयागराज के लिए जाते। जहां महाकुंभ में स्नान करने के बाद वापस नेपाल जाते। लेकिन गाजीपुर में सुबह नौ बजे तीर्थयात्रियों की बस अनियंत्रित होकर मिरशादपुर में पलट गई।

घटना की जानकारी होते ही पुलिस और आसापास के लोग पहुंच गए हैं। राहत बचाव का क्रम जारी है। घायलों को बस से निकालकर मेडिकल कालेज अस्पताल पहुंचाया जा रहा है। मौके पर जुटे प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक हादसे में नेपाल के निवासी एक तीर्थयात्रियों की मौत होने की बात सामने आ रही है।

कागजों पर चल रहा है स्वच्छ भारत अभियान, नारायनपुर ब्लॉक में सामुदायिक शौचालय में लगा गंदगी अंबार

शकुन टाइम्स संवाददाता

चुनार/मिर्जापुर। जहां एक तरफ केंद्र की मोदी व राज्य की योगी सरकार स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत लाखों करोड़ों रुपए खर्च करके सामुदायिक शौचालयों का निर्माण करवा रही है ।लेकिन जमीनी हकीकत कुछ और ही है, सफाईकर्मी की लापरवाही और सुस्त रवैशौचालय में गंदगी का अंबार लगा हुआ है। उसमें भी पानी नहीं आ रहा है और गंदगी फैली हुई है। लेकिन परिसर में बने शौचालय की गंदगी के बारे में जिम्मेदार अधिकारी बेखबर हैं। नारायनपुर विकासखण्ड के अंतर्गत 7 दर्जन से अधिक गांव आती हैं। उत रवैशौचालय में गंदगी का अंबार लगा हुआ है। उसमें भी पानी नहीं आ रहा है और गंदगी फैली हुई है। लेकिन परिसर में बने शौचालय की गंदगी के बारे में जिम्मेदार अधिकारी बेखबर हैं। नारायनपुर विकासखण्ड के अंतर्गत 7 दर्जन से अधिक गांव आती हैं। उन सभी ग्राम पंचायतों से दर्जनों लोग प्रतिदिन ब्लॉक परिसर किसी न किसी कार्य से आते हैं। ब्लॉक में शौचालय न होने से लोगों को दिक्कतें हो रही थीं। लोगों की इस समस्या को देखकर शौचालय का निर्माण कराया गया ।लेकिन वर्तमान में शौचालय निष्प्रयोज्य पड़ा है। गंदगी के कारण कोई भी अंदर जाने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा। सब कुछ जानते हुए भी जिम्मेदार मौन हैं। ब्लॉक में सफाई कर्मचारियों द्वारा कभी भी संयुक्त शौचालय की साफ सफाई नहीं की जाती है। नारायनपुर ब्लाक में तैनात अधिकांश सफाई कर्मचारी अपने मूल कार्यों से हटकर अधिकारियों की गणेश परिक्रमा करने में लगे हैं।

जिला मानसिक स्वास्थ्य प्रकोष्ठ द्वारा मेंटल हेल्थ एवं स्ट्रेस मैनेजमेंट के बारे में दी गई जानकारी

शकुन टाइम्स संवाददाता

चंदौली/सैदूपुर। राजकीय हाई स्कूल गरला में जिला मानसिक स्वास्थ्य प्रकोष्ठ चंदौली द्वारा मेंटल हेल्थ एवं स्ट्रेस मैनेजमेंट के बारे में जानकारी दी गई। मनोचिकित्सक डॉ नीतेश सिंह ने छात्र छात्राओं के उत्तम स्वास्थ्य, डब्ल्यू एच ओ द्वारा निर्दिष्ट स्वस्थ व्यक्ति की परिभाषा , मनोविकारों के प्रकार , पहचान तथा उससे बचने एवं दूर करने के उपायों के बारे जानकारी दिया।

डॉ अजय कुमार एवं डॉ अवधेश कुमार ने सभी बच्चों को परीक्षा के समय उत्पन्न होने वाले विकारों के बारे में बताते हुए उनके मैनेजमेंट की बात की । छात्र छात्राओं के बीच प्रश्न प्रहर भी रखा गया जिसके माध्यम से प्रतियोगिता कराते हुए छात्र छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। राजकीय हाई स्कूल गरला की प्रधानाचार्या श्रीमती विद्योतमा श्रीवास्तव ने अपने उद्बोधन में कहा कि छात्र छात्राओं के लिए यह कार्यक्रम विशेष लाभप्रद होगा। छात्र छात्राओं में बढ़ते मानसिक तनाव को दूर करने की कोशिश लगातार सरकार द्वारा की जा रही है जो एक उत्तम प्रयास है। हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी है कि शिक्षा के साथ साथ बच्चो के अंदर नैतिक मूल्यों का समावेश कर उनके

अन्दर संस्कार भरें तथा उन्हें शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के प्रति भी क्रियाशील व जागृत करना है। कार्यक्रम में विद्यालय के समस्त शिक्षकगण एवं छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

बच्चों मे स्वेटर का हुआ बितरण

चकिया/चन्दौली। राष्ट्रीय ग्रामीण साक्षरता अभियान नई दिल्ली भारत सरकार के अंतर्गत चौहान एकता फाऊंडेशन के माध्यम से प्राथमिक विद्यालय अमरा उत्तरी विद्यालय पर बच्चों में स्वेटर वितरण किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कैलाश आचार्य ने बच्चों को स्वेटर देते हुए कहा की निश्चित ही इन संसाधनों से आप सभी बच्चों को ऊर्जा मिलेगी, बल मिलेगा और आपका पठन बेहतर होगा वहीं शिक्षक संघ के अध्यक्ष अजय गुप्ता ने कहा की चौहान एकता फाऊंडेशन द्वारा बच्चों में ड्रेस बैग स्वेटर का वितरण एक पुनीत कार्य है।

नाम में परिवर्तन करना मौलिक अधिकार नहीं: उच्च न्यायालय

शकुन टाइम्स संवाददाता

प्रयागराज। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने एक महत्वपूर्ण निर्णय में कहा है कि अपने नाम में परिवर्तन करना व्यक्ति का मौलिक अधिकार नहीं है। यह नियमों के अधीन है जो केंद्र तथा राज्य सरकार की नीतियों के अनुसार संचालित होगा।

याची द्वारा अपना नाम शाहनवाज से बदल कर मो समीर राव करने की मांग के मामले में उत्तर प्रदेश सरकार की विशेष अपील पर सुनवाई करते हुए मुख्य न्यायमूर्ति अरुण भंसाली और न्यायमूर्ति क्षितिज शैलेंद्र की खंडपीठ ने इस निर्णय के साथ एकल पीठ द्वारा नाम परिवर्तन करने को मौलिक अधिकार करार देने वाले निर्णय को रद्द कर दिया है। एकल पीठ ने 25 मई 2023 के आदेश से यूपी बोर्ड के क्षेत्रीय निदेशक के उसे आदेश को रद्द कर दिया था जिसमें उन्होंने याची शाहनवाज का नाम परिवर्तित करने का प्रार्थना पत्र रद्द कर दिया था। यूपी बोर्ड का कहना था कि नियमानुसार नाम परिवर्तन के लिए आवेदन तीन साल के भीतर ही किया जाना चाहिए । एकल पीठ ने यूपी बोर्ड के इस नियम को मनमाना और असंवैधानिक करार देते हुए कहा कि अपनी पसंद का नाम रखना व्यक्ति का अनुच्छेद 21 व 19 में मौलिक अधिकार है। यूपी बोर्ड के नियम इन मूल अधिकारों से सुसंगत नहीं है, इसलिए यह संवैधानिक प्रावधानों के विपरीत है। एकल पीठ में याची शाहनवाज का नाम बदलकर मोहम्मद समीर राव करने और उसके हाई स्कूल व इंटरमीडिएट सहित अन्य सभी प्रमाण पत्रों ड्राइविंग लाइसेंस, पासपोर्ट, आधार कार्ड आदि पर नया नाम अंकित करने का निर्देश दिया था।

प्रदेश सरकार की ओर से इस आदेश को विशेष अपील दाखिल कर चुनौती दी गई थी। राज्य सरकार के अपर मुख्य स्थाई अधिवक्ता रामानंद पांडेय ने कई दलीलें दीं। उनका कहना था की मौलिक अधिकार निर्बाध नहीं है तथा इन पर कुछ सुसंगत प्रतिबंध भी हैं। उन्होंने कहा कि नाम का परिवर्तन करना यूपी बोर्ड के 1921 एक्ट के अध्याय 12 द्वारा नियमित व संचालित होता है। इसलिए नाम में परिवर्तन 7 साल के बाद स्वीकार नहीं किया जा सकता है। इसका प्रावधान रेगुलेशन 7 के चैप्टर 3 में दिया गया है। रामानंद पांडे ने कहा कि एकल न्याय पीठ ने अपने न्यायिक पुनर्विलोकन के अधिकार की सीमा से बाहर जाकर के आदेश दिया है ।

नाम में परिवर्तन करने के नियम बनाना सरकार का नीतिगत मामला है। उन्होंने यह भी दलील दी कि ऐसे सभी मामले जिनमें केंद्र या राज्य विधान के कानून को चुनौती दी गई हो उस पर खंडपीठ में ही सुनवाई हो सकती है । एकल न्याय पीठ को इस पर सुनवाई का अधिकार नहीं है । इस संबंध में एक अगस्त 2016 को मुख्य न्यायाधीश द्वारा कार्यालय आदेश पारित किया गया है।

हरा चारा की बुआई के लिए दस बिस्वा जमीन की हुई मापी

शकुन टाइम्स संवाददाता

मुफ्तीगंज /जौनपुर। स्थानीय ब्लाक के विझवार सागर में संचालित गोशाला में रहने वाले गोवंशो के लिए हरा चारा की बुआई के लिए शनिवार को अपराह्न तहसीलदार महेंद्र कुमार सिंह कानूनगो हनुमंत तिवारी बी डी ओ अस्मिता सेन सहित पहुंची राजस्व टीम ने गोशाला के पास ही ग्राम सभा की दस बिस्वा जमीन की मापी कर हरा चारा की बुआई के लिए आवंटित कर दिया गोशाला में रह रहे गो वंशों का स्वास्थ्य परीक्षण कर गोवंशो को गुण और केला खिलाया गया इस अवसर पर बी डी ओ ने ग्राम प्रधान सचिव व पशुपालक को निर्देशित करते हुए कहा की उक्त आवंटित जमीन जल्द से जल्द नेपियर घास की बुआई कर अवगत कराए। पूछे जाने पर बी डी ओ अस्मिता सेन ने बताया की अभी सिर्फ तीन बिस्वा जमीन में ही हरे चारे की बुआई होती थी जो गोवंशो के लिए कम पड़ती थी। इसलिए हरा चारे के लिए दस बिस्वा और जमीन की व्यवस्था की गई है। और स्वास्थ परीक्षण में गोशाला में रह रहे सभी गोवंश स्वस्थ मिले।

संक्षिप्त सामाचार

शादी का झांसा देकर युवक करता रहा हैवानियत, फिर मुकरा

लखनऊ। रायबरेली से नौकरी की तलाश में लखनऊ आयी युवती से राहुल खरे ने दोस्ती की। बहाने से फ्लैट पर बुलाकर आरोपी ने नशीली कोल्ड ड्रिंक पिलाकर दुष्कर्म किया और अश्लील वीडियो बना लिया। फिर वीडियो वॉयरल करने के एवज में यौन शोषण करता रहा। शिकायत की बात कहने पर आरोपी ने शादी का झांसा दिया लेकिन तीन दिन पहले ही मुकर गया। पीड़िता ने गुडंबा थाने में रिपोर्ट दर्ज करायी है। मूल रूप से रायबरेली लालगंज निवासी युवती वर्तमान में आशियाना इलाके में रह रही है। पीड़िता ने बताया कि कुछ समय पहले नौकरी खोजने के दौरान उसकी मुलाकात गुडंबा के टेढ़ी पुलिया आदिलनगर निवासी राहुल खरे से हुई थी। दोनों के बीच बातचीत होने लगी। आरोप है कि राहुल ने उसे धोखे से अपने फ्लैट पर बुलाया और कोल्ड ड्रिंक में नशीला पदार्थ पिलाकर उसके साथ दुष्कर्म किया। इस दौरान आरोपी ने पीड़िता की अश्लील वीडियो भी बना ली। होश में आने पर पीड़िता ने विरोध किया तो आरोपी ने वीडियो दिखाकर चुप करा दिया। इसके बाद आरोपी राहुल ने वीडियो वॉयरल करने के धमकी देकर ब्लैकमेल करते हुए यौन शोषण किया। कुछ दिनों तक युवती आरोपी राहुल की प्रताड़ना झेलती रही। पीड़िता ने पुलिस शिकायत की बात कही तो आरोपी ने शादी का झांसा देकर चुप करा दिया। आरोप है कि 11 फरवरी को राहुल ने शादी करने से मना कर दिया। इतना नहीं आरोपी ने युवती का नंबर भी ब्लॉक कर दिया। इंस्पेक्टर गुडंबा प्रभातेश कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि जल्द ही पीड़िता का मजिस्ट्रेट के सामने बयान दर्ज कराया जाएगा। उसके बाद ही आगे की कार्रवाई की जाएगी।

नौकरी का झांसा देकर एक लाख 70 हजार

लखनऊ। सिंचाई विभाग में चतुर्थ श्रेणी कर्मी के पद पर नौकरी लगवाने का झांसा देकर युवक से एक लाख 70 हजार की धोखाधड़ी की गई। पीड़ित ने पारा कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराया है। मानकनगर तेजीखेड़ा निवासी अलखराम की पहचान अकबर खान से थी। नौकरी की तलाश कर रहे अलखराम से आरोपित ने बताया कि सिंचाई विभाग में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी पद पर भर्तियां निकली हैं। आरोपित ने एक लाख 70 हजार रुपये लिए। इसके बाद भी नौकरी नहीं लगी। तकादा करने पर आरोपित ने चेक दिए थे। जो बाउंस हो गए। अकबर खान की टाल मटोल से परेशान होकर पीड़ित ने पारा कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराया है।

पुलिस विभाग में इन खाली पड़े पदों पर होगी भर्ती

लखनऊ। पुलिस विभाग के कई यूनिटों में खाली पदों पर वैकल्पिक व्यवस्था के रुप में अस्थायी तैनाती की गयी है। यह तैनाती तब तक रहेगी,जब तक शासन किसी अधिकारी को स्थायी रुप से नियुक्ति नहीं कर देता। जानकारी के अनुसार पुलिस फायर विभाग में डीजी अविनाश चन्द्रा के सेवानिवृत्त हो जाने के बाद उनका काम उसी विभाग मे तैनात एडीजी एन.पद्मजा चौहान देख रही हैं। इसी तरह नियम एवं ग्रन्थ में तैनात एडीजी भजनीराम मीणा के रिटायर होने के बाद वहीं तैनात डीजी आशीष गुप्ता को कार्यभार देखने के लिए कहा गया है। इसी तरह लोक शिकायत के एसपी शशीकांत के सेवानिवृत्त होने पर उनका कार्य अपर पुलिस अधीक्षक दिनेश द्विवेदी को सौंपा गया है।

भारी पुलिस बल के साथ थाना क्षेत्र के अंदर

शकुन टाइम्स संवाददाता

हापुड़। हापुड़ एसपी कुंवर ज्ञानंजय सिंह के निर्देशन में जनपद में अपराध नियंत्रण शांति एवं कानून व्यवस्था बनाए रखने के उद्देश्य से क्षेत्राधिकार व थाना प्रभारियों द्वारा मय पुलिस बल अपने-अपने थाना क्षेत्र के महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों बाजार मार्ग इत्यादि में पैदल गस्त की, तो वहीं अगर बात की जाए गढ़मुक्तेश्वर की तो रात्रिकी कानून व्यवस्था को लेकर गढ़मुक्तेश्वर सीओ श्रीमती स्तुति सिंह व गढ़ कोतवाली इंस्पेक्टर नीरज कुमार भारी पुलिस बल के साथ थाना क्षेत्र के अंदर पैदल गस्त करते हुए आए नजर बता दें कि कानूनी व्यवस्था को लेकर लगातार गढ़ पुलिस प्रशासन अलर्ट है तो वही कानून व्यवस्था के प्रति रात्रि में किया गया पैदा गस्त।

जनपद की तीनों तहसीलों में हापुड़ डीएम के नेतृत्व में संपूर्ण समाधान दिवस सम्पन्न

जनपद की तीनो तहसीलो में प्राप्त हुई 93 शिकायतें, 10 का मौके पर कराया गया निस्तारण

शकुन टाइम्स संवाददाता

हापुड़। शनिवार को गढ़मुक्तेश्वर तहसील में डीएम श्रीमती प्रेरणा शर्मा की अध्यक्षता में शनिवार को संपूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया। इस दौरान तहसील दिवस में कुल 41 शिकायतें प्राप्त हुई जिनमें से 02 का मौके पर अधिकारियों द्वारा निस्तारण कराया गया। उन्होंने संपूर्ण समाधान दिवस में उपस्थित जनपदीय सभी अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि माननीय मुख्यमंत्री के निर्देशानुसार एवं मंशानुरूप तहसील दिवस में प्राप्त शिकायत का समाधान पूर्ण गुणवत्ता से किया जाना चाहिए एवं सरकार द्वारा संचालित योजनाओं का लाभ प्रत्येक पात्र लाभार्थी को मिलना चाहिए। डीएम ने तहसील दिवस में उपस्थित सभी अधिकारियों को निर्देश दिए की जो भी शिकायतें प्राप्त हो रहे हैं उनका निस्तारण समय सीमा के अंदर करना सुनिश्चित करें, जिन शिकायतों में जांच के उपरांत करवाई की जानी है उसमें अधिकारी स्वयं मौके पर जाकर निरीक्षण करने के उपरांत ही शिकायत का निस्तारण करेंगे। इस मौके पर पुलिस अधीक्षक कुंवर ज्ञानंजय सिंह, उपजिलाधिकारी गढ़मुक्तेश्वर, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ0 सुनील त्यागी, तहसीलदार गढ़मुक्तेश्वर, पुलिस क्षेत्र अधिकारी सहित अन्य अधिकारी/ कर्मचारीगण उपस्थित रहे। इसके साथ ही हापुड़ तहसील में

जनपद की तीनो तहसीलों में प्राप्त हुई 93 शिकायतें, 10 का मौके पर कर

मुख्य विकास अधिकारी हिमांशु गौतम की अध्यक्षता में तहसील दिवस सम्पन्न हुआ जहां पर 17 शिकायतें प्राप्त हुई और मौके पर 03 का निस्तारण मुख्य विकास अधिकारी द्वारा कराया गया।

इसी क्रम में धौलाना तहसील की अध्यक्षता करते हुए अपर जिलाधिकारी संदीप कुमार ने संपूर्ण समाधान दिवस में आई शिकायतों को सुना।

सम्पन्न हुए धौलाना तहसील दिवस में 35 शिकायतें प्राप्त हुई और मौके पर 05 का निस्तारण किया गया।

खेल से व्यक्तित्व और भविष्य का होता है निर्माण: मंत्री गिरीशचंद्र यादव

एस. पी. इंटरनेशनल स्कूल में वार्षिक उत्सव उड़ान का भव्य आयोजन

शकुन टाइम्स संवाददाता

केराकत /जौनपुर। शिक्षा और संस्कृति के संगम का प्रतीक एस. पी. इंटरनेशनल स्कूल, सरकी में इस वर्ष भी वार्षिक उत्सव उड़ान – द गोल्डन विंग्स ऑफ सक्सेस का शुभारंभ कर देर रात तक भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर शिक्षा, राजनीति और उद्योग जगत की कई नामचीन हस्तियां उपस्थित रहीं। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश सरकार के युवा एवं खेल विभाग के स्वतंत्र प्रभार राज्य मंत्री श्री गिरीश चंद्र यादव ने अपने संबोधन में कहा कि खेल सिर्फ मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि यह जीवन में अनुशासन, आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता विकसित करने का सबसे सशक्त माध्यम है। शिक्षा के साथ-साथ खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले युवाओं के लिए रोजगार और करियर के नए अवसर खुलते हैं। उन्होंने कहा कि एक स्वस्थ शरीर में ही एक स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है, और खेल इसमें अहम भूमिका निभाते हैं। प्रतिस्पर्धात्मक दौर में सफल होने के लिए शारीरिक और मानसिक मजबूती आवश्यक है। जिसे खेलों के माध्यम से विकसित किया जा सकता है। सरकार भी खेलों को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाओं के माध्यम से खिलाड़ियों को हरसंभव सहयोग प्रदान कर रही है।

छात्रों की प्रस्तुतियों ने मोहा मन

वार्षिक उत्सव उड़ान में विद्यार्थियों द्वारा नृत्य, नाटक, संगीत और अन्य सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने दर्शकों का मन मोह लिया। विद्यालय के चेयरमैन डॉ. एस. पी. यादव ने कार्यक्रम को लेकर उत्साह जताते हुए कहा कि उड़ान केवल एक वार्षिक उत्सव नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के सपनों को पंख देने का संकल्प है। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि उद्योगपति राम प्रसाद गुड्डू यादव चेयरमैन धर्मा इंजीनियरिंग ग्रुप, गुजरात, अतुल कुमार सिंह बब्लू, जयप्रकाश सिंह उर्फ डब्ल्यू, वरिष्ठ भाजपा नेता वीरेंद्र प्रताप सिंह सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम में रामकृपाल यादव, कमलकांत यादव, अर्पित यादव ने सभी सम्मानित अतिथियों, अभिभावकों और स्थानीय नागरिकों का आभार व्यक्त किया। इस मौके पर उमाकांत सिंह, रमेश सिंह, गोविंद सिंह, बेचू सिंह, लिम्बू, रामपाल, संतोष सिंह, प्रेमप्रकाश यादव, राजेश यादव सहित आदि गणमान्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन शैलजा स्थाना व सरन ने किया ।

बीए बीएससी के छात्रों को वितरण किया गया स्मार्ट फोन

शकुन टाइम्स संवाददाता

मुफ्तीगंज /जौनपुर। स्थानीय क्षेत्र के शुभ कान्हा जी संस्थान खड़हर डगरा मुर्तजाबाद मुफ्ती गंज जौनपुर में शनिवार को प्रबंधक डॉ पूनम यादव की अध्यक्षता में बीए बीएससी के कई दर्जन छात्रों को स्मार्ट फोन वितरण किया गया । इस अवसर पर रेखा यादव, सीमा सिंह, सीमा भारती, सुषमा यादव, दीपाली सिंह, अभिषेक मिश्रा, सतीश यादव, पवन यादव , देवेश, मन्नू यादव, पंकज आदि लोगो की उपस्थिति रही।

2047 तक यूपी की सत्ता में नहीं आयेगा मुलायम की सल्तनत का वारिस : केशव प्रसाद मौर्य

शकुन टाइम्स संवाददाता

इटावा। उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने समाजवादी पार्टी पर बड़ा हमला करते हुए दावा किया है कि 2047 तक उत्तर प्रदेश की सत्ता पर मुलायम सिंह यादव की सल्तनत का कोई वारिस सत्ता में नहीं आयेगा।

इटावा में केंद्रीय बजट 2025 पर चर्चा कार्यक्रम में शामिल होने आए उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने शनिवार को पत्रकारों से बात करते हुए कहा है कि सपा प्रमुख प्रमुख अखिलेश यादव को भाजपा का फोबिया हो गया है वो 2027 में सत्ता में आने का सपना देख रहे है लेकिन मैं दावे से कह सकता हूं कि 2047 तक मुलायम सिंह यादव की सल्तनत का कोई भी व्यक्ति उत्तर प्रदेश का मुख्यमंत्री नहीं बन सकता। श्री मौर्य ने कहा कि सपा प्रमुख अखिलेश यादव को दृष्टि दोष है, मानसिक दोष है उससे छुटकारा पाने के लिए किसी अच्छे डॉक्टर से दवा ले ले। उन्होंने कहा कि केंद्रीय बजट को लेकर कहा कि विपक्ष ने बजट को पढ़ा नहीं समझा नहीं है इसलिए अनर्गल प्रलाप कर रहे है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में शानदार कुंभ चल रहा है, एक दुर्घटना हो गई जिसको लेकर अखिलेश यादव कल्पना कर रहे थे कि दुर्घटना हो जाए और उनको मुद्दा मिल जाए। अखिलेश यादव कुंभ को लेकर रोज ऐसा बयान दे रहे हैं जिससे माहौल बिगड़ जाए। अखिलेश यादव को सत्ता में न होने की बेचैनी है। कुंभ की दुर्घटना को लेकर श्री मौर्य ने कहा कि जहां 500 लोगों की जगह होती है वहां 5000 लोग आ जाए तो असुविधा होती है उसका हमे खेद है। लोगो को काफी कठिनाई हुई, लोगो को पैदल चलना पड़ा उसके बाद भी कुंभ जाने वालो का तांता लगा हुआ है। कुंभ से लगभग 03 लाख करोड़ का अर्थव्यवस्था में उछाल आया है। उन्होंने कहा कि मुसलमानों को उनका हक नहीं मिल रहा , वक्फ बोर्ड के नाम पर कुछ लोगों का कब्जा है।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में संपूर्ण समाधान दिवस का हुआ आयोजन

92 शिकायती प्रार्थना पत्रों में 16 का मौके पर किया गया निस्तारण

शकुन टाइम्स संवाददाता

जौनपुर। जिलाधिकारी डा0 दिनेश चन्द्र की अध्यक्षता में तहसील बदलापुर के सभागार में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जिलाधिकारी के द्वारा शिकायतों को गम्भीरतापूर्वक सुनते हुए निर्देशित किया कि सम्बन्धित अधिकारीगण मौके पर जाकर शिकायतों का गुणवत्तापुण निस्तारण करें। जिलाधिकारी ने सभी को निर्देशित किया कि शिकायतकर्ताओं की शिकायतों को प्राथमिकता पर निस्तारित करें। जिलाधिकारी के द्वारा उपजिलाधिकारी के नवीन चैम्बर का उद्घाटन किया गया जिसमें उनके द्वारा जनसुनवाई की जाएगी, जिससे आमजनमानस की शिकायतों को सुनते हुए त्वरित निस्तारण कराया जा सकेगा। इस दौरान कुल 92 शिकायते प्राप्त हुयी जिसमें से 16 का मौके पर ही निस्तारण कर दिया गया। इस अवसर पर उप जिलाधिकारी योगिता सिंह, क्षेत्राधिकारी सहित अन्य जिलास्तरीय अधिकारीगण उपस्थित रहे।

चोरों ने दी पुलिस को रात्रि में किसान के गन्ने चोरी कर चुनौती

हापुड़। थाना बाबूगढ़ क्षेत्र के गांव बिगास का है जहां एक किसान के खेत से चोरों ने गन्ने चोरी कर लिए, तो वही चोरी कर ले जाते हुए सीसीटीवी कैमरे में हुआ चोरों का खेल कैद, अब बड़ी बात यह है कि जहां पर पुलिस रात्रि में पैदल गस्त करती है और कर अपने हाथ की सफाई दिखने में पीछे नहीं हैं, तो खुली पुलिस प्रशासन की व्यवस्था की पोल, तो वहीं पीड़ित किसान ने दी थाने में तहरीर, अब देखना यह होगा की कितनी जल्द पुलिस पड़ती है ऐसे चोरों को जो किसानों के गन्ने चोरी करने में दी चोरी को अंजाम।

महाकुंभ के बीच अयोध्या में श्री राम मंदिर के दर्शन को आने वाले भक्तों की संख्या में बड़ा इजाफा

शकुन टाइम्स संवाददाता

अयोध्या। प्रयागराज में महाकुम्भ का स्नान करने के बाद श्रद्धालु नंगे पांव पन्द्रह किलोमीटर पैदल चलकर श्रीरामजन्मभूमि पर दिव्य और भव्य मंदिर में विराजमान रामलला का दर्शन कर रहे हैं। यह भीड़ महाशिवरात्रि तक जारी रहने का अनुमान है।

अयोध्या के मण्डलायुक्त गौरव दयाल और आईजी प्रवीण कुमार महाकुम्भ के दौरान लाखों की संख्या में श्रीराम मंदिर दर्शन हेतु अयोध्या पहुंच रहे श्रद्धालुओं को सुगम श्रीराम मंदिर दर्शन सुनिश्चित कराने हेतु सतत रूप से इसकी व्यवस्था कर रहे हैं जिससे आसानी से श्रद्धालुओं को रामलला का दर्शन हो सके। श्रद्धालुओं को करीब पन्द्रह किलोमीटर नंगे पांव पैदल चलकर मंदिर में रामलला का दर्शन सुगमता पूर्वक मिल रहा है। अयोध्या धाम में रामलला व प्रसिद्ध हनुमानगढ़ी मंदिर में हनुमत लला के दरबार में पहुंचने के लिये श्रद्धालुओं को लाइन लगा करके दर्शन प्राप्त हो रहा है। श्रद्धालुओं को प्रयागराज से अयोध्या पहुंचने में कई दुश्वारियों का सामना करना पड़ रहा है। इसके लिये मार्गो पर होर्डिंग भी लगाया गया है। डायवर्जन के चलते प्रयागराज से अयोध्या तक पांच घंटे का सफर चौबीस घंटे या छत्तीस घंटे में पूरा हो रहा है। वहीं अयोध्या आ रहे श्रद्धालुओं में आस्था का चरम इस कदर है कि वह पन्द्रह–बीस किलोमीटर तक पैदल चलकर रामलला व हनुमत लला के दर्शन कर रहे हैं। श्रीरामजन्मभूमि पर विराजमान रामलला के दर्शन के लिये लम्बी लाइनें श्रद्धालुओं की देखी जा सकती हैं। मण्डलायुक्त गौरव दयाल व आईजी प्रवीण कुमार ने महाकुंभ से आये लाखों की संख्या में राम मंदिर का दर्शन सुगम रूप से वहां रुक करके करा रहे हैं। राम मंदिर के गर्भगृह में उपस्थित रहकर आने वाले सभी श्रद्धालुओं को श्रीराम भगवान के दर्शन प्राप्त हों इसके लिये जिला प्रशासन सुनिश्चित करा रहा है। इस दौरान अधिकारी तथा सुरक्षा एवं भीड़ नियंत्रण हेतु तैनात मजिस्ट्रेट व पुलिस अधिकारियों को लगाया गया है। बताया जा रहा है कि हजारों किलोमीटर दूर से आ रहे श्रद्धालुओं की हर संभव मदद की जाय और उनको गंतव्य तक पहुंचाने की व्यवस्थाओं की जानकारी भी दी जाय। महाकुंभ से लौट रहे श्रद्धालुओं की सुविधा के दृष्टिगत अयोध्या आने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा के लिये जिला प्रशासन निरन्तर प्रयासरत है। श्रद्धालुओं के लिये जिला प्रशासन अयोध्या द्वारा बेहतर सुविधायें उपलब्ध करायी जा रही हैं।

सम्पादकीय

क्या अब विपक्षी एकता कायम रहेगी

राजनीति में कब क्या हो जाए, कुछ भी नहीं कहा जा सकता। इसलिए ही तो राजनीति को अनिश्चितता का खेल कहा जा सकता है। लेकिन ज़ब राजनेता और राजनीतिक दल इस धारणा को तिलांजलि देते दिखाई देते हैं, तो उस अवस्था को अति आत्म विश्वास के भाव में व्यक्त किया जाता है। अति आत्मविश्वास का होना सदैव विनाशकारी और आत्म घातक माना जाता है। ऐसा ही दुखद अध्याय दिल्ली विधानसभा के चुनाव में स्पष्ट रूप से दिखाई दिया। इस चुनाव में आम आदमी पार्टी के नेताओं का व्यवहार निश्चित ही ऐसा होता जा रहा था, जो अति विश्वास को ही परिलक्षित करने वाला ही था। हालांकि किसी किसी भी चुनाव के दो पहलू होते हैं। किसी भी चुनाव क्षेत्र में केवल एक ही व्यक्ति विजय प्राप्त करता है, शेष सभी पराजित ही होते हैं। पराजय निश्चित रूप से गलती सुधारने का अवसर प्रदान करती है। आम आदमी पार्टी इस पराजय को अपनी भूल सुधार के लिए स्वीकार करेगी, यह होना चाहिए, लेकिन आम आदमी पार्टी के नेता ऐसा करने की मानसिकता में दिखाई नहीं देते। इसका कारण यही है कि उनमें राजनीतिक दल की सरकार को चलाने का अनुभव नहीं है। आम आदमी पार्टी के नेताओं का अभी भी यह मानना है कि उनकी पार्टी मात्र दो प्रतिशत के अंतर से हारी है, लेकिन उनको पता होना चाहिए कि एक प्रतिशत का अंतर भी राजनीति का दृश्य बदल सकता है। इसलिए यही कहा जा सकता है कि हार तो हार होती है, उसके तर्क का सहारा लेकर मन को दिलासा दी जा सकती है, जीत नहीं मानी जा सकती। वैसे विपक्ष को इसकी आदत सी हो गई है कि वह हार को आसानी से स्वीकार नहीं कर पाता। पिछले लोकसभा के चुनाव परिणाम आने के बाद भी ऐसी ही तस्वीर दिखाने का प्रयास किया गया कि विपक्ष ने मानो सरकार बनाने लायक़ जीत हासिल कर ली हो, लेकिन तस्वीर का असली चेहरा कुछ और ही था। वर्तमान राजनीतिक उतार चढ़ाव का अध्ययन किया जाए तो यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि कांग्रेस सहित अन्य विपक्षी राजनीतिक दल सत्ता में आने के लिए एक होने की क़वायद कर चुके हैं, लेकिन यह क़वायद परवान नहीं प्राप्त कर सकी।

लोकसभा चुनाव के समय इंडी गठबंधन बनाकर तमाम भाजपा विरोधी दलों ने कई राज्यों में एकता का दिखावा किया। लेकिन कई राज्यों के विधानसभा चुनाव के समय इंडी गठबंधन के दल एक साथ न होकर बिखरे हुए दिखाई दिए। अब आगे चलकर एकता के प्रयास किए तो जाएंगे, लेकिन वे एक साथ हो जाएंगे, इस बात की संभावना बहुत कम दिखाई देती है। सीधे अर्थों में कहा जाए तो विपक्षी एकता को कई बार झटके लग चुके हैं। दिल्ली विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी की हार विपक्ष की एकता के लिए एक और बड़ा झटका माना जा रहा है। कांग्रेस ने जिस प्रकार से आम आदमी पार्टी को सत्ता से बाहर करने का सुनियोजित षड्यंत्र किया, वह चुनाव परिणाम आने के बाद पूरी तरह से सामने आ गया। ऐसी स्थिति में अब कांग्रेस और आम आदमी पार्टी एक मंच पर आएंगे, इस बात की संभावना बहुत कम ही है। हालांकि कांग्रेस की ओर अपनाई गई यह रणनीति कोई नई बात नहीं है। कई दलों को ऐसा झटका मिल चुका है, स्वयं आम आदमी पार्टी ने हरियाणा में ऐसा ही राजनीतिक खेल खेलकर कांग्रेस को सत्ता में आने से रोक दिया था। जहां तक विपक्षी एकता की बात है तो इसकी जड़ों में मट्ठा डालने का काम खुद इंडी गठबंधन या भाजपा विरोधी राजनीतिक दलों ने किया है। कई राज्यों में एक दूसरे के विरोध में ताल ठोकने वाले यह दिखावे की एकता वाले राजनीतिक दल आगे भी ऐसी ही नीति का अनुसरण करेंगे, इस बात की गुंजाईश ज्यादा दिखाई देती है। क्योंकि गठबंधन में शामिल होने का दावा करने वाले राजनीतिक दल किसी भी दल से पीछे रहने की मानसिकता में दिखाई नहीं देते। कांग्रेस भी इसी मानसिकता से ग्रसित दिखाई देती है। राज्यों तक प्रभाव रखने वाले क्षेत्रीय राजनीतिक दल कांग्रेस को बेहद कमजोर मानकर व्यवहार कर रहे हैं। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कई बार कांग्रेस को आईना दिखाते हुए व्यवहार किया है। ऐसी स्थिति में पश्चिम बंगाल में कांग्रेस और ममता बनर्जी की पार्टी एक साथ आकर पश्चिम बंगाल का विधानसभा चुनाव लड़ेंगे, दूर की बात दिखती है। दिल्ली में आम आदमी पार्टी ने भी कांग्रेस को ज़मीन दिखाने के प्रयास में खुद के लिए आत्म घाती रास्ता तैयार किया। यह बात सही है कि आम आदमी पार्टी के नेता अरविंद केजरीवाल अपने आपको कांग्रेस से बड़ा मानने लगे थे, इसलिए ही कांग्रेस से किनारा करके चुनाव मैदान में कूद गए, और पहली बार सत्ता से दूर हो गए। वर्तमान राजनीतिक स्थिति में कब क्या हो जाए, कुछ कहा नहीं जा सकता। इसलिए राजनेताओं को बड़े बोल बोलने से हमेशा बचना चाहिए। लेकिन अरविंद केजरीवाल यहां पर चूक गए। उन्होंने जिस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया, वह उनके अहंकार का ही परिचायक कहा जा सकता है। अब केजरीवाल को स्वयं समझ जाना चाहिए कि व्यवहार ऐसा होना चाहिए, जो प्रिय लगे। कहा जाता है कि क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के उभार ने कांग्रेस का बंटाधार करने का ही काम किया है। कहीं कहीं यह भी सत्य है कि कांग्रेस के अप्रिय व्यवहार के चलते ही इन क्षेत्रीय दलों का गठन हुआ। इसलिए यह क्षेत्रीय राजनीतिक दल कांग्रेस के साथ मिलकर आसानी से चुनाव लड़ेंगे, यह उचित प्रतीत नहीं होता।

भारत ने विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्त की हैं असाधारण उपलब्धियां

प्रह्लाद सबनानी

दिनांक 31 जनवरी 2025 को देश की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने लोकसभा एवं राज्यसभा के संयुक्त अधिवेशन को अपने सम्बोधन में, हाल ही के समय में, भारत में विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्त की गई उपलब्धियों के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए कहा है कि 卐भारत की विकास यात्रा के इस अमृतकाल को आज मेरी (केंद्र) सरकार अभूतपूर्व उपलब्धियों के माध्यम से नई ऊर्जा दे रही है। तीसरे कार्यकाल में तीन गुना तेज गति से काम हो रहा है। आज देश बड़े निर्णयों और नीतियों को असाधारण गति से लागू होते देख रहा है। और, इन निर्णयों में देश के गरीब, मध्यम वर्ग, युवा, महिलाओं, किसानों को सर्वोच्च प्राथमिकता मिली है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू द्वारा दिए गए उक्त भाषण में अंशों को जोड़कर इस लेख में यह बताने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार भारत में गरीब वर्ग, युवाओं, मातृशक्ति, किसानों, आदि के लिए विभिन्न योजनाएं सफलतापूर्वक चलाई जा रही हैं। आज आम नागरिकों की मूलभूत आवश्यकताओं रोटी, कपड़ा और मकान के साथ साथ स्वास्थ्य एवं शिक्षा पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है। समस्त परिवारों को आवास सुविधा उपलब्ध कराने के लिए ठोस कदम उठाए जा रहे हैं। प्रधानमंत्री आवास योजना का विस्तार करते हुए तीन करोड़ अतिरिक्त परिवारों को नए घर देने का निर्णय लिया गया है।

इसके लिए 5 लाख 36 हजार करोड़ रुपए की राशि का खर्च किए जाने की योजना है। इसी प्रकार, गांव में गरीबों को उनकी आवासीय भूमि का हक देने के उद्देश्य से स्वामित्व योजना के अंतर्गत अभी तक 2 करोड़ 25 लाख सम्पत्ति कार्ड जारी किए जा चुके हैं। साथ ही, पीएम किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत लगभग 11 करोड़ किसानों को पिछले कुछ महीनों में 41,000 करोड़ रुपए की राशि का भुगतान किया गया है। जनजातीय समाज के पांच करोड़ नागरिकों के लिए धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान प्रारंभ हुआ है। इसके लिए अस्सी हजार करोड़ रुपये की राशि का प्रावधान किया गया है। आज मध्यम वर्ग को मकान/फ्लैट खरीदने के लिए लोन पर सब्सिडी भी दी जा रही है एवं रेरा जैसा कानून बनाकर मध्यम वर्ग के स्वयं के मकान सम्बंधी सपने को सुरक्षा दी गई है। देश के नागरिकों को स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराए जाने के उद्देश्य से आयुषमान भारत योजना चलाई जा रही है। अब इस योजना के अंतर्गत 70 वर्ष और उससे अधिक उम्र के 6 करोड़ वरिष्ठ नागरिकों को स्वास्थ्य बीमा देने का निर्णय लिया गया है। इन वरिष्ठ नागरिकों को प्रत्येक वर्ष में पांच लाख रुपए का स्वास्थ्य बीमा उपलब्ध कराया जाएगा। केंद्र सरकार द्वारा आज युवाओं की शिक्षा और उनके लिए रोजगार के नए अवसर तैयार करने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। मेधावी छात्रों को उच्च शिक्षा में वित्तीय सहायता देने के लिए पीएम विद्यालक्ष्मी योजना शुरू की गई है। एक करोड़ युवाओं को शीर्ष पांच सौ कंपनियों में इंटर्नशिप के अवसर भी दिये जाएंगे। पेपर लीक की घटनाओं को रोकने और भर्ती में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए नया कानून लागू किया गया है।सहकार से समृद्धि की भावना पर चलते हुए सरकार ने 'त्रिभुवन' सहकारी यूनिवर्सिटी की स्थापना का प्रस्ताव स्वीकृत किया है। जब देश के विकास का लाभ अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति को भी मिलने लगता है तभी विकास सार्थक होता है। गरीब को गरिमापूर्ण जीवन मिलने से उसमें जो सशक्तिकरण का भाव पैदा होता है, वो गरीबी से लड़ने में उसकी मदद करता है। स्वच्छ भारत अभियान के

अंतर्गत बने 12 करोड़ शौचालय, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के तहत निशुल्क दिए गए 10 करोड़ गैस कनेक्शन, 80 करोड़ जरूरतमंदों को राशन, सौभाग्य योजना, जल जीवन मिशन जैसी अनेक योजनाओं ने गरीब को ये भरोसा दिया है कि वो सम्मान के साथ जी सकते हैं। ऐसे ही प्रयासों की वजह से देश के 25 करोड़ लोग गरीबी को परास्त करके आज अपने जीवन में आगे बढ़ रहे हैं। इन्होंने नियो मिडिल क्लास का एक ऐसा समूह तैयार किया है, जो भारत की ग्रोथ को नई ऊर्जा से भर रहा है। उड़ान योजना ने लगभग डेढ़ करोड़ लोगों का हवाई जहाज में उड़ने का सपना पूरा किया है। जन औषधि केंद्र में 80 प्रतिशत रियायती दरों पर मिल रही दवाओं से, देशवासियों के 30 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा बचे हैं। हर विषय की पढ़ाई के लिए सीटों की संख्या में कई गुना बढ़ोतरी का बहुत लाभ मध्यम वर्ग को मिला है। केंद्र सरकार ने प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के चौथे चरण में पच्चीस हजार बस्तियों को जोड़ने के लिए 70,000 करोड़ रुपए की राशि स्वीकृत की हैं। आज जब हमारा देश अटल जी की जन्म शताब्दी का वर्ष मना रहा है, तब प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना उनके विजन का पर्याय बनी हुई है। देश में अब 71 वंदे भारत, अमृत भारत और नमो भारत ट्रेन चल रही हैं, जिनमें पिछले छह माह में ही 17 नई वंदे भारत और एक नमो भारत ट्रेन को जोड़ा गया है। आगे आने वाले समय में देश के आर्थिक विकास में देश की आधी आबादी अर्थात मातृशक्ति के योगदान को बढ़ाना ही होगा। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत 91 लाख से अधिक स्वयं सहायता समूहों को सशक्त किया जा रहा है। देश की दस करोड़ से भी अधिक महिलाओं को इसके साथ जोड़ा गया है। इन्हें कुल नौ लाख करोड़ रुपये से अधिक की राशि बैंक लिंकेज के माध्यम से वितरित की गई है। केंद्र सरकार ने देश में तीन करोड़ लखपति दीदी बनाने लक्ष्य निर्धारित किया है। आज एक करोड़ 15 लाख से भी अधिक लखपति दीदी एक गरिमामय जीवन जी रही हैं। इनमें से लगभग 50 लाख लखपति दीदी, बीते 6 महीने में बनी हैं। ये महिलाएं एक उद्यमी के रूप में अपने परिवार की आय में योगदान दे रही हैं। भारत में सभी के लिए बीमा की भावना के साथ कुछ महीने पूर्व ही बीमा सखी अभियान भी शुरू किया गया है। बैंकिंग और डिजी पेमेंट सखियां दूर दराज के इलाकों में लोगों को वित्तीय व्यवस्था से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। कृषि सखियां नेचुरल फार्मिंग को बढ़ावा दे रही हैं और पशु सखियों के माध्यम से देश का पशुधन मजबूत हो रहा है। आज भारत में बड़ी संख्या में महिलाएं लड़ाकू विमान उड़ा रही हैं, पुलिस में भर्ती हो रही हैं और कॉरपोरेट कंपनियों का नेतृत्व भी कर रही हैं। आज बालिकाओं की भर्ती राष्ट्रीय मिलिट्री स्कूलों में भी प्रारंभ हो गई है। नेशनल डिफेंस अकैडमी में भी महिला कैडेट्स की भर्ती शुरू हो गई है। पिछले एक दशक में मेक इन इंडिया, आत्मनिर्भर भारत, स्टार्टअप इंडिया, स्टैंड-अप इंडिया और डिजिटल इंडिया जैसी पहल ने युवाओं को रोजगार के अनेक अवसर प्रदान किए हैं। पिछले दो वर्षों में सरकार ने, रिकॉर्ड संख्या में दस लाख स्थायी सरकारी नौकरियां प्रदान की हैं। युवाओं के बेहतर कौशल और नए अवसरों के सृजन के लिए दो लाख करोड़ रुपए का पैकेज केंद्र सरकार द्वारा स्वीकृत किया गया है।

> इसके लिए 5 लाख 36 हजार करोड़ रुपए की राशि का खर्च किए जाने की योजना है। इसी प्रकार, गांव में गरीबों को उनकी आवासीय भूमि का हक देने के उद्देश्य से स्वामित्व योजना के अंतर्गत अभी तक 2 करोड़ 25 लाख सम्पत्ति कार्ड जारी किए जा चुके हैं। साथ ही, पीएम किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत लगभग 11 करोड़ किसानों को पिछले कुछ महीनों में 41,000 करोड़ रुपए की राशि का भुगतान किया गया है। जनजातीय समाज के पांच करोड़ नागरिकों के लिए धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान प्रारंभ हुआ है। इसके लिए अस्सी हजार करोड़ रुपये की राशि का प्रावधान किया गया है। आज मध्यम वर्ग को मकान/फ्लैट खरीदने के लिए लोन पर सब्सिडी भी दी जा रही है।

त्योहार-संस्कृति एवं जीवन-संस्कारों को धुंधलाने का दौर

पाश्चात्य अंधानुकरण के कारण हमने न केवल भारतीय त्यौहारों के रंगों को धुंधला दिया है, बल्कि वैलेंटाइन डे जैसे पर्वों को महिमामंडित कर दिया है। भारत के प्रत्येक भू-भाग के अपने त्यौहार हैं, कुछ समान हैं तो कुछ उस भू-भाग की विशिष्टता लिए। परंतु इन्हें भी विकृत करने का व्यापक प्रयास हो रहा है। हमने अपने त्यौहारों को विकृत करने में कोई कमी नहीं रखी है, यही कारण है कि कुछ त्यौहार मद्यपान से जुड़ गए हैं, तो कुछ जुए से, कुछ कीचड़ से सन जाते हैं, तो कुछ लेन-देन के अवसर बन गए हैं। कुछ के साथ अश्लीलता एवं फुहड़ता जुड़ गयी है। इतना ही नहीं हमारी त्यौहारों की समृद्ध परंपरा को धुंधलाने के भी सुनियोजित प्रयास हो रहे हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ और बड़े व्यावसायिक संस्थान अपने लाभ के लिए देश में ऐसे उत्सवों/पर्वों को स्थापित कर रहे हैं, जिनका हमारी संस्कृति से मेल नहीं है। फेमिली डे, मदर डे, फादर डे, वैलेंटाइन डे-ऐसे आधुनिक पर्व हैं, जिन्हें बड़ी कंपनियाँ एवं इलेक्ट्रोनिक मीडिया महिमामंडित कर रहे हैं। अपने आपको आधुनिक कहने वाले परिवारों एवं लोगों के लिए दीपावली, होली, रक्षाबंधन जैसे पारंपरिक पर्वों की तुलना में ये आधुनिक पर्व ज्यादा महत्त्वपूर्ण एवं प्रासंगिक हैं। आखिर क्यों? हम अपने ही देश एवं अपनी संस्कृति के बीच बेगाने क्यों बने हुए हैं? अपने त्यौहारों की समृद्ध परम्परा को क्यों कमजोर कर रहे हैं? भारतीय संस्कृति इसलिये अनूठी एवं विलक्षण है क्योंकि यह मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्रीराम की अनुकरणीय और लीलाधर श्रीकृष्ण की अनुसरणीय शिक्षाओं की साक्षी है। हमारी संस्कृति ने न केवल भारत को, बल्कि सभी को अपना परिवार माना है। तभी यहां आज भी 'वसुधैव कुटुंबकम' का मूल मंत्र दोहराया जाता है। पाश्चात्य देशों की बात करें, तो उसने दुनिया को केवल बाजार माना है। हमारी सनातन संस्कृति में रचे-बसे लोग इतने उदार हैं कि हमने सदैव अन्य देशों की संस्कृतियों का दोनों बाहें फैलाकर स्वागत किया है। पर्व, व्रत, त्योहार एवं उत्सव सामाजिक सरोकार के अद्भुत संगम एवं समन्वय के मूर्त रूप हैं। यदि हम असामाजिक, संवेदनशून्य, उपभेक्तावादी एवं पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण करने की दिशा में अग्रसर रहेंगे तो हमारी यह मूल्यवान संस्कृति जड़ बनकर पतनोन्मुख हो सकती है। हजारों-हजारों साल से जिस प्रकृति ने भारतीय मन को आकार दिया था, उसे रचा था, भारतीयता की एक अलग छवि का निर्माण हुआ, यहां के इंसानों की इंसानियत ने दुनिया को आकर्षित किया, संस्कृति एवं संस्कारों, जीवन-मूल्यों की एक नई पहचान बनी। ऐसा क्या हुआ कि आजादी के बाद उसके साथ कुछ गलत हुआ है, और वह गलत दिनोंदिन गहराता गया है जिससे सारा माहौल ही प्रदूषित हो गया है, जीवन के सारे रंग ही फिके पड़ गये हैं, हम अपने ही भीतर की हरियाली से वंचित हो गए लोग हैं। न कहीं आपसी विश्वास रहा, न किसी का परस्पर प्यार। न सहयोग की उदात्त भावना रही, न संघर्ष में सामूहिकता का स्वर, बिखराव की भीड़ में न किसी ने हाथ थामा, न किसी ने आग्रह की पकड़ छोड़ी। यूं लगता है सब कुछ खोकर विभक्त मन अकेला खड़ा है फिर से सब कुछ पाने की आशा में। क्या यह प्रतीक्षा झूठी है? क्या यह अगवानी अर्थशून्य है? विदेशों की उपभोक्ता संस्कृति की अंधी नकल ने हमारी जीवनशैली, परिवार परम्परा, त्यौहार, खानपान, विचार आदि को दूषित किया है। बच्चे अच्छे से अच्छे शरबत की अपेक्षा कोल्ड डिंक्र्स में अधिक रुचि रखते हैं। वाह! क्या आकर्षण है इन पेयों का और इन अंग्रेजी नामों का। मेकडोनाल्ड बच्चों के सिर चढ़कर बोल रहा है, पिज्जा, नूडल्स, चाउमीन ये सब आधुनिक खान-पान है। यह सब हमारी बदली मानसिकता का द्योतक है। दावतों एवं 'प्रीतिभोज' में 'बुफे' संस्कृति भी खूब चल पड़ी है। भारतीय परिस्थितियों में यह पूर्णतः 'गिद्ध भोज' दिखाई देता है। पहनावे की तो बात ही न पूछो। क्या सोशल मीडिया शरीर पर न्यूनतम कपड़ों को दिखाने की होड़ में नहीं लगा हैं? हमने क्यों अपनाया 'टाइट जीन्स', 'मिनी स्कर्ट' तथा 'हॉट पेंट्स' को।

क्या साड़ी-ब्लाउज, सलवार कुर्ता, काँचली-कुर्ती, ओढ़नी-घाघरा कम आकर्षक हैं? हम क्यों माता-पिता की छवि को आहत करते हुए उन पर अश्लील टिप्पणियां करते हुए स्वयं को आधुनिक मानते हैं? यह संस्कृति एवं संस्कारों को धुंधलाना नहीं है तो क्या है परिवार वह इकाई है, जहाँ एक ही छत के नीचे, एक ही दीवार के सहारे, अनेक व्यक्ति आपसी विश्वास के बरगद की छाँव और सेवा, सहकार और सहानुभूति के घेरे में निश्चित रहते हैं। परिवार वह नीड़ है, जो दिन-भर से थके-हारे पंछी को विश्राम देता है। लेकिन मियाँ, बीवी व बच्चों की इकाई ही आज परिवार है, इस एकल परिवार संस्कृति वाले दौर में माँ-बाप, भाई-बहन की बात करना बेमानी लगता है। परंतु लगता है जहाँ पति-पत्नी दोनों ही अर्थोपार्जन के लिए नौकरी या व्यवसाय करते हैं, उन्हें संयुक्त परिवार और कम से कम माता-पिता या किसी बुजुर्ग की याद आने लगती है।

युद्ध के प्रति भारतीय तटस्थता नहीं, बल्कि शांतिपरक पक्षधरता को ऐसे समझिए

> चाहे चीन-ताइवान युद्ध की अटकलें हों या ईरान-इजरायल युद्ध की संभावनाएं, अफगानिस्तान सरकार का तालिबान के हाथों पतन हो या तुर्की के इशारे पर सीरिया की सरकार का पतन, भारत ने कभी हस्तक्षेप नहीं किया। वह हमेशा यही कहता रहा कि हम वसुधैव कुटुंबकम के पक्षधर हैं। पीएम मोदी भी लगातार कहते रहे हैं कि यह युद्ध नहीं, बुद्ध का समय है। जी हां, भगवान बुद्ध! वैसे दुनिया को यह भी पता है कि पाकिस्तान और बांग्लादेश जैसे अमन-चैन के दुश्मनों से घिरा भारत यदि उनकी बड़ी-बड़ी कायराना व हिन्दू/भारत विरोधी हरकतों को नजरअंदाज करते हुए सीधी कार्रवाई से यदि बचता आया है तो सिर्फ इसलिए कि वह युद्ध नहीं बल्कि शांति चाहता है। इन देशों का जन्म भी क्रमशः भारत और पाकिस्तान के विभाजन से हुआ है।

चाहे वैश्विक युद्ध की संभावना की बात हो या विभिन्न देशों के बीच ब्रेक के बाद जारी द्विपक्षीय युद्ध की, भारत ने साफ कर दिया है कि वह ऐसे किसी भी मामले में तटस्थ नहीं, बल्कि शांति का पक्षधर है। बता दें कि अपनी हालिया अमेरिकी यात्रा (12-13 फरवरी 2025) के क्रम में भारत के पीएम नरेंद्र मोदी ने एक सवाल का जवाब देते हुए यह साफ कर दिया है कि रूस-यूक्रेन जंग पर भारत न्यूट्रल यानी तटस्थ नहीं है। भारत शांति का पक्षधर है। इसलिए दुनियादारी के निष्णात लोग ह से हलंत तक की अटकलें लगा रहे हैं और उनके इस वक्तव्य के अंतर्राष्ट्रीय मायने निकाले जा रहे हैं। ऐसा इसलिए कि इजरायल-फिलिस्तीन युद्ध के दौरान भी भारत का कुल मिलाकर यही नजरिया रहा है।

चाहे चीन-ताइवान युद्ध की अटकलें हों या ईरान-इजरायल युद्ध की संभावनाएं, अफगानिस्तान सरकार का तालिबान के हाथों पतन हो या तुर्की के इशारे पर सीरिया की सरकार का पतन, भारत ने कभी हस्तक्षेप नहीं किया। वह हमेशा यही कहता रहा कि हम वसुधैव कुटुंबकम के पक्षधर हैं। पीएम मोदी भी लगातार कहते रहे हैं कि यह युद्ध नहीं, बुद्ध का समय है। जी हां, भगवान बुद्ध! वैसे दुनिया को यह भी पता है कि पाकिस्तान और बांग्लादेश जैसे अमन-चैन के दुश्मनों से घिरा भारत यदि उनकी बड़ी-बड़ी कायराना व हिन्दू/भारत विरोधी हरकतों को नजरअंदाज करते हुए सीधी कार्रवाई से यदि बचता आया है तो सिर्फ इसलिए कि वह युद्ध नहीं बल्कि शांति चाहता है। इन देशों का जन्म भी क्रमशः भारत और पाकिस्तान

के विभाजन से हुआ है। पाकिस्तान ने आजादी हासिल करते ही कश्मीर के सवाल पर भारत से छद्म लड़ाई छेड़ दी। उसके बाद 1965 और 72 में सीधी लड़ाई लड़कर बुरी तरह से मात खाया। 1999 में भी उसने कारगिल में छद्म युद्ध छेड़ा और बुरी तरह से पीटा। उसके इशारे पर थिरकने वाले बंगलादेश की भी कुछ ऐसी ही नियति है। उधर, 1962 में भारत के खिलाफ युद्ध लड़ चुका चीन इन दोनों देशों को प्रोत्साहन देता आया है। हालांकि, आजादी के बाद पाकिस्तान की और पाकिस्तान से आजादी हासिल करने के दौरान बंगलादेश की भारत ने दिल खोलकर मदद की, लेकिन दोनों देश भारत से सांप्रदायिक नफरत रखते हैं, इस वास्ते किसी भी हद तक गुजर जाने के लिए ततपर रहते हैं और विदेशी ताकतों की हाथों में खेलते रहते हैं। भारत इसे बखूबी समझता है। वह इन दोनों देशों में निरंतर ब्रेक के बाद जारी हिंदुओं के दमन-उत्पीड़न और हत्याओं के बावजूद इन्हें क्षमा करता आया है, ताकि इनकी सांप्रदायिक फितरत बदलते। इतना ही नहीं, नेपाल, म्यांमार, श्रीलंका, मालदीव आदि जैसे मौकापरस्त पड़ोसी देशों से जुड़े घटनाक्रमों पर जब आप गौर करेंगे तो भारतीय धैर्य की दाद आपको देनी पड़ेगी। यदि उनके हितों का सवाल नहीं हो तो भारत ने कभी सैन्य हस्तक्षेप इन देशों के खिलाफ नहीं किया। वहीं, दुनियावी मंचों पर अमेरिका, सोवियत संघ (अब रूस), चीन आदि के मामलों में भी न तो किसी का पक्ष लिया, न किसी का विरोध किया। इन बातों का सीधा संदेश है कि जो शांति का दुश्मन है, वो भारत का दुश्मन है। इस नजरिए से यदि देखा जाए तो %आतंकवाद% और उसको प्रोत्साहित करने वाले %देश% या उनका गुट भी भारत के दुश्मन हैं। पूरी दुनिया में हथियारों की होड़ पैदा करके एक दूसरे पर कोहराम मचाने वाले देश या उनके संरक्षक भी भारत के दुश्मन हैं।.....और शायद इसलिए भी भारत हथियारों की होड़ में शामिल हो चुका है, क्योंकि लोहा को लोहा ही काटता है। भारत का बढ़ता रक्षा कारोबार भी उसके इसी नजरिए का द्योतक है। सीधा सवाल है कि समकालीन विश्व में शांति का दुश्मन कौन है? तो सीधा जवाब होगा कि ट्रंफ के नेतृत्व में अमेरिका भले ही %चंद्रायण व्रत% करने का संकेत लगातार दे रहा है, लेकिन मौजूदा वैश्विक परिस्थितियों के लिए कहीं न कहीं उसकी नीतियां ही जिम्मेदार रही हैं। हालांकि, भारत से मित्रता के चलते अब उसका भी स्वभाव बदल रहा है।जबकि चीन ऐसा करने को राजी नहीं है। अपने साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा वश चीन अभी जो दुनियावी तिकड़म बैठा रहा है, देर-सबेर उस पर ही भारी पड़ेंगी, क्योंकि भारत की नीतियां ही ऐसी परिपक्व हैं। वहीं, यह भी कड़वा सच है कि अंतरराष्ट्रीय मंचों पर रूस ने अब तक जो कुछ भी किया है, वह अमेरिकी रणनीतियों से अपने बचाव में किया है या फिर उसे संतुलित रखने के लिए किया है। जबकि चीन जो कुछ भी कर रहा है, वह उसकी साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा है। यह भी अजीबोगरीब है कि दुनिया को आतंकवाद और आतंकवादियों का निर्यातक देश पाकिस्तान (अब बंगलादेश भी) अब अमेरिका की बजाय चीनी गोद में खेल रहा है। यदि आप अमेरिका, रूस, चीन की बात छोड़ दें तो जापान, ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस, इजरायल, जर्मनी, ग्रेट ब्रिटेन, दक्षिण अफ्रीका, ब्राजील, ईरान, तुर्की जैसे दूसरी पंक्ति के बहुत सारे देश है।

आरसीबी ने जीत के साथ किया आगाज

गुजरात जायंट्स को छह विकेट से हराया

एजेंसी

वडोदरा। रिचा घोष के 27 गेंद में नाबाद 64 रन और एलिसे पैरी की 34 गेंद में 57 रन की पारी की मदद से गत चैम्पियन रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू ने महिला प्रीमियर लीग के तीसरे सत्र के पहले मैच में शुक्रवार को गुजरात जायंट्स को छह विकेट से हरा दिया। जीत के लिए 202 रन का लक्ष्य आरसीबी ने नौ गेंद बाकी रहते हासिल कर लिया । रिचा ने अपनी पारी में सात चौके और चार छक्के लगाये। वहीं पैरी ने छह चौके और दो छक्के जड़े। आखिर में कनिका आहूजा ने 13 गेंद में नाबाद 30 रन बनाये।

कप्तान स्मृति मंधाना (नौ) और उनकी सलामी जोड़ीदार डैनी वियाट हॉज (चार) सस्ते में आउट हो गई जिसके बाद पैरी ने राघवी बिष्ट (25) के साथ मिलकर पारी को संभाला और तीसरे विकेट के लिये 86 रन जोड़े । इसके बाद रिचा ने मोर्चा संभाल लिया । इससे पहले कप्तान एशले गार्डनर और अनुभवी बेथ मूनी के अर्धशतकों की मदद से गुजरात जाइंट्स ने पांच विकेट पर 201 रन बनाये । मूनी ने 42 गेंद में आठ चौकों की मदद से 56 रन बनाये जबकि गार्डनर ने 37 गेंद में 79 रन की नाबाद पारी खेली जिसमें तीन चौके और आठ छक्के शामिल थे। इससे पहले गत चैम्पियन आरसीबी की कप्तान मंधाना ने टॉस जीतकर क्षेत्ररक्षण का फैसला लिया। स्कोर बोर्ड पर जब 41 रन टंगे थे तब लौरा वोल्वार्ट और डी हेमलता पवेलियन लौट गए लेकिन गार्डनर और मूनी ने टीम को इन झटकों से निकाला । आस्ट्रेलियाई बल्लेबाजों ने तीसरे विकेट के लिये 44 रन जोड़े । मूनी को लेग स्पिनर प्रेमा रावत ने आउट किया जिनका कैच मंधाना ने लपका।

गार्डनर ने इसके बाद वेस्टइंडीज की डिएंड्रा डोटिन (13 गेंद में 25 रन) के साथ पांच ओवर में 67 रन जोड़े। डोटिन ने अपनी आक्रामक पारी में तीन चौके और एक छक्का लगाया। महिलाओं की एशेज श्रृंखला से ही शानदार फॉर्म में चल रही गार्डनर ने प्रेमा और भारत की अंडर 19 तेज गेंदबाज वीजे जोशिता को एक ओवर में तीन छक्के लगाये । डोटिन को तेज गेंदबाज रेणुका सिंह ठाकुर ने आउट किया लेकिन तब तक गुजरात की टीम बड़ा स्कोर बना चुकी थी । रेणुका ने 25 रन देकर दो विकेट लिये।

साल में दस महीने खेलने से चोटों का खतरा और बढेगा

◆ **कपिल देव ने भारतीय क्रिकेटरों के चोटिल होने की बढ़ती घटनाओं पर जताई चिंता**

एजेंसी

कोलकाता। विश्व कप विजेता कप्तान कपिल देव ने भारतीय क्रिकेटरों के चोटिल होने की बढ़ती घटनाओं पर चिंता जताते हुए इसकी वजह व्यस्त कैलेंडर को बताया जिसमें खिलाड़ी साल में करीब दस महीने तक खेलते हैं। बेंगलुरु में राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी इन दिनों खिलाड़ियों के रिहैबिलिटेशन का केंद्र बन गया है जहां खिलाड़ी अभ्यास से ज्यादा समय रिकवरी में बिता रहे हैं। भारतीय तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह इस कड़ी में ताजा नाम बन गए हैं जिन्हें कमर की चोट के कारण सिडनी में आस्ट्रेलिया के खिलाफ पांचवें टेस्ट से बाहर रहना पड़ा। चैंपियंस ट्रॉफी के लिए प्रारंभिक टीम में शामिल होने के बावजूद बुमराह अंतिम टीम से बाहर हो गए। मोहम्मद शमी 14 महीने तक चोट के कारण बाहर रहे। 1983 विश्व कप विजेता कपिल ने यहां टाटा स्टील गोल्फ पुरस्कार वितरण समारोह के दौरान कहा, मुझे चिंता यही है कि वे साल में दस महीने खेल रहे हैं। यह पूछने पर कि क्या चैम्पियंस ट्रॉफी में बुमराह की कमी खलेगी, कपिल ने खिलाड़ियों से चोटिल खिलाड़ियों पर निर्भर रहने की बजाय एक दूसरे का सहयोग करने पर फोकस रखने के लिये कहा । उन्होंने कहा, उसके बारे में बात क्यो करना जो टीम में नहीं है ।

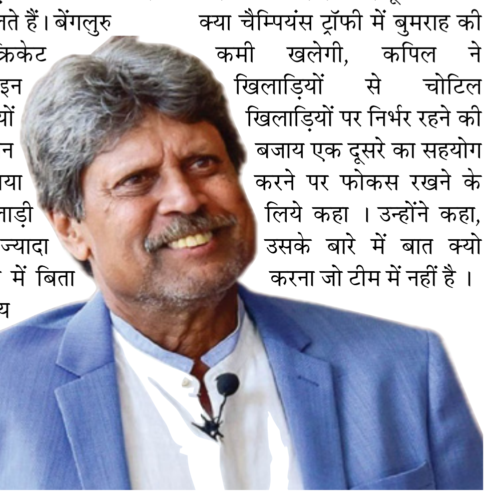

संक्षिप्त सामाचार

नारायण आर्टिफिशियल लिम्ब कैम्प 16 फरवरी को राजधानी

नयी दिल्ली। गैर सरकारी संगठन नारायण सेवा संस्थान द्वारा दिल्ली में दिव्यांगों के कल्याणार्थ विशाल नि:शुल्क शिविर का आयोजन 16 फरवरी को दिल्ली में किया जा रहा है। संस्थान के ट्रस्टी एवं निदेशक देवेंद्र चौबिसा ने आज यहां बताया कि ऐसे लोग जिन्होंने किसी हादसे में या अन्य बीमारी के चलते अपना हाथ-पैर गंवा देने से अंगविहिन हुए है, उन्हें दिव्यांगता की दु:खभरी जिन्दगी से निकालने के लिए संस्थान निस्वार्थ भाव से प्रतिबद्ध है। दिल्ली के दिव्यांगजनों को मदद पहुंचाने के संकल्प से विशाल नि:शुल्क दिव्यांगता निवारण ऑपरेशन चयन एवं नारायण लिम्ब मैजरमेंट शिविर दिल्ली के गोल्डन क्राउन, जापानीज पार्क, सेक्टर-12, रोहिणी में किया जा रहा है। श्री चौबिसा ने बताया कि नारायण सेवा संस्थान का यह फ्री कैम्प विशेष है। इसमें दिव्यांग बन्धुओं को संस्थान के अनुभवी एवं विशेषज्ञ ओर्थोटिस्ट एवं प्रॉस्थेटिक डॉक्टर्स टीम द्वारा देखा जाएगा और टीम द्वारा उच्च गुणवत्ता युक्त और वजन में हल्के व टिकाऊ नारायण लिम्ब के लिए व्यवस्थित कास्टिंग कर लिम्ब का माप लिया जायेगा।

बीसीसीआई ने गौतम गंभीर के खास को किया उनसे दूर, इस कारण से साथ रहना हुआ मुश्किल

नई दिल्ली। बीसीसीआई इस समय अपने नियमों को लेकर सख्त है। ऑस्ट्रेलिया दौरे के बाद हुई बैठक में बोर्ड ने कुछ फैसले किए थे और उन पर वो कायम है। इंग्लैंड के भारत दौरे पर ये देखने को भी मिला। बोर्ड ने फैसला किया था कि सपोर्ट स्टाफ के सदस्यों का कोई भी मैनेजर टीम के साथ नहीं होगा और इंग्लैंड सीरीज के दौरान ऐसा ही हुआ। ये फैसला इसलिए किया गया था क्योंकि ऑस्ट्रेलिया दौरे पर गौतम गंभीर के पीए टीम होटल में ही रुक रहे थे और टीम के साथ ही थे। वह एडिलेड के हॉस्पिटेलिटी बॉक्स में भी घूम रहे थे। इसी कारण बीसीसीआई ने ये फैसला किया था। हालांकि, इंग्लैंड के खिलाफ सीरीज में ऐसा नहीं हुआ। समाचार एजेंसी पीटीआई ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि, कोचिंग स्टाफ के पर्सनल सेकेट्री, जो लगातार टीम होटल में रह रहा था वह अब दूसरे होटल में रहते हैं। हालांकि, वह इंग्लैंड सीरीज के दौरान हर मैच में स्टेडियम में उपलब्ध थे।

आईपीपीबी ने महाकुम्भ में श्रद्धालुओं को बैंकिंग सेवाओं से सशक्त बनाया

नयी दिल्ली। सरकारी उपक्रम इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक (आईपीपीबी) प्रयागराज में महाकुम्भ 2025 में लाखों श्रद्धालुओं और तीर्थयात्रियों को निर्बाध डिजिटल बैंकिंग सेवाएं प्रदान करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाया है। दुनिया के सबसे बड़े आध्यात्मिक समागम के रूप में, महाकुम्भ में सभी क्षेत्रों के लोग आते हैं। आईपीपीबी अपने ग्राहक-केंद्रित दृष्टिकोण के साथ, सभी के लिए व्यापक बैंकिंग सेवाओं तक पहुंच को आसान कर रहा है, जिससे वित्तीय लेनदेन की सुविधा, सुरक्षा सुनिश्चित हो रही है।

बैंक ने पूरे महाकुम्भ में 5 प्रमुख स्थानों पर सेवा काउंटर, मोबाइल बैंकिंग इकाइयां और ग्राहक सहायता कियोस्क स्थापित किए हैं। इन सुविधाओं को ज्यादा से ज्यादा ग्राहकों की संख्या को कुशलतापूर्वक संभालने के लिए डिज़ाइन किया गया है। महाकुम्भ में आईपीपीबी की चल रही पहल पर उसके के एमडी और सीईओ आर.विश्वेश्वरन ने कहा, इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक में हम महाकुम्भ 2025, प्रयागराज की पवित्र भूमि पर अपनी बिना रूके बैंकिंग सेवाएं प्रदान करने के लिए सम्मानित महसूस करते हैं।

ओडिशा एफसी ने हैदराबाद एफसी को 3-1 से हराया

एजेंसी

भुवनेश्वर। ओडिशा एफसी ने यहां कलिंगा स्टेडियम में इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) मैच में हैदराबाद एफसी को 3-1 से हरा दिया। ओडिशा अब 29 अंकों के साथ तालिका में सातवें स्थान पर है और छठे स्थान पर मौजूद मुंबई सिटी एफसी (31) से दो अंक पीछे है। ओडिशा की टीमने खेल में आधे समय तक एक गोल से पिछड़ी थी मगर अगले 45 मिनट में एक के बाद एक तीन गोल कर जीत की दावेदार बन गयी। इस प्रकार ओडिशा एफसी ने हैदराबाद एफसी के खिलाफ भुवनेश्वर में घरेलू मैदान पर अपनी लगातार चौथी जीत दर्ज की। दूसरे हाफ में घरेलू टीम लगातार आक्रामक रही और हैदराबाद एफसी को पीछे से आगे तक अपनी स्थिति बनाए रखने के लिए संघर्ष करना पड़ा। ओडिशा एफसी अपने अगले मैच में 23 फरवरी को मोहन बागान सुपर जाइंट से खेलेगी, जबकि हैदराबाद एफसी 19 फरवरी को मुंबई सिटी एफसी से भिड़ेगी।

नेशनल यूनाइटेड ने यूनाइटेड भारत को हराया

नयी दिल्ली। युमनाम गोपी सिंह के दो गोलों की मदद से नेशनल यूनाइटेड स्पोर्ट्स क्लब ने यूनाइटेड भारत फुटबाल क्लब को 3-1 से हरा कर डीएसए प्रीमियर लीग में पूरे अंक अर्जित किए। वहीं दिन के दूसरे मुकाबले में रोमांचक मुकाबले में हिन्दुस्तान फुटबाल क्लब ने अंक तालिका में अव्वल चल रहे सीआईएसएफ प्रोटैक्टर को 2-2 पर रोक कर अच्छा पाठ पढ़ाया। हिंदुस्तान के लिए रोनाल्डो सिंह और मांगोलेन ने गोल किए। सीआई एस एफ को बचाने में हिंदुस्तान के लाइशराम का आत्मघाती गोल काम आया। अंतत: भोला सिंह ने बराबरी का गोल जमा कर अपनी टीम की साख बचा ली। नेहरू स्टेडियम परिसर में खेले गए पहले मैच में नेशनल के लिए सोराईसम ने दसवें मिनट में बढ़त दिलाने वाला गोल किया।

भारतीय महिला हॉकी टीम की कप्तान सलीमा टेटे बोलीं-प्रो लीग हमारे लिए बहुत बड़ा मौका

एजेंसी

भुवनेश्वर। भारतीय महिला हॉकी टीम की कप्तान सलीमा टेटे का मानना है कि एफआईएच प्रो लीग उनकी टीम के लिए अपनी कमजोरियों को दूर करने का शानदार मौका है और वह चाहती है कि उनके खिलाड़ी परिणाम की परवाह किए बिना अपने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने पर ध्यान केंद्रित करें। भारतीय टीम अपने अभियान की शुरुआत शनिवार को यहां इंग्लैंड के खिलाफ करेगी। इसके बाद वह रविवार को फिर से इंग्लैंड का सामना करेगी। भारतीय टीम 18 और 19 फरवरी को स्पेन से खेलेगी। इसके बाद भारतीय टीम 21 और 22 फरवरी को जर्मनी तथा 24 और 25 फरवरी को नीदरलैंड के खिलाफ खेलेगी। सलीमा ने पहले मैच की पूर्व संध्या पर कहा, ''हम अपने खेल पर ध्यान केंद्रित करेंगे। कुछ खिलाड़ी हैं जो ओलंपिक के बाद अपने पहले प्रो लीग मैच में खेलेंगे।'' उन्होंने कहा, 'जीत और हार खेल का हिस्सा है लेकिन सबसे महत्वपूर्ण अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना है। यह हमारे लिए बहुत बड़ा मौका है लेकिन हम परिणाम के बारे में नहीं सोच रहे हैं। हम अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की कोशिश करेंगे और हमारा ध्यान प्रत्येक मैच पर है। '' सलीमा ने कहा कि पिछले साल अप्रैल में टीम से जुड़ने वाले मुख्य कोच हरेंद्र सिंह ने टीम पर व्यापक प्रभाव छोड़ा है। उन्होंने कहा,''टीम संस्कृति और खिलाड़ियों के बीच आपसी संबंधों में मजबूती आई है। अगर टीम की संस्कृति अच्छी होती है तो उसका असर मैदान पर भी दिखता है। हमारे अपने कोच के साथ अच्छे संबंध हैं।'' सलीमा ने कहा,''भारतीय होने के कारण हरेंद्र सर के साथ काम करना आसान हो जाता है। प्रत्येक खिलाड़ी समझता है कि वह क्या कहना चाहते हैं। संवाद कोई समस्या नहीं है। अगर हम किसी चीज से सहमत नहीं हों तो हम हरेंद्र सर से कहते हैं और वह हमारी बात पूरे धैर्य के साथ सुनते हैं। हम उन तक अपनी बात पहुंचा सकते हैं।

बीएसएनएल को 2007 के बाद पहली बार 262 करोड़ का मुनाफा

एजेंसी

नयी दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र की दूरसंचार सेवा प्रदाता कंपनी भारत संचार निगम लिमिटेड (बीएसएनएल) को वर्ष 2007 के बाद पहली बार चालू वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही में 262 करोड़ रुपये का मुनाफा हुआ है। बीएसएनएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक (सीएमडी) ए. रॉबर्ट जे. रवि ने इस उपलब्धि को नवाचार, ग्राहक संतुष्टि और आक्रामक नेटवर्क विस्तार के प्रति कंपनी की प्रतिबद्धता का परिणाम बताया। उन्होंने कहा कि इन प्रयासों से वित्तीय वर्ष के अंत तक राजस्व में 20 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि की उम्मीद है। कंपनी की मोबिलिटी, एफटीटीएच और लीज्ड लाइन सेवाओं से राजस्व में क्रमश: 15 प्रतिशत, 18 प्रतिशत और 14 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। साथ ही कंपनी ने वित्तीय लागत और समग्र व्यय को कम करके घाटे को 1800 करोड़ रुपये से अधिक तक घटा दिया है। ग्राहक अनुभव को बेहतर बनाने के लिए नेशनल वाईफाई रोमिंग, बीआईटीवी (मोबाइल ग्राहकों के लिए मुफ्त मनोरंजन) और एफटीटीएच ग्राहकों के लिए आईएफटीवी जैसी नई सेवाओं को भी लॉन्च किया गया है। बीएसएनएल की तिमाही वृद्धि में मुख्य योगदान 4जी सेवा की शुरूआत, फाइबर-ऑप्टिक इंफ्रास्ट्रक्चर अपग्रेड और शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में कनेक्टिविटी को मजबूत करने से मिला है। कंपनी ने रणनीतिक पुनरुद्धार पहल, स्पेक्ट्रम आवंटन और सरकारी सहायता के माध्यम से अपने परिचालन को सुदृढ़ किया है। सीएमडी ने कहा कि बीएसएनएल को 262 करोड़ रुपये का यह लाभ उसके पुनरुत्थान और दीर्घकालिक स्थिरता को दर्शाता है। कंपनी शेयरधारकों को अधिक मूल्य प्रदान करने, बाजार अवसरों को विस्तारित करने और डिजिटल नवाचारों को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। यह वित्तीय बदलाव भारत के डिजिटल विकास को गति देने और किफायती दूरसंचार सेवाएं प्रदान करने की दिशा में बीएसएनएल

गिरिराज ने भारत मंडपम में भारत टेक्स 2025 का उद्घाटन किया

एजेंसी

नयी दिल्ली। केंद्रीय कपड़ा मंत्री गिरिराज सिंह ने शुक्रवार को राजधानी के भारत मंडपम में भारत टेक्स 2025 के उद्घाटन किया और प्रदर्शनी देखी। श्री सिंह ने इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में कपड़ा उद्योग को खेत से विदेशी बाजारों तक हर कड़ी में मजबूत बनाने के लिए की जा रही पहलों का उल्लेख किया । उन्होंने मेले में आए सभी खरीदारों का स्वागत किया।

कपड़ा क्षेत्र की विभिन्न कपड़ा निर्यात संवर्धन परिषदों के संघ द्वारा आयोजित और कपड़ा मंत्रालय द्वारा समर्थित यह कार्यक्रम 14 से 7 फरवरी तक आयोजित किया जा रहा है। इस बार इसमें कच्चे माल और रेशों से लेकर तैयार उत्पादों, तकनीकी वस्त्रों, घरेलू साज-सज्जा और उच्च श्रेणी के फैशन तक वस्त्रों की संपूर्ण मूल्य श्रृंखला को शामिल किया गया है। इसके साथ ही कपड़ा उद्योग में सहायक उपकरण, परिधान मशीनरी, रंग और रसायन तथा हस्तशिल्प से

संबंधित प्रदर्शनियां 12 फरवरी से इंडिया एक्सपो सेंटर और मार्ट ग्रेटर नोएडा में आयोजित की जा गयी हैं जो शनिवार 15 फरवरी तक चलेगी। उद्घाटन समारोह में कपड़ा राज्य मंत्री पाबित्रा मार्गेरिटा, कपड़ा सचिव नीलम शमी राव, कपड़ा मंत्रालय में अतिरिक्त सचिव रोहित कंसल और अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे। इस वर्ष का भारत टेक्स स्थिरता, परिपत्रता और डिजिटलीकरण को बढ़ावा देकर कपड़ा उद्योग को बदलने पर केंद्रित है। इस अवसर पर एईपीसी की कार्यकारी समिति के सदस्य मौजूद थे। भारत टेक्स 2025 दुनिया के सबसे बड़े टेक्सटाइल एक्सपो में से एक है। यह नीति निर्माताओं, उद्योग जगत के नेताओं, वैश्विक ब्रांडों और टेक्सटाइल मूल्य श्रृंखला के हितधारकों को एक छत के नीचे एक साथ लाता है।

इस बार इसमें 5,000 से अधिक प्रदर्शकों और 120 से अधिक देशों की भागीदारी के साथ भारत टेक्स 2025 ने महत्वपूर्ण वैश्विक रुचि आकर्षित की है, जो कपड़ा व्यापार में भारत के बढ़ते प्रभाव को दर्शाता है। इस वर्ष का आयोजन लचीली वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं और कपड़ा स्थिरता के दोहरे विषयों के इर्द-गिर्द बना है। यह मेगा टेक्सटाइल इवेंट कई तरह की गतिविधियां आयोजित करता है, जिसमें वैश्विक व्यापार मेला और एक्सपो, वैश्विक स्तर का कपड़ा सम्मेलन, सेमिनार, सीईओ गोलमेज सम्मेलन के अलावा बी2बी और जी2जी बैठकें शामिल हैं। इसमें रणनीतिक निवेश चर्चाएं, उत्पाद लॉन्च और वैश्विक कपड़ा उद्योग को नया आकार देने के लिए परस्पर सहयोग भी शामिल होंगे।

समर्पित खरीदारों और विक्रेताओं की बैठकें, नीतियों को लेकर गोलमेज सम्मेलन और नेटवर्किंग सत्र अंतर्राष्ट्रीय व्यापार सहयोग को बढ़ाएंगे, जिससे भारत की स्थिति एक पसंदीदा वैश्विक सोर्सिंग गंतव्य के रूप में मजबूत होगी। अग्रणी कपड़ा निर्माताओं, वैश्विक खुदरा दिग्गजों और उद्योग संघों की भागीदारी के साथ भारत टेक्स 2025 उच्च-मूल्य व्यापार चर्चाओं और साझेदारियों को सुविधाजनक बनाने के लिए तैयार है।

बैंक ऑफ इंडिया ने जुटाए 2,690 करोड़

एजेंसी

मुंबई। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक ऑफ इंडिया ने आज एनएसई इलेक्ट्रॉनिक बिडिंग प्लेटफॉर्म के माध्यम से 10 वर्षीय इंफ्रास्ट्रक्चर बॉन्ड के जरिए 2690 करोड़ रुपए जुटाने की घोषणा की है।

बैंक ने आज यहां जारी बयान में कहा कि 7.50 प्रतिशत वार्षिक दर पर यह राशि जुटाई गई है। उसने कहा कि इस निर्गम का आधार आकार 1,500 करोड़ रुपये था, जिसमें 3,500 करोड़ रुपये का ग्रीन शू विकल्प था। बैंक को कुल 94 बोलियाँ मिलीं, जिनकी राशि 8,845 करोड़ रुपये थी, जो निर्गम का 5.90 गुना है। बैंक ने 2,690 करोड़ रुपये के 7.50 प्रतिशत के कट-ऑफ कूपन पर बोलियाँ स्वीकार कीं।

26 सफल बोलियाँ रहीं। दीर्घकालिक बॉन्ड के माध्यम से जुटाई गई धनराशि का उपयोग आरबीआई के दिशानिर्देशों के अनुसार बुनियादी ढांचे के उप-क्षेत्रों और किफायती आवास में दीर्घकालिक परियोजनाओं के वित्तपोषण के लिए किया जाएगा। इस निर्गम के माध्यम से बैंक द्वारा जुटाई गई धनराशि किसी विशेष परियोजना के वित्तपोषण के लिए नहीं है।

चरणजोत सिंह नंदा आईसीएआई के अध्यक्ष निर्वाचित

नयी दिल्ली। चार्टर्ड अकाउंटेंट (सीए) चरणजोत सिंह नंदा इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट्स ऑफ इंडिया (आईसीएआई) के अध्यक्ष चुने गए हैं। आईसीएआई के 26वें काउन्सिल ने 2025-26 कार्यकाल के लिए अपने नए अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष का चुनाव किया है। सीए चरणजोत सिंह नंदा को आईसीएआई का अध्यक्ष चुना गया है। वहीं, सीए प्रसन्ना कुमार डी उपाध्यक्ष के पद पर नियुक्त किए गए हैं। ये नियुक्तियां 12 फरवरी 2025 से प्रभावी हो चुकी हैं। विधि, न्याय एवं संसदीय मामलों के मंत्री (स्वतन्त्र प्रभार) अर्जुन राम मेघवाल ने पद की शपथ दिलाई। इस अवसर पर मंत्री श्री मेघवाल ने नव निर्वाचित अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष को बधाई देते हुए कहा, ''मुझे विश्वास है कि आपके सक्षम नेतृत्व में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सपने को साकार कर दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में अग्रसर होगा।

जनवरी में थोक मुद्रास्फीति मासिक आधार पर घटकर 2.31 प्रतिशत

एजेंसी

नयी दिल्ली। थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) आधारित मुद्रास्फीति जनवरी 2025 में मासिक आधार पर घट कर 2.31 प्रतिशत पर आ गयी लेकिन पिछले साल की तुलना में थोक महंगाई दर बढ़ी। दिसंबर 2024 में थोक मुद्रास्फीति 2.37 प्रतिशत और जनवरी 2024 में 0.33 प्रतिशत थी। वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय ने शुक्रवार को एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया है कि जनवरी, 2025 में थोक मुद्रास्फीति में

सालाना आधार पर वृद्धि मुख्य रूप से खाद्य उत्पादों, खाद्य वस्तुओं, अन्य विनिर्माण, गैर-खाद्य वस्तुओं और वस्त्रों के विनिर्माण आदि की कीमतों में वृद्धि के कारण है। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार थोक मूल्य सूचकांक पर आधारित खाद्य वस्तुओं की मुद्रास्फीति जनवरी 2025 में 7.47 प्रतिशत रही जो इससे पिछले महीने 8.89 प्रतिशत थी। जनवरी, 2025 में प्राथमिक वस्तुओं के वर्ग में थोक कीमतें सालाना स्तर पर 4.69 प्रतिशत और विनिर्मित वस्तुओं के वर्ग में थोक कीमतों का स्तार 2.51 प्रतिशत ऊंचा था। आलोच्य माह में ईंधन और बिजली की थोक दरें सालाना आधार पर 2.78 प्रतिशत नीचे रहीं। थोक मूल्य सूचकांक में वस्तुओं की यह केवल मूल (उत्पादक के स्तर की) कीमतों की गणना की जाती है।

ट्रम्प की टैरिफ योजना से अल्पकालिक चिंता, दीर्घकालिक प्रभाव की आशंका नहीं: निर्यातक

एजेंसी

नयी दिल्ली। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के टैरिफ बढ़ाने की संभावित योजना को लेकर भारतीय निर्यातक ज्यादा चिंतित नहीं हैं और उनका मानना है कि यह रणनीति मुख्य रूप से 'घोषणा और बातचीत' का हिस्सा है। ट्रम्प प्रशासन अमेरिका के व्यापार घाटे को कम करने की दिशा में टैरिफ बढ़ाने की नीति अपना रहा है। हालांकि, भारतीय निर्यातकों का मानना है कि भारत और अमेरिका के बीच व्यापारिक संबंध इतने मजबूत हैं कि

अमेरिका भारतीय वस्तुओं पर अतिरिक्त टैरिफ लगाने से बचेगा। दोनों देश द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ावा देने के इच्छुक हैं, जिससे यह संभावना कम हो जाती है। भारतीय निर्यातकों के संगठन फियो के महानिदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) अजय सहाय ने 'यूनीवार्ता' से कहा, ट्रम्प एक ओर पारस्परिक टैरिफ की बात कर रहे हैं और दूसरी ओर वे द्विपक्षीय व्यापार समझौतों की भी चर्चा कर रहे हैं। इससे स्पष्ट होता है कि वे भारत को बातचीत की मेज पर लाने के लिए यह रणनीति अपना रहे हैं। साथ ही वे अमेरिकी उत्पादों के लिए बेहतर बाजार पहुंच चाहते हैं। ट्रम्प पूर्व में भी भारतीय वस्तुओं पर उच्च टैरिफ की आलोचना कर चुके हैं और पारस्परिक शुल्क लगाने की धमकी दी थी। अपने पहले कार्यकाल में उन्होंने भारतीय इस्पात और एल्युमीनियम पर शुल्क लगाया था और सामान्यीकृत वरीयता प्रणाली (जीएसपी) के तहत भारत की तरजीही व्यापार स्थिति को समाप्त कर दिया था। अपने दूसरे कार्यकाल में भी वे इस नीति को जारी रखने के संकेत दे रहे हैं। उन्होंने 14 फरवरी, 2025 को अमेरिकी व्यापारिक साझेदारों पर पारस्परिक टैरिफ लागू करने के लिए राष्ट्रपति आदेश पर हस्ताक्षर किए। ईईपीसी इंडिया के पूर्व अध्यक्ष अरुण कुमार गरोडिया ने कहा, अमेरिका द्वारा भारतीय वस्तुओं पर शुल्क बढ़ाने से कुछ समय के लिए अस्थायी प्रभाव पड़ सकता है।

प्रधान सम्पादक, स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक, राजकुमार यादव द्वारा राज आफसेट एबीसी काम्पलेक्स अपोजिट शुभम सिनेमा क्वीनटन रोड कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित कराकर 424-बी वैशाली इंक्लेब सेक्टर 9 इंदिरानगर लखनऊ से प्रकाशित।
समस्त विवाद वाराणसी न्यायलय के अधीन होंगे। फोन नं. 9935781155 E-mail :- info.shakuntimes@gmail.com RNI: UPHIN/2012/45286 प्रधान कार्यालय:- शक्तिपीठ, बरईपुर, सारनाथ, वाराणसी (उत्तर प्रदेश) पिन कोड - 221007

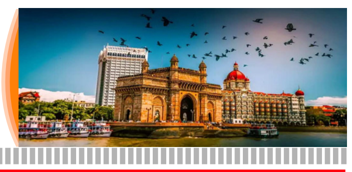

शिक्षण संस्थानों को व्यवस्थित बनाना सरकार की जिम्मेदारीः कांग्रेस

एजेंसी

नयी दिल्ली। कांग्रेस ने कोचिंग संस्थानों में चल रही लूट पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा है कि शिक्षण संस्थाओं को व्यवस्थित बनाने की जिम्मेदारी सरकार की है और उसे शिक्षा को व्यवसाय बनने से रोकने तथा सरकारी शिक्षण संस्थानों को मजबूत बनाने के लिए काम करना चाहिए। कांग्रेस नेता कन्हैया कुमार ने शनिवार को यहां पार्टी मुख्यालय में संवाददाता सम्मेलन में कहा, आज देश में हर घंटे करीब दो छात्र और 24 घंटे में करीब 28 छात्र आत्महत्या कर रहे हैं। जैसे किसान की आत्महत्या के पीछे सिस्टम जिम्मेदार है, वैसे ही छात्र आत्महत्या के पीछे भी सिस्टम जिम्मेदार है। ये सिस्टम छात्रों को प्रेशर कुकर बना रहा है और उन्हें रोज सपने बेचे जा रहे हैं। सीट कितनी है, पारदर्शी रूप से परीक्षा कैसे होगी, रोजगार के अवसर कितने बनेंगे- इस पर चर्चा नहीं होती है। उन्होंने कहा, देश में रोजगार दिलाने के नाम पर सिर्फ कोचिंग संस्थान बन रहे हैं, जो माता-पिता से मोटी फीस वसूलते हैं। पिछले कई दिनों से लगातार एक खबर आ रही है, जिसमें डॉक्टर-इंजीनियर बनाने का दावा करने वाले कोचिंग संस्थान लोगों से फीस वसूलकर गायब हो गए। देश में जब भी ऐसा व्यवस्थित असफल सिस्टम होता है, तो उसकी जिम्मेदारी सरकार को लेनी चाहिए। लेकिन आज सरकार और बाजार के बीच में देश के विद्यार्थी, नागरिक पिस रहे हैं। आज देश में सपना बेचा जा रहा है और कोचिंग संस्थानों की बाढ़ आई हुई है, क्योंकि सरकारी व्यवस्था की हालत कमजोर है। शिक्षा, बाजार और मुनाफे की वस्तु नहीं है। कांग्रेस नेता ने कहा, पहले सीबीएसई के परीक्षा और परिणाम के बाद छात्र बड़े पैमाने पर आत्महत्या कर लिया करते थे लेकिन तब की संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यूपीए) सरकार ने फैसला लिया कि हम किसी छात्र को पास और फेल नहीं करेंगे, हम ग्रेड देंगे। आज देश में सबसे ज्यादा बेरोजगारी है, इतनी बेरोजगारी हिंदुस्तान के इतिहास में कभी नहीं रही। पीएचडी के बाद भी छात्रों को नौकरी नहीं मिल रही है। सरकार और बाजार के बीच में देश का भविष्य पिस रहा है। ऐसे में सरकार सुनिश्चित करे कि देश में जितने भी खाली पद हैं, उन पर पारदर्शी तरीके से नियुक्ति हो, क्योंकि आज कोई ऐसी नौकरी नहीं है, जिसमें धांधली न होती हो।

देश की सरकारी संस्थाओं को बेहतर बनाया जाए, क्योंकि सरकारी संस्थाएं कमजोर नहीं होंगी तो निजी क्षेत्र को विकसित होने में मुश्किल होगी। उन्होंने कहा, देश में आईएएस, इंजीनियर-डॉक्टर बनाने का जो धंधा है, उसे रेगुलेट किया जाना बहुत जरूरी है और जितने भी खाली पद हैं, उन्हें पारदर्शी तरीके से भरा जाए।

नौसेना की जांबाज अधिकारियों ने केप हॉर्न पार किया

एजेंसी

नयी दिल्ली। स्वदेशी नौका तारिणी पर नाविका सागर परिक्रमा अभियान पर निकली नौसेना की दो जांबाज अधिकारियों ने समुद्र की विषम परिस्थितियों में दक्षिण अमेरिका के दक्षिणी छोर पर स्थित केप हार्न को सफलतापूर्वक पार करके इतिहास के पन्नों में अपना नाम दर्ज करा लिया है।

नौसेना के प्रवक्ता ने शनिवार को बताया कि लगातार बारिश, समुद्र की विषम स्थिति , 75 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चलने वाली हवा और 5 मीटर से अधिक ऊंची लहरों के बीच लेफ्टिनेंट कमांडर दिलना के और लेफ्टिनेंट कमांडर रूपा ए ने समुद्र के रास्ते दुनिया का चक्कर लगाने के अभियान के दौरान यह सफलता हासिल की। यह मार्ग नाविकों को ड्रेक पैसेज से होकर ले जाता है जो एक खतरनाक जलमार्ग है और तेज हवाओं, ऊंची लहरों तथा अप्रत्याशित मौसम के लिए जाना जाता है। इस क्षेत्र की परिस्थितियाँ सबसे अनुभवी नाविकों की भी परीक्षा लेती हैं। ड्रेक पैसेज का नाम अंग्रेजी खोजकर्ता सर फ्रांसिस ड्रेक के नाम पर रखा गया है जिन्होंने दक्षिण अमेरिका के दक्षिण में एक खुले समुद्री मार्ग के अस्तित्व की पुष्टि की थी।

इन कठिन जलक्षेत्रों का साहसपूर्वक सामना करने के बाद, अधिकारियों ने अब केप हॉर्नर्स का प्रतिष्ठित खिताब अर्जित किया है। यह खिताब पारंपरिक रूप से उन नाविकों को दिया जाता है, जिन्होंने पाल के नीचे केप हॉर्न को सफलतापूर्वक नेविगेट किया है। केप हॉर्न अंटार्कटिका से लगभग 800 किलोमीटर (432 समुद्री मील) की दूरी पर स्थित है, जो इसे बर्फीले महाद्वीप के सबसे नज़दीकी भूमि बिंदुओं में से एक बनाता है। इस क्षेत्र से यात्रा करने के लिए न केवल असाधारण नौवहन विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है, बल्कि दक्षिणी महासागर की कठोर परिस्थितियों के प्रति लचीलापन भी आवश्यक है। नौसेना की दोनों अधिकारी पिछले वर्ष दो अक्टूबर को इस अभियान पर निकली थी।

संक्षिप्त सामाचार

अवैध शराब तस्करों ने इंजीनियरिंग छात्र समेत दो युवकों की हत्या की

मयिलादुथुराई (तमिलनाडु)। तमिलनाडु के मयिलादुथुराई जिले के पेरंबूर पुलिस सीमा के तहत एक वीभत्स घटना में शुक्रवार देर रात मुत्तम गांव में अवैध अरक की बिक्री पर सवाल उठाने पर शराब तस्करों के एक गिरोह ने एक इंजीनियरिंग छात्र सहित दो युवकों की बेरहमी से हत्या कर दी। पुलिस ने कहा कि मृतकों की पहचान के हरीश (25) और इंजीनियरिंग तृतीय वर्ष के छात्र हरिशक्ति (22) के रूप में की गई है। आरोपी राज कुमार (30) उसके रिश्तेदार थंगादुरई (28), और मूवेन्डन (34) जो सभी आदतन शराब तस्कर है गाँव में अवैध अरक बेच रहे थे। इसी बात को लेकर इन शराब तस्करों और दो युवकों के बीच झगड़ा हो गया। झगड़ा उस शुरू हुआ जब दिनेश (24) और उसके दोस्त हरीश और हरिशक्ति ने उनसे अरक बेचने के बारे में पूछताछ की। गुस्साए शराब तस्करों ने दिनेश के साथ जमकर मारपीट की। जब हरीश और हरिशक्ति ने हमले का विरोध करने का प्रयास किया, तो इन तस्करों ने उन पर हिंसक हमला करते हुए चाकुओं से कई बार वार किया और मौके से भाग निकले। हरीश की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि हरिशक्ति ने अस्पताल ले जाते समय रास्ते में दम तोड़ दिया।

धोखाधड़ी के आरोप में पूर्वी म्यांमार में 29 लोग गिरफ्तार

यांगून। पूर्वी म्यांमार के ताचिलेइक टाउनशिप में अधिकारियों ने 12 फरवरी और 13 फरवरी को अवैध ऑनलाइन जुआ और वित्तीय धोखाधड़ी मामले में 29 संदिग्धों को गिरफ्तार किया। राज्य प्रशासन परिषद की सूचना टीम के शुक्रवार देर रात एक बयान में यह जानकारी दी। समूह में सात थाई नागरिक और 22 म्यांमार नागरिक शामिल है। बयान में कहा गया है कि अधिकारियों ने संदिग्धों के साथ-साथ 440 कंप्यूटर, 390 मोबाइल फोन, दो बिना दस्तावेज वाले वाहन और नशीली दवाओं से संबंधित वस्तुएं जब्त कीं। संदिग्धों के मुताबिक थाई नागरिक काम और यात्रा के लिए थाई-म्यांमार फ्रेंडशिप ब्रिज नंबर 1 के जरिए म्यांमार में दाखिल हुए थे। इसमें कहा गया है कि बाद में उन्हें अवैध ऑनलाइन जुए और वित्तीय धोखाधड़ी में शामिल व्यक्तियों द्वारा भर्ती किया गया। अधिकारी इसमें शामिल अन्य संदिग्धों को शीघ्र पकड़ने के लिए आवश्यक सुरक्षा उपाय कर रहे हैं। इसमें कहा गया है कि गिरफ्तार व्यक्तियों पर कानून के मुताबिक मुकदमा चलाया जाएगा।

ऊधमसिंह नगर में पुलिस मुठभेड़ में दो लुटेरे घायल

रुद्रपुर/नैनीताल। उत्तराखंड के ऊधम सिंह नगर जिले के नानकमत्ता में शुक्रवार देर रात को हुई मुठभेड़ में लूट के दो शातिर अपराधी घायल हुए हैं। दोनों उप्र के रहने वाले हैं। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) मणिकांत मिश्रा के अनुसार विगत 09 फरवरी को नानकमत्ता निवासी रईस अहमद के घर में लूट की घटना सामने आई थी। बदमाशों द्वारा हथियारों के बल पर सोने चांदी के आभूषण लूट लिए गए थे। वादी की तहरीर पर पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की और बदमाशों को पकड़ने के लिए कई टीमें गठित की गईं। पुलिस टीम ने सर्वप्रथम घटना स्थल के आस पास के सीसीटीवी कैमरों को खंगाला और संदिग्ध व्यक्तियों को चिन्हित किया। बीती रात को पुलिस को सूचना मिली कि घटना में शामिल बदमाश लूट का हिस्सा लेने के लिए आ रहे हैं।

चेर्नोबिल परमाणु संयंत्र पर रूसी ड्रोन हमले का असर

एजेंसी

मॉस्को। यूक्रेन के राष्ट्रपति वलोदिमिर ज़ेलेंस्की ने कहा कि एक रूसी ड्रोन ने शुक्रवार की रात चेरनोबिल में पूर्व परमाणु ऊर्जा संयंत्र पर हमला किया। मीडिया रिपोर्टों में शनिवार को यह जानकारी दी गयी। उन्होंने कहा कि एक हमले में संयंत्र की नष्ट हो चुकी चौथी बिजली इकाई को कवर करने वाले एक कंक्रीट शेल्टर पर आग लग गई, जिसे बाद में बुझा दिया गया। सीएनएन की रिपोर्ट के अनुसार चेरनोबिल 1986 की आपदा का स्थल था जिसने सोवियत संघ और यूरोप के कुछ हिस्सों में रेडियोधर्मिता फैलाई थी। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार संयुक्त राष्ट्र की परमाणु निगरानी संस्था, अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आईएईए) ने कहा कि साइट पर उसकी टीम ने स्थानीय समयानुसार शुक्रवार सुबह 2 बजे से कुछ देर पहले एक बड़ा विस्फोट सुना। आईएईए ने कहा कि उसकी टीम ने कुछ ही मिनटों में विस्फोट का जवाब दिया और कोई हताहत नहीं हुआ। यूक्रेन की सेना ने बताया कि रूस ने अपने रात भर के हमले में देश भर में 133 ड्रोन लॉन्च किए, जिनमें से 73 को मार गिराया गया और 58 अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाए। रिपोर्ट में कहा गया है कि ये संख्याएँ मोटे तौर पर हाल के ड्रोन हमलों के औसत के अनुरूप हैं। सेना ने कहा कि देश के अधिकांश हिस्से को कवर करते हुए 11 क्षेत्रों में ड्रोन

मणिपुर में 10 उग्रवादी गिरफ्तार

एजेंसी

इंफाल। मणिपुर पुलिस और सुरक्षा बलों ने इंफाल पूर्व तथा थौबल जिलों में अलग-अलग अभियानों में 10 उग्रवादियों को गिरफ्तार किया और उनके पास से बड़ी संख्या में हथियार तथा गोला-बारूद बरामद किया।

पुलिस ने शनिवार को बताया कि गिरफ्तार उग्रवादी जबरन वसूली और अन्य आपराधिक गतिविधियों में शामिल थे। उन्होंने खाबेइसोई-7 एमआर गेट इंफाल ईस्ट से केसीपी (पीडब्लूजी) के चार सक्रिय सदस्यों को गिरफ्तार किया। एक अन्य घटना में, सुरक्षा बलों ने थौबल जिले के हीरोक-पीएस के तहत हीरोक पीटी-ढ्ढ चिंगडोमपोक क्षेत्र से केसीपी (नोयोन) के चार सक्रिय सदस्यों को गिरफ्तार किया।

एक और अभियान में, इम्फाल ईस्ट जिले के लामलाई-पीएस के अंतर्गत तेरा माखोंग के पास नुंगोई अवांग लेईकाई से यूएनएलएफ (पंबेई) के एक सक्रिय सदस्य को गिरफ्तार किया गया और इसी जिले के लुवांगसांगबाम से पीआरईपीएके के एक कैडर को पकड़ा गया। पुलिस ने बताया कि काकचिंग जिले के हियांगलाम में एक अभियान के दौरान एक सिंगल-बैरल बंदूक, एक स्नाइपर राइफल, एक पिस्तौल, एक हथगोला, चार किलोग्राम वजन के चार आईईडी और अन्य गोला-बारूद बरामद किया गया।

भिंड में तीन नाबालिग लापता

भिंड। मध्यप्रदेश के भिंड जिले में पिछले 24 घंटे में तीन नाबालिगों के लापता होने के मामले सामने आए हैं। लहार और अटेर क्षेत्र के इन मामलों में परिजन द्वारा तलाश करने के बाद बच्चियों के गुमशुदा होने की सूचना पुलिस को दी। परिजन ने अज्ञात आरोपी द्वारा नाबालिगों को बहला-फुसलाकर ले जाने का आरोप लगाया है। लहार थाना पुलिस के अनुसार वार्ड 4 निवासी शिकायतकर्ता ने बताया कि उनकी 16 साल की नाबालिग बेटी कल रात बिना बताए घर से कहीं चली गई। इसी प्रकार वार्ड 5 में रहने वाले एक व्यक्ति ने भी अपनी 16 साल की नाबालिग बेटी के रात को घर से बगैर बताए जाने की शिकायत की। दोनों मामलों में परिजन ने बेटी को किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा बहला-फुसलाकर ले जाने की शिकायत की है।

विक्षिप्त युवक ने चाचा सहित दो लोगों की हत्या की, आरोपी की पीट-पीटकर हत्या

एजेंसी

भागलपुर। बिहार में भागलपुर जिले के नाथनगर थाना क्षेत्र में एक विक्षिप्त युवक ने अपने चाचा सहित दो लोगों की हत्या कर दी, वहीं आक्रोशित लोगों ने आरोपी युवक की पीट-पीटकर हत्या कर दी।

भागलपुर के पुलिस उपाधीक्षक (नगर-दो) राकेश कुमार ने शनिवार को यहां बताया कि मकदपुर गांववासी शर्मानंद राय के विक्षिप्त पुत्र छोटू कुमार ने शुक्रवार की देर रात को लोहे के रॉड से हमला कर अपने चाचा राजीव राय की हत्या कर दी और कई लोगों पर जानलेवा हमला कर दिया। उन्होंने बताया कि इस हमले में गंभीर रुप से घायल चार लोगों को ग्रामीणों के सहयोग से स्थानीय जवाहरलाल नेहरु मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती कराया, जहां इलाज के दौरान घायल जयप्रकाश राय की मौत हो गई। अन्य घायलों का इलाज चल रहा है।

श्री कुमार ने बताया कि इस घटना से आक्रोशित ग्रामीणों ने छोटू कुमार की जमकर पिटाई कर दी। पिटाई से घायल छोटू को अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गयी। उन्होंने बताया कि घटना की गंभीरता को देखते हुए मकदपुर गांव में थानाध्यक्ष और पुलिस के वरीय अधिकारी कैंप कर रहे हैं। आसपास के क्षेत्रों में पुलिस गश्त बढ़ा दी गई है। स्थिति पूरी तरह से शांतिपूर्ण है। पुलिस ने इस सिलसिले में दो अलग-अलग प्राथमिकी दर्ज कर तीनों शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है।

जयशंकर ने म्यूनिख में यूक्रेन और जर्मनी के विदेश मंत्रियों से मुलाकात की

एजेंसी

नई दिल्ली। म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन में भाग लेने के लिए जर्मनी गए विदेश मंत्री एस जयशंकर ने यूक्रेन के विदेश मंत्री एंड्री सिबिहा और जर्मनी के रक्षा मंत्री बोरिस पिस्टोरियस से मुलाकात की है। विदेश मंत्री ने शनिवार को सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर एक पोस्ट में कहा, आज म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन के मौके पर यूक्रेन के विदेश मंत्री से मिलकर अच्छा लगा। यूक्रेन संघर्ष के समाधान की दिशा में चल रहे प्रयासों पर चर्चा की। हमारे द्विपक्षीय सहयोग को और आगे बढ़ाने के बारे में भी बात की। यूक्रेनी

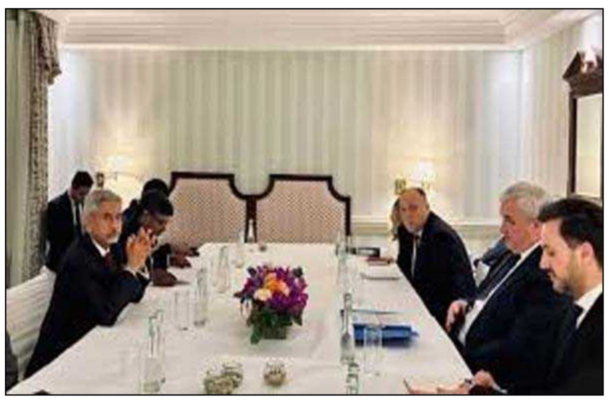

विदेश मंत्री एंड्री सिबिहा ने भी एक पोस्ट में कहा, मैं हमारी सार्थक बैठक के लिए डा जयशंकर को धन्यवाद देता हूं। हम भारत के साथ संबंध विकसित करने और व्यापार, प्रौद्योगिकी, कृषि, सुरक्षा और अन्य क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने में रुचि रखते हैं। हम न्यायपूर्ण और स्थायी शांति के लिए भारत की मजबूत वैश्विक आवाज़ पर भी भरोसा करते हैं। जर्मनी के रक्षा मंत्री के साथ बैठक पर डा जयशंकर ने कहा, जर्मनी के रक्षा मंत्री बोरिस पिस्टोरियस से मिलकर खुशी हुई। हमारी बातचीत द्विपक्षीय सहयोग और यूक्रेन के विकास के इर्द-गिर्द रही। विदेश मंत्री ने म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन में चर्चा में भी भाग लिया। उन्होंने कहा, म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन में भाग लिया। इसका थीम आने वाले समय में भारत की सुरक्षा चुनौतियों का मूल्यांकन था। सम्मेलन में वैश्विक जुड़ाव, क्षेत्रीय रणनीति और प्रमुख द्विपक्षीय साझेदारियों पर भारत की सोच साझा की।

ईरान ने पाकिस्तान में हुए बम हमले की निंदा की

इस्लामाबाद। ईरान ने शुक्रवार को दक्षिण-पश्चिमी पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में हुए घातक आतंकवादी बम हमले की कड़ी निंदा की। हमले में कम से कम 11 लोगों की मौत हो गई और छह अन्य घायल हो गए है। ईरान के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता एस्माईल बाघई ने आज यह जानकारी दी। मंत्रालय द्वारा जारी एक बयान में श्री बाघई ने पीड़ितों के परिवारों के साथ-साथ पाकिस्तानी लोगों और सरकार के प्रति संवेदना व्यक्त की और घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना की। एक पाकिस्तानी अधिकारी के अनुसार दिन में बलूचिस्तान के हरनाई जिले में खदान मजदूरों को ले जा रहे एक वाहन में सड़क किनारे बम विस्फोट हुआ जिसमें 11 लोगों की मौत हो गई और छह अन्य घायल हो गए। किसी भी समूह ने अभी तक हमले की जिम्मेदारी नहीं ली है।

उत्तर पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया में उष्णकटिबंधीय चक्रवात आने के बाद जारी की गयी बाढ़ की चेतावनी

एजेंसी

सिडनी। उत्तर पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया में शुक्रवार को आए उष्णकटिबंधीय चक्रवात के कारण भारी बारिश और तेज हवाओं के कारण बाढ़ की चेतावनी जारी की गई है। उष्णकटिबंधीय चक्रवात ज़ेलिया शुक्रवार को उम्मीद से कुछ घंटे पहले स्थानीय समयानुसार दोपहर के तुरंत बाद श्रेणी चार के तूफान के रूप में राज्य के उत्तर-पश्चिम पिलबारा क्षेत्र के छोटे से शहर डी ग्रे के पास पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया (डब्ल्यूए) के तट को पार कर गया।

इसके श्रेणी पांच के तूफान के रूप में शाम को तट पर पहुंचने का अनुमान लगाया गया था। तूफान के जल्दी कमजोर होने से पहले डी ग्रे में 220 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं चलीं और 500 मिलीमीटर से अधिक बारिश दर्ज की गई। अधिकारियों ने शनिवार सुबह इसे पूर्व-उष्णकटिबंधीय चक्रवात में बदल दिया, लेकिन चेतावनी दी कि भारी बारिश जारी रहने की संभावना है और अचानक बाढ़ आ सकती है। मौसम विज्ञान ब्यूरो (बीओएम) के एंगस हाइन्स ने कहा कि पिलबारा तट के कुछ हिस्सों में रिकॉर्ड बारिश दर्ज की गई है। उन्होंने ऑस्ट्रेलियन ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन को बताया, अगले कई दिनों तक बाढ़ का महत्वपूर्ण प्रभाव रहेगा और सफ़ाई जारी रहने के कारण अगले कई दिनों तक बड़े पैमाने पर सड़कें बंद रहने की आशंका है। तेज़ हवाओं के कारण पूरे क्षेत्र में पेड़ गिर गए लेकिन शनिवार सुबह तक कोई बड़ी क्षति या चोट की सूचना नहीं थी। सड़कें कट जाने के बाद कुछ कस्बे अलग-थलग पड़ गए हैं। हाइन्स ने कहा कि जल स्तर बढ़ने के कारण महत्वपूर्ण सड़कें बंद होने की उम्मीद की जानी चाहिए। डब्ल्यू ए के अग्निशमन और आपातकालीन सेवाओं के विभाग ने पिलबारा निवासियों से क्षतिग्रस्त इमारतों, बाढ़ के पानी और गिरी हुई बिजली लाइनों और पेड़ों के आसपास सावधानी बरतने का आग्रह किया है।

मोदी सरकार का केंद्रीय बजट समाज के हर वर्ग के हित में : बाघा

जालंधर। पंजाब भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के उपाध्यक्ष राजेश बाघा ने शनिवार को कहा कि केंद्रीय आम बजट को लेकर विपक्षी पार्टियां जनता को गुमराह करने का प्रयास कर रही हैं जबकि सच्चाई यह है कि यह बजट किसानों, मजदूरों, दुकानदारों और हर वर्ग के हित में है। श्री बाघा ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी की सरकार लगातार किसानों और आम जनता की भलाई के लिए काम कर रही है। उन्होंने कहा कि भाजपा कार्यकर्ता गांव-गांव जाकर किसानों से संवाद करेंगे और विपक्ष द्वारा फैलाए जा रहे झूठ का पर्दाफाश करेंगे। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार ने किसानों की आय बढ़ाने के लिए कई योजनाएं लागू की हैं। न्यूनतम समर्थन मूल्य में लगातार बढ़ोतरी की है और कृषि संरचना को मजबूत किया है। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के तहत करोड़ों किसानों को सीधा आर्थिक लाभ मिला है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। उन्होंने विपक्षी दलों पर निशाना साधते हुए कहा कि वे किसानों को झूठी बातें फैलाकर भड़काने की कोशिश कर रहे हैं।